पंच प्रतिक्रमण सूत्र

सविधि संवत्सरी प्रतिक्रमण सूत्र

(पर्युषण – १७ प्रतिक्रमण विधि)

आत्मनिर्भर श्रावक

यह पुस्तक के लिए...
आर्थिक सहयोग के सारथि

- श्री बाबु अमीचंद पन्नालाल आदीश्वर जैन टेम्पल-वालकेश्वर
- श्रीमान पारसमल हंजारीमलजी बोहरा परिवार-विनस मेटल कोर्प., बाबुलाल बोहरा, घेवरचंद बोहरा अने मोतीलाल बोहरा
- मातुश्री बदामीदेवी सरेमलजी कपुरचंदजी कोठारी परिवार-भीनमाल
- श्री सांताक्रुझ जैन तपागच्छ संघ-कुंथुनाथ देरासर
- श्री विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ अेन्ड चेरीटीझ-विलेपार्ले
- श्री प्लेझन्ट पेलेस शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन देरासर - वालकेश्वर
- श्री मरीन ड्राइव आराधक जैन ट्रस्ट - मरीन ड्राइव
- श्री नवजीवन श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ
- श्री हीरसूरीश्वरजी जगद्‌गुरु श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन संघ-मलाड
- श्री पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, सांघाणी, घाटकोपर (वे)
- श्री घाटकोपर श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन संघ, नवरोजी लेन
- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन संघ, ६० फीट रोड, घाटकोपर.

आवृत्ति	:	द्वितीय
नकल	:	गुजराती - ७,०००
		हिन्दी - २,०००
मूल्य	:	नि:शुल्क (नित्य प्रतिक्रमण आराधना)
प्रकाशन वर्ष	:	सं २०७६, इ.स.२०२०

मुद्रक : परम ग्राफीक्स - मुलुन्ड, मुंबई.
फोन : 98920 45 229 | Email : info@paramgraphics.com

श्री मुंबई जैन संघ संगठन

(मुंबई के श्री संघो की संप-शक्ति का बुलंद प्रतिसाद)

श्री संगठन द्वारा... शासनलक्षी साकार हुए कार्य...

- नवेम्बर २०१८ - अनेक पूज्य गुरुभगवंतो की निश्रा और आशिष सह हजारो की हाजरी में अपने ये संगठन की स्थापना ।
- जैन 'जन-गणना' (Jain Census) में मिला उत्साहप्रेरक प्रतिसाद ।
- पुलवामा के शहिद परिवारो को फंड में जैन संघो तथा संस्थाओ का योगदान का संकलन तथा जाहेरात द्वारा शासन गौरव वृद्धि।
- एक लाख से ज्यादा जैन/अजैनो के हर्षोल्लास के बीचमें वि.सं. २०७५ पर्युषण बाद 'ऐतिहासिक सामुहिक रथयात्रा' का विशाल आयोजन।
- नवेम्बर २०१९ युवा साधु भगवंतो की दो दिनकी 'चिंतन-गोष्ठिका' सफल आयोजन ।
- कोरोना का विषमकाल में जैन सेवाभावी संस्थाओ तथा साधर्मिक फाउन्डेशनो के साथ आर्थिक सहयोग द्वारा साधर्मिक वात्सल्य का विशेष कार्य। साथ में उदारदील 'वीर फाउन्डेशन' की तरफ से जैनो को दिये हुए निःशुल्क ओक्सिजन सीलीन्डर कार्य का सफल संकलन ।

यह भावि योजनाओमें भी... श्री संगठन आपके साथ...

- धार्मिक ज्ञान की रुचि और वृद्धि के लिए पाठशाला विगेरे व्यवस्थाओ के वधु सफल ओर सक्षम करने का अभिगम।
- श्रुतज्ञान के माध्यमो की विशेष सम्भल, सुरक्षा तथा संवर्धन का आधुनिक आयोजन।
- राजकीय तथा कायदाकीय प्रश्नोमें शासन सुरक्षा के लिए जागृति तथा निराकरण ।
- "Jain News" App. तथा सोश्यल मीडिया द्वारा जैन जगत को जीवंत रखकर बडे पयमाने पर माहिती का आदान-प्रदान तथा भातृभाव वृद्धि।

।। श्री शत्रुंजयमंडन ऋषभदेवाय नमः ।। ।। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। सिरसा वंदे महावीरं ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।।

।। गणसम्पत्समृद्ध श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

ऐं नमः सिद्धम्

।। श्री सर्व सद्गुरुभ्यो नमः ।।

पंच प्रतिक्रमण सूत्र

सविधि संवत्सरी प्रतिक्रमण सूत्र

(पर्युषण - १७ प्रतिक्रमण विधि)

आत्मनिर्भर श्रावक

संकलन

प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय अजितशेखर सूरीश्वरजी म.सा.

अत्यावश्यक प्रतिक्रमण की आराधना हर परिस्थिति में सर्व साधक स्वपुरुषार्थ से आराधना कर सके ऐसी शुभभावना से दाताओं के सहयोग से विनम्रभाव से यह पुस्तिका आपके करकमलो में अर्पण....

श्री मुंबई जैन संघ संगठन

ऋण स्वीकार

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय अजितशेखर सूरीश्वरजी महाराज साहेब का विशेष ऋण स्वीकार करते है, जिनकी उदारता से वर्धमान तत्त्वज्ञान केन्द्र, जैन धार्मिक पाठशाळा – चेन्नई को 'सांवत्सरिक प्रतिक्रमण विधि' को प्रकाशित करने की प्रेरणा दी है।

यह पुस्तिका के प्रकाशन में उदारदिल दाताओं का सहयोग मिला।

वितरण व्यवस्था के लिए

- मुंबई के श्री संघो
- समकित ग्रुप – गोरेगांव
- समकित युवक मंडल – बोरीवली
- एलर्ट यंग ग्रुप – मुंबई
- मुंबई विहार सेवा ग्रुप – मुंबई
- वर्धमान परिवार – मुंबई
- उपासना मंदिर – भायंदर

यह सबका सुंदर सहयोग मिला.

श्री मुंबई जैन संघ संगठन

आवश्यक बातें

वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखकर यह पुस्तिका प्रकाशित हो रही है। आत्मनिर्भर हो कर घर-घर पर्युषण महापर्व की आराधना हो सके और कोई प्रतिक्रमण से वंचित न रह जाए यह आशय है।

खास.... पर्युषण शरु होने से पहले...

(१) सभी सूत्रो शुद्धोच्चार पूर्वक हो सके इस लिए आजु-बाजु में से जानकार व्यक्ति के साथ सूत्र स्पष्ट करा लेने चाहिए और बारंबार सूत्र का अभ्यास करना चाहिए।

(२) वांदणा की पद्धति, मुहपत्ति पडिलेहण की पद्धति, चैत्यवंदन की मुद्राए, काउस्सग्ग की मुद्राए, वंदित्ता सुत्र की मुद्राए बराबर जान लेनी चाहिए।

(३) खामणा के समय कौनसा हाथ चरवळा-कटासणा पर कैसे रखना वगैरे समझ लिजीए।

(४) काउस्सग्ग कैसे पारना, तभी कैसे बोलना यह भी जान लिजीए।

(५) आसपास में से पांच-दस लोगों को प्रेम से समझा कर साथ में ले कर १७ प्रतिक्रमण करना - करवाना।

(६) यह पुस्तक पक्खी-चउमासी के समय भी काम आयेगी।

हाल की परिस्थिति नोर्मल होने के बाद प्रतिक्रमण गुरुनिश्रा में करने से विशेष लाभ होता है और सामुदायिक लाभ भी मिलता है, क्योंकि वहाँ सूत्रादि शुद्धि के कारण शुद्ध प्रतिक्रमण होता है।

यह प्रकाशन का भरपुर लाभ ले सको यही शुभ भावना है।

अशुद्धि के लिए मिच्छा मि दुक्कडं.....

श्रा.सु. ८
पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक

आचार्य अजितशेखरसूरि

प्रकाशकीय

श्री जिनशासन का प्राण क्षमापना है और 'मोक्ष' का उल्टा 'क्षमो' है । और क्षमा नाम की यह मास्टर की द्वारा ही जीव आराधक बनता है । शास्त्रो में लिखा है कि जो खामते है वही आराधक है । इन संयोगो में मात्र विधि की सरलता पूर्वक पढाई द्वारा राई प्रतिक्रमण, देवसीअ प्रतिक्रमण, पक्खी प्रतिक्रमण, चउमासी प्रतिक्रमण और संवत्सरि प्रतिक्रमण भी हो सके ऐसी यह पुस्तिका आपके करकमलो में अर्पण करते है ।

जैन संघ के अंदर पर्युषण के आठ दिन के सुबह-शाम के और पांचम के दिन 17वाँ प्रतिक्रमण यह कोम्बिनेशन का विशिष्ट महिमा है । और लाखों जैनो सामूहिक रीत से आराधना करते है । इस साल यह सब शक्य न होने के कारण सकल श्री संघ के भाई-बहनें यह आराधना से वंचित न रह जाये इसलिए यह प्रयास किया है । आप हमारें इस प्रयास को जरुर से सार्थक करें ।

१४ राजलोक के प्रत्येक जीव को अनंतकाल की अटारी में कभी भी दुभाया हो उनका मन, वचन और काया से हमनें जगत के सभी जीवों को पर्युषण के पहले क्षमापना मांग ली है । वैसे ही आप सभी से श्री मुंबई संघ संघठन वती क्षमापना मांगते है ।

लि.: श्री जैन संघ संगठन का
अंत:करण पूर्वक मिच्छा मि दुक्कडम्

अनुक्रमणिका

१	सामायिक लेने की विधि	५
२	राइअ प्रतिक्रमण की विधि	१०
३	देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि	५६
४	पक्खि/चउमासी/संवत्सरी प्रतिक्रमण की विधि	९२
५	पर्युषण काव्य संग्रह	२०१
६	श्री वीर प्रभु का सत्तावीश भव का स्तवन	२०६
७	श्री वीर प्रभु का हालरडा	२१३
८	श्री पंच कल्याणक का स्तवन	२१७

राइअ प्रतिक्रमण विधि

* सामायिक लेने की विधि *

(श्रावक–श्राविकाओं को सामायिक लेने के लिये बाह्य शुद्धि करना जरुरी है। अत: सर्व प्रथम हाथ–पैर धोकर स्वच्छ होना और शुद्ध वस्त्र पहनने चाहिये।

(स्थापनाचार्यजी न हो तो पुस्तक नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करने के लिये दाहिना हाथ (हथेली की रेखाएँ स्थापना जी की तरफ) सामने करके स्थापना मुद्रा से नवकार और पंचिदिय नीचे मुताबिक कहना ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।। पंचिंदिय–संवरणो, तह नवविह–बंभचेर–गुत्ति–धरो। चउविह–कसाय–मुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ।।1।। पंच–महव्वय–जुत्तो, पंचविहायार–पालण–समत्थो। पंच– समिओ ति–गुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ।।2।।

(बाद में खडे होकर दो बार खमासमणा देना) (दो हाथ, दो पैर और मस्तक पांचों को भूमि से लगाते हुये खमासमणा देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। 1 ।।

(दूसरा खमासमणा)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। 1 ।।

इच्छकार! सुह राई (देवसि)? सुख–तप? शरीर–निराबाध? सुख–संजम–जात्रा निर्वहो छो जी? स्वामी! शाता छे जी भात पाणीनो लाभ देजो जी ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर–राइअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि राइअं जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए। जं किंचि मज्झ विणय–परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। 1 ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।1।। इरियावहियाए विराहणाए ।।2।। गमणा गमणे ।।3।। पाण–क्कमणे, बीय–क्कमणे, हरिय–क्कमणे, ओसा–उत्तिंग–पणग–दग–मट्टी–मक्कडा संताणा–संकमणे ।। 4 ।। जे मे जीवा विराहिया ।। 5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया

।। 5 ।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।। 7 ।।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।। 1 ।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1 ।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं ।।2।1 एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।। 5 ।।

(एक लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' तक का काउस्सग्ग नीचे मुताबिक करना, लोगस्स का काउस्सग्ग न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।। 2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।।

एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।। 6।। चंदेसु निम्मल यरा

(विशेष सूचना ऐसे एक, दो चार, बारह, सोलह, चालिस लोगस्स का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक के काउस्सग्ग बार बार आयेंगे। (उसके बाद 'नमो अरिहंताणं' कहके काउस्सग्ग पारना और फिर पूरा लोगस्स बोलना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।। 2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–म रणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।। 6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।। 7।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं? "इच्छं"

(ऐसा कहकर "मुहपत्ति" 50 बोलसे पडिलेहन करना फिर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि ।।1।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थऐण वंदामि ।।1।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? "इच्छं"

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड के खडे होकर मस्तक झुका कर नीचे मुताबिक एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

(फिर–खडे खडे)

इच्छाकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी।

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर वडिल हो तो वडिल बोले नहीं तो खुद "करेमि भंते सूत्र' उच्चरना वह नीचे मुताबिक)

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं,जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाहुं? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करुं "इच्छं"

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर उभडक बैठकर तीन नवकार नीचे मुताबिक गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।। (सामायिक लेने की विधि समाप्त)

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राईअ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं ; कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राईअ पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं,छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

(चार लोगस्स का सागरवरगंभीरा तक काउस्सग्ग करना । लोगस्स न आता हो तो सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना, फिर नमो अरिहंताणं कहकर काउस्सग्ग पारकर प्रकट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअ–गरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।। उसभ–मजिअं च वंदे, संभव–मभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं, सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि रिट्ठ–नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला, पहीण–जर–मरणा, चउवीसंपि जिण–वरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग–बोहि–लाभं, समाहि–वर–मुत्तमं दिंतु ।।6।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास–यरा, सागर–वर–गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं,

(ऐसा कहकर बाँया घुटना ऊँचा करके चैत्यवंदन करना)

जग–चिन्तामणि! जग–नाह! जग–गुरु! जग–रक्खण! जग–बन्धव ! जग–सत्थवाह ! जग–भाव–विअक्खण ! अट्ठा–वय–संठविअ–रूव! कम्मट्ठ–विणासण! चउवीसंपि जिण–वर! जयंतु अप्पडिहय–सासण! ।।1 ।।कम्म–भूमिहिं कम्म–भूमिहिं पढम–संघयणि उक्कोसय सत्तरि–सय, जिण–वराण विहरंत लब्भइ,नवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स नव साहु–गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वर–नाण, समणह कोडि–सहस्स–दुअ, थुणिज्जइ निच्च–विहाणि।।2 ।। जयउ सामिय, जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि,उज्जिति पहु–नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरी–मंडण, भरूअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि पास दुह–दुरिअ–खंडण, अवर–विदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि, तीआणागय–संपइय, वंदुं जिण सव्वेवि।।3 ।। सत्ताणवइ–सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ,बत्तीस–सय बासियाइं, तिअ–लोए चेइए वंदे ।।4।। पनरस–कोडि–सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना, छत्तीस–सहस–असिइं, सासय–बिंबाइं पणमामि ।।5 ।।

जं किंचि नाम–तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाइं जिण–बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।।धम्म-दयाणं,धम्म-देसयाणं,धम्म-नायगाणं,धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

जावंति चेईआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ; सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।1।।

नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यः ।।1।।

उवसग्ग–हरं पासं, पासं वंदामि कम्म–घण–मुक्कं, विसहर–विस–निन्नासं, मंगल–कल्लाण–आवासं ।।1 ।। विसहर–फुलिंग–मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ, तस्स गह–रोग–मारी–दुट्ठ–जरा जंति उवसामं ।।2 ।। चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु–फलो होइ, नर–तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख–दोगच्चं ।।3 ।। तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि –कप्पपायवब्भहिए, पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।4 ।। इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर–निब्भरेण हियएण, ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद!

जय वीयराय ! जग गुरु ! होउ ममं तुह पभावओ, भयवं, भव–निव्वेओ, मग्गाणुसारिआ इट्ठ–फल–सिद्धि ।।1 ।। लोग–विरूद्ध–च्चाओ, गुरु–जण–पूआ परत्थ–करणं च, सुह–गुरु–जोगो तव्वयण–सेवणा आभव–म खंडा ।।2 ।। वारिज्जइ जइवि नियाण–बंधणं वीयराय ! तुह समये, तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3 ।।दुक्ख–क्खओ कम्म–क्खओ, समाहि–मरणं च बोहि–लाभो अ, संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम–करणेणं ।।4 ।। सर्व–मंङ्गल–माङ्गल्यं, सर्व–कल्याण–कारणम् , प्रधानं सर्व–धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5 ।।

(यहां पर एक एक खमासमण देकर भगवान्हं इत्यादि एक एक पद कहना चाहिए, यह नीचे मुताबिक बोलना)

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । भगवान्हं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करुं? इच्छं

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना, फिर
भरहेसर की सज्झाय बोलनी सो नीचे मुताबिक है ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

भरहेसर, बाहुबली, अभय–कुमारो अ ढंढण–कुमारो, सिरिओ, अणिआ–उत्तो, अइ–मुत्तो, नाग–दत्तो अ ।।1।। मेअज्ज, थूल–भद्दो, वयर–रिसी, नंदि–सेण, सिंह–गिरी; कयवन्नो अ, सु–कोसल, पुंडरिओ, केसी, कर–कंडू ।।2।। हल्ल विहल्ल, सुदंसण, साल, महा–साल, सालि–भद्दो अ; भद्दो, दसन्न–भद्दो, पसन्न–चंदो अ जस–भद्दो।।3।। जंबूपहू, वंकचूलो, गय–सुकुमालो, अवंति–सुकुमालो; धन्नो, इलाई–पुत्तो, चिलाई–पुत्तो

अ बाहु–मुणी ।।4।। अज्ज–गिरी, अज्ज–रक्खिअ, अज्ज–सुहत्थी, उदायगो, मणगो, कालय–सूरी, संबो, पज्जुन्नो, मूल–देवो अ।।5।। पभवो, विण्हु–कुमारो, अद्द–कुमारो, दढ–प्पहारी अ; सिज्जंस, कूर–गडू अ, सिज्जंभव, मेह–कुमारो अ।।6।। एमाई महा–सत्ता, दिंतु सुहं गुण–गणेहिं संजुत्ता; जेसिं नाम–ग्गहणे, पाव–प्पबंधा विलयं जंति ।।7।। सुलसा, चंदन–बाला, मणो–रमा, मयण–रेहा, दमयंती; नमया–सुंदरी, सीया, नंदा, भद्दा, सुभद्दा य ।।8।। राई–मई, रिसि–दत्ता, पउमावइ, अंजणा, सिरि–देवी; जिट्ठ, सुजिट्ठ, मिगावई, पभावई, चिल्लणा–देवी ।।9।। बंभी, सुंदरी, रूप्पिणी, रेवई, कुंती, सिवा, जयंती य; देवई, दोवई, धारणी, कलावई पुप्फचूला य।।10।। पउमावइ य गोरी, गंधारी, लक्खमणा, सुसीमा य; जंबूवई, सच्च–भामा, रूप्पिणी, कण्ह–ऽट्ठ–महिसीओ ।।11।। जक्खा य जक्ख–दिन्ना, भूआ तह चेव भूअ–दिन्ना य, सेणा, वेणा, रेणा, भयणीओ थूलभद्दस्स ।।12।। इच्चाई महा–सईओ, जयंति अ–कलंक–सील–कलिआओ; अज्ज वि वज्जइ जासिं, जस–पडहो तिहुअणे सयले ।।13।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

इच्छकार, सुह–राई? सुख–तप? शरीर निराबाध? सुख–संजम–जात्रा निर्वहो छो जी? स्वामी! शाता छे जी? भात–पाणीनो लाभ देजो जी ।। 1 ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं

(दाहिना हाथ चरवला या कटासणा पर स्थापना करके निम्न पाठ बोलना)

सव्वस्स वि राइअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कडं ।।1।। (फिर योग मुद्रा में बैठकर)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

(खडे होकर)

करेमि (2) भंते! (1) सामाइअं, (6) सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं, तिविहेणं,

मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स (3) भंते!, (4) पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, (5) अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं, कम्माणं-निग्घायण -ट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक नहीं आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना। फिर प्रकट लोगस्स कहना। वह नीचे मुताबिक है।)

लोगस्स उज्जोअ–गरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।। उसभ–मजिअं च वंदे, संभव–मभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं, सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि रिट्ठ–नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला, पहीण–जर–मरणा, चउवीसंपि जिण–वरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग–बोहि–लाभं, समाहि–वर–मुत्तमं दिंतु ।।6।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास–यरा, सागर–वर–गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

सव्वलोए अरिहंत–चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं वंदण–वत्तिआए, पूअण–वत्तिआए, सक्कार–वत्तिआए, सम्माण–वत्तिआए, बोहि–लाभ–वत्तिआए निरूवसग्ग–वत्तिआए सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4 ।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5 ।।

(फिर एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक नहीं आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना । फिर पुक्खरवरदीवड्ढे कहना । वह नीचे मुताबिक है ।)

पुक्खर–वर–दीवड्ढे, धायई–संडे अ जंबू–दीवे अ; भरहेरवय–विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।। तम–तिमिर–पडल–विद्धं–सणस्स–सुरगण–नरिंद–महिअस्स; सीमाधरस्स वंदे,पप्फोडिअ–मोहजालस्स ।।2।। जाइ–जरा–मरण–सोग–पणासणस्स, कल्लाण–पुक्खल विसाल–सुहावहस्स, को देव–दाणव–नरिंद–गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।3।। सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे, देवं नाग सुवन्न–किन्नर–गण, सब्भूअ–भावच्चिए, लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं,तेलुक्क–मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।

सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए पूअण–वत्तिआए, सक्कार–वत्तिआए, सम्माण–वत्तिआए, बोहि–लाभ–वत्तिआए निरूवसग्ग–वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(फिर अतिचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना । काउस्सग्ग में गिनने की आठ गाथा नीचे मुजब है ।)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि, आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1 ।। काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे, वंजण–अत्थ–तदुभए अट्ठविहो नाणमायारो।।2 ।। निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा–अमूढदिट्ठी–अ,उववूह थिरी–करणे, वच्छल्ल–प्पभावणे अट्ठ ।।3 ।। पणिहाण–जोगजुत्तो, पंचहिं–समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं, एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4 ।। बारस–विहंमि वि तवे, सब्भिंतर–बाहिरे कुसल–दिट्ठे,अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ।।5 ।। अणसण–मूणोअरिआ, वित्ति–संखेवणं रसच्चाओ, काय–किलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होई।।6 ।। पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ, झाणं उस्सग्गो वि अ अब्भिंतरओ तवो होई ।।7 ।। अणिगूहिअ–बल–वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो; जुंजई अ जहा–थामं, नायव्वो वीरिया–यारो ।।8।।

(काउस्सग्ग पारकर सिद्धाणं बुद्धाणं कहना । वह नीचे मुताबिक है)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार–गयाणं, परंपर–गयाणं, लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं ।।1 ।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, तं देव–देव–महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2 ।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर–वसहस्स वद्धमाणस्स; संसार–सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3 ।। उज्जिंत–सेल–सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ

जस्स, तं धम्म–चक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4।।
चत्तारि–अट्ठ–दस–दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं,
परमट्ठ–निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5।।

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन करके पश्चात् दो वांदणा देना । वह नीचे मुताबिक है ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।।3।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए,

मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। ।।3।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइअ आलोउं ? इच्छं

ओलोएमि जो मे राइओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह–मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारस–विहस्स सावग–धम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं

(पौषध लिया हो तो गमणागमणे सूत्र बोलना)

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण – वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय; बे लाख चउरिन्द्रिय ।।1 ।। चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोराशी लाख जीवयोनिमांहि, मारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय; हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ।।2।।

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति–अरति, सोलमे पर–परिवाद, सत्तरमे माया–मृषा–वाद,अढारमे मिथ्यात्व–शल्य ।।1।। ए अढार पापस्थानकमांहि, मारे जीवे जे कोई पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये, अनुमोद्युं होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ।।2।।

सव्वस्सवि राइअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ; इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं

(बाद में दाहिना घुटना ऊँचा करके नीचे मुताबिक बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

करेमि (2) भंते! (1) सामाइअं, (6) सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स (3) भंते!, (4) पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, (5) अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे राइओ, अइयारो कओ,काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,

अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह–मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारस–विहस्स सावग–धम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

वंदित्तु सव्व–सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व–साहू अ, इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग–धम्माइआरस्स ।।1।। जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ; सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि।।2।। दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे, कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।3।। जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं, रागेण व दोषेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4।। आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे, अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।5।। संका–कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु, सम्मत्तस्स – इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।6।। छक्काय–समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा, अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7।। पंचण्ह मणुव्वयाणं, गुण–व्वयाणं च तिण्हमइयारे, सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।8।। पढमे अणुव्वयंमि, थूलग–पाणा–इवाय–विरईओ, आयरिय–मप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।9।। वह–बंध–छविच्छेए, अइ–भारे भत्त–पाण–वुच्छेए, पढम–वयस्स–इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।10।। बीए अणु–व्वयंमि, परिथूलग–अलिअ–

वयण–विरईओ, आयरिअ–मप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ।।11।। सहसा–रहस्स–दारे, मोसुवएसे अ कूड–लेहे अ, बीय–वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।12।। तइए अणुव्वयंमि, थूलग–पर–दव्व–हरण–विरईओ, आयरिअ–मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।13।। तेना–हडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरूद्ध–गमणे अ, कूड–तुल कूड–माणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।14।। चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं पर–दार–गमण–विरईओ, आयरिअ–मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ।।15।। अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग–विवाह–तिव्व–अणुरागे,चउत्थ–वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।16।। इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरिअ–मप्पसत्थम्मि; परिमाण–परिच्छेए, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ।।17।। धण–धन्न–खित्त–वत्थू– रूप्प–सुवन्ने अ कुविअ–परिमाणे; दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।18।। गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च, वुड्ढी सइ–अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।।19।। मज्जम्मि अ मंसम्मिअ, पुप्फे अ फले अ गंध–मल्ले अ; उवभोग–परिभोगे, बीयम्मि गुण–व्वए निंदे ।।20।। सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल–दुप्पोलिअं च आहारे; तुच्छोसहि–भक्खणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं।।21।। इंगाली–वण–साडी,भाडी–फोडीसु–वज्जए कम्मं; वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख–रस–केस–विस–विसयं ।।22।। एवं खु जंत–पिल्लण– कम्मं निल्लंछणं च दव–दाणं, सर–दह–तलाय–सोसं, असई–पोसं च

वज्जिज्जा ।।23।। सत्थग्गि–मुसल –जंतग, तण–कट्ठे मंत–मूल–भेसज्जे, दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।24।। न्हाणुव्वट्टण–वन्नग–विलेवणे, सद्द–रूव–रस–गंधे ।। वत्था–सण–आभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ।।25।। कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग–अइरित्ते ।। दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ।।26।। तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सई विहूणे; सामाइअ वितह–कए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे; देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।। संथारूच्चारविहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए, पोसहविहि–विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।। सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव, कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30।। सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31।। साहूसु संविभागो, न कओ तव–चरण–करण–जुत्तेसु; संते फासुअ–दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32।। इहलोए परलोए, जीविअ–मरणे अ आसंस–पओगे, पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33।। काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए, मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34।। वंदण–वय–सिक्खा–गारवेसु सन्ना–कसाय–दंडेसु; गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35।। सम्मद्दिट्ठि जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि, अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ।।36।। तं पि हु सपडिक्कमणं, सपरिआवं स–उत्तर–गुणं च; खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व

सु–सिक्खिओ विज्जो ॥37॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंत–मूल–विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥38॥ एवं अट्ठ–विहं कम्मं, राग–दोस–सम–ज्जिअं, आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सु–सावओ ॥39॥ कय–पावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिय गुरु–सगासे ॥ होइ अइरेग–लहुओ, ओहरिअ –भरूव्व भारवहो ॥40॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहु–रओ होइ ॥ दुक्खाण–मंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥41॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण–काले, मूलगुण–उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥42॥ तस्स धम्मस्स केवलि–पन्नत्तस्स, (यहा से खडे होकर बोलना)

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए; विरओ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥43॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ, सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥44॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवय–महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ॥45॥ चिर–संचिय–पाव–पणासणीइ, भव–सय–सहस्स–महणीए, चउवीस–जिण–विणिग्गय–कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥46॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ, सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥47॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं, असद्दहणे अ तहा, विवरीअ–परूवणाए अ ॥48॥ खामेमि सव्व–जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व–भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥49॥ एवं

महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ–दुगंछिअं सम्मं, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।

(फिर वांदणा नीचे अनुसार दो बार देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।।3।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो

कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। ।।3।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ–मि अब्भिंतर–राइअं, खामेउं ? इच्छं, खामेमि राईअं,

(दाहिना हाथ जमीन पर रखकर और बाँया हाथ मुँह के आगे रखकर मस्तक नीचे झुकाकर आगे का पाठ पढे)

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर–भासाए, उवरि–भासाए, जं किंचि मज्झ विणय–परिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

(फिर दो बार नीचे अनुसार वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।।3।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। ।।3।।

(दोनों हाथ मस्तक पर जोडकर के अंजली करके निम्न सूत्र पढे ।)

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल–गणे अ, जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ।।1 ।। सव्वस्स समण–संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे, सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।2 ।। सव्वस्स जीव–रासिस्स, भावओ धम्म–निहिअ–निय–चित्तो, सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ।।3 ।।

करेमि (2) भंते! (1) सामाइअं, (6) सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स (3) भंते!, (4) पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, (5) अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ, अइयारो कओ,काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह–मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारस–विहस्स सावग–धम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं

तस्स उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं, कम्माणं–निग्घायण–ट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।1 ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1 ।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2 ।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो।।3 ।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4 ।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5 ।।

(यहाँ पर तप चिंतन का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो सोलह नवकार गिनना, काउस्सग्ग पार करके प्रकट लोगस्स कहना, वह नीचे मुताबिक है ।)

तप चिंतवन का काउस्सग्ग करने की विधि

काउसग्ग अवस्था में खडे होकर मन ही मन में चिंतन

करे कि हे चेतन ! निकट उपकारी शासनपति भगवान श्री महावीरस्वामीने छः मासी तप किया था, अर्थात् छः महिने तक चौविहार उपवास किये थे तो क्या तूं कर सकता है ?

उत्तर में चिंतन करे कि न शक्ति ही है और न परिणाम (भावना) है ।

एक उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
दो उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
तीन उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
चार उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
पाँच उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
छह उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
सात उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
आठ उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
नौ उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?
दस उपवास कम छः मासी तप कर सकता है ?

इसी प्रकार क्रमसर उतरते–उतरते उन्नत्रीस उपवास कम तक चिंतन करे ? उत्तर में उसी प्रकार न शक्ति है और न परिणाम है । पश्चात्

चारमासी तप तू कर सकता है ? तीन मासी तप तू कर सकता है ? दो मासी तप तू कर सकता है ? एक मासी तप तू कर सकता है ? उगंतीस (29) उपवास तूं कर सकता है ? अट्ठावीस (28) उपवास तूं कर सकता है ? सतावीस (27) उपवास तूं कर सकता है ?

छब्बीस (26) उपवास तूं कर सकता है ? पच्चीस (25) उपवास तूं कर सकता है ?

इसी प्रकार क्रमसर उतरते–उतरते सत्रह (17) उपवास कम तक चिंतन करे ।

उत्तर में उसी प्रकास से न शक्ति है और न परिणाम है।

सोलह उपवास को 34 भक्त कहा जाता है ।

34 भक्त की आराधना कर सकता है । 32 भक्त की आराधना कर सकता है । 30 भक्त की आराधना कर सकता है । 28 भक्त की आराधना कर सकता है । 26 भक्त की आराधना कर सकता है । 24 भक्त की आराधना कर सकता है । 22 भक्त की आराधना कर सकता है । 20 भक्त की आराधना कर सकता है । 18 भक्त की आराधना कर सकता है । 16 भक्त की आराधना कर सकता है । 14 भक्त की आराधना कर सकता है । 12 भक्त की आराधना कर सकता है । 10 भक्त की आराधना कर सकता है । तीन उपवास की आराधना कर सकता है । दो उपवास की आराधना कर सकता है । एक उपवास की आराधना कर सकता है ।

उपरोक्त भक्त का चिंतन करते हुए जहाँ तक उपवास किये हो वहाँ कहना कि शक्ति है, भाव नहीं है । और किये हुए उपवास के उपरांत के उपवास पर कहना कि भाव है शक्ति नहीं है ।

पश्चात आयंबिल, निवि, एकासणा, बियासणा एवं अवड्ढ, पुरिमड्ढ, साड्ढपोरिसी, पोरिसी, नवकारशी मुट्ठसी ।

इनमें से जो भी इच्छा हो वह कर सकते है । उस समय मन में धारणा करनी चाहिए कि आज मैं यह तप करुंगा । उसकी शक्ति है और परिणाम भी है । ऐसा चिंतन करके नमो अरिहंताणं कहके काउस्सग्ग पारकर प्रकट लोगस्स कहे ।

लोगस्स उज्जोअ–गरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभव–मभिणंदणं च सुमइंच, पउमप्पहं, सुपासं, जिणंच चंदप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि रिट्ठ–नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला, पहीण–जर–मरणा, चउवीसंपि जिण–वरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग–बोहि–लाभं, समाहि–वर–मुत्तमं दिंतु ।।6।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास–यरा, सागर–वर–गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहन करे ।
पश्चात दो वांदणा देना । नीचे मुताबिक है ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमा–समणाणं,

राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।।3।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह, मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो–कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे किलामो ! ।।1।। अप्प–किलंताणं बहु–सुभेण भे ! राइअ वइक्कंता ? जत्ता–भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा– समणो ! राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमा–समणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए, वय – दुक्कडाए, काय – दुक्कडाए ।।2।। कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व–कालिआए सव्व–मिच्छोवयाराए, सव्व–धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा–समणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। ।।3।।

(फिर दोनो हाथ जोडकर बैठकर सकल तीर्थ सूत्र कहना)

सकल तीर्थ वंदुं कर जोड, जिनवर–नामे मंगल कोड; पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निश–दिश ।।1।। बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां; त्रीजे बार लाख सद्दह्यां; चोथे स्वर्गे अड लख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार ।।2।। छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीश सहस प्रासाद; आठमे स्वर्गे छ हजार, नव–दशमे वंदुं शत चार

।।3।।अगयार–बारमे त्रणसे सार, नव ग्रैवेयके त्रणसे अढार, पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिका वली ।।4।। सहस–सत्ताणुं त्रेवीश सार, जिनवर–भवनतणो अधिकार; लांबा सो जोजन विस्तार, पचास उंचां बहोंतेर धार ।।5।। एकसो एंशी बिंब प्रमाण, सभा–सहित एक चैत्ये जाण; सो कोड, बावन क्रोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ।।6।। सातसें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल; सात क्रोड ने बहोंतेर लाख, भवनपतिमां देवल भाख ।।7।। एकसो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण; तेरसे क्रोड, नेव्याशी क्रोड, साठ लाख वंदुं कर जोड ।।8।। बत्रीसें ने ओगण–साठ, तीर्च्छा–लोकमां चैत्यनो पाठ; त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीश ते बिंब जुहार ।।9।। व्यंतर ज्योतिषीमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह; ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ।।10।। समेतशिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीस, विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ।।11।। शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार; अंतरिक्ख वरकाणो पास, जीराउलो ते थंभण पास ।।12।। गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह; विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश–दिश ।।13।। अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार; पंच महाव्रत समिति सार, पाले पलावे पंचाचार ।।14।। बाह्य–अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गुण–मणि–माल; नित नित उठी कीर्ति करूं, जीव कहे भवसायर तरूं ।।15।।

(फिर जो पच्चक्खाण लेना हो वह यहाँ पर लेना)

नवकारशी

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।।

पोरिंसी तथा साड्ढ पोरिंसी का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, उग्गअे सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।।

पुरिमड्ढ तथा अवड्ढ का पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, पुरिमड्ढ अवड्ढ, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।।

एकासणा-बियासणा-निवि का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, उग्गअे सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेणं,

सव्वसमाहिवत्तियागारेणं निव्विगइअ विगईओ, पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं,गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खितविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। एगासणं बियासणं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आऊंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महतरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेणवा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ।।

आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, उग्गअे सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, म हत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं,गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खितविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। एगासणं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आऊंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महतरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेणवा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ।।

तिविहार उपवास

सूरे उग्गअे, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि–वत्तियागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साड्ढ पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स, लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेणवा, वोसिरइ।

(नोटः– 1 उपवास–अब्भत्तट्ठं, 2 उपवास–छट्ठंभत्तं, 3 उपवास–अष्टभत्तं, 4 उपवास–दशभत्तं, 5. उपवास–बारभत्तं, 6. उपवास–चतुर्दशभत्तं, 7 उपवास–सोलसभत्तं, 8. उपवास– अष्टादशभत्तं, 9. उपवास–वीशभत्तं)

उपवास में पाणाहार का पच्चक्खाण

पाणाहार पोरिसिं साड्ढपोरिसिं सूरे उग्गए पुरिमुड्ढं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, अन्नथणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरई

चौविहार उपवास

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थाणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।।

सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है ।

(किया हो तो किया है धारा है तो धारा है, ऐसा कहना और नवकारशी पोरिसी उपरांत पच्चक्खाण करना हो तो भी यहाँ पर धार लेना)

(पुरुष) इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं ।। नमोऽर्हत्–सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्यः ।।1 ।।

विशाल–लोचन–दलं, प्रोद्यद्–दन्तांशु केसरम्; प्रातर्वीर जिनेन्द्रस्य, मुख–पद्मं पुनातु वः ।।1 ।। येषामभिषेक कर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः।। तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ।।2 ।। कलंक–निर्मुक्तममुक्त –पूर्णतं, कुतर्क–राहु–ग्रसनं सदोदयम् ।। अ–पूर्व–चन्द्रं जिन–चन्द्र–भाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नम–स्कृतम् ।।3 ।।

(स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हो तो यहाँ पर
संसारदावानल कहे । वह नीचे मुताबिक है ।)

संसार–दावानल–दाह–नीरं, संमोह–धूली–हरणे समीरं ।। माया–रसा–दारण–सार–सीरं, नमामि वीरं गिरि–सार–धीरं ।।1 ।। भावावनाम–सुर–दानव–मानवेन–चूला–विलोल–कमला–वलि–मालितानि ।। संपूरिताभिनत–लोक–समीहितानि, कामं नमामि जिनराज–पदानि तानि ।।2 ।। बोधागाधं, सुपद–पदवी–नीर–पूरा–ऽभिरामं, जीवा–ऽहिंसा–विरल–लहरी–संगमा–ऽगाह–देहं; चूला–वेलं गुरु–गम–मणि संकुलं दूर–पारं, सारं वीरा–ऽऽगम–जल–निधिं सादरं साधु सेवे ।।3 ।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदण-वत्तिआए,पूअण-वत्तिआए,सक्कारवत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए,बोहि-लाभ-वत्तिआए निरूवसग्ग वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-

संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।।जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना फिर)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

कल्लाण–कंदंपढमंजिणिंदं,संतिंतओनेमि–जिणंमुणिंदं, पासं पयासं सुगुणिक्क ठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि–वद्धमाणं।।1।।

लोगस्स उज्जोअ–गरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।। उसभ–मजिअं च वंदे, संभव–मभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं, सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि रिट्ठ–नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला, पहीण–जर–मरणा, चउवीसंपि जिण–वरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग–बोहि–लाभं, समाहि–वर–मुत्तमं दिंतु ।।6।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास–यरा, सागर–वर–गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

सव्व लोए अरिहंत–चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ।।1 ।। वंदण–वत्तिआए, पूअण–वत्तिआए, सक्कार–वत्तिआए, सम्माण–वत्तिआए, बोहि–लाभ–वत्तिआए निरूवसग्ग–वत्तिआए।।2 ।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1 ।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं. ।।2 ।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3 ।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4 ।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5 ।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना ।
फिर दुसरी स्तुति कहे । वह नीचे मुताबिक है ।)

अपार–संसार–समुद्द–पारं,पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं, सव्वे जिणिंदा सुरविंद–वंदा, कल्लाण–वल्लीण विसाल–कंदा ।।2 ।।

पुक्खर–वर–दीवड्ढे, धायई–संडे अ जंबू–दीवे अ; भरहेरवय–विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1 ।। तम–तिमिर–पडल–विद्धं–सणस्स–सुरगण–नरिंद–महिअस्स; सीमाधरस्स वंदे,पप्फोडिअ–मोहजालस्स ।।2 ।।जाइ–जरा–मरण–सोग–पणासणस्स,कल्लाण–

पुक्खल विसाल–सुहावहस्स, को देव–दाणव–नरिंद–गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।3।। सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे, देवं नाग सुवन्न–किन्नर–गण, सब्भूअ–भावच्चिए, लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं,तेलुक्क–मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4।।

सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए पूअण–वत्तिआए,सक्कार–वत्तिआए, सम्माण–वत्तिआए, बोहि–लाभ–वत्तिआए निरूवसग्ग–वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना ।
फिर तीसरी स्तुति कहे । वह नीचे मुताबिक है ।)

निव्वाण–मग्गे वर–जाण–कप्पं, पणासिया–सेस–कुवाइ–दप्पं,मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ।।3।।

(काउस्सग्ग पारकर)

सिद्धाणंबुद्धाणं, पारगयाणं, परंपर–गयाणं, लोअग्गमुव–गयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं ।।1 ।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, तं देव–देव–महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2 ।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर–वसहस्स वद्धमाणस्स; संसार–सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।3 ।। उज्जिंत–सेल–सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स, तं धम्म–चक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।4 ।। चत्तारि–अट्ठ–दस–दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं, परमट्ठ–निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5 ।।

वेयावच्च–गराणं, संति–गराणं, सम्मदिट्ठि– समाहि–गराणं, करेमि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए।।1 ।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2 ।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3 ।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4 ।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5 ।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना फिर)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

कुंदिंदु–गोक्खीर–तुसार वन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना, वाए सिरी पुत्थय–वग्ग–हत्था,सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ।।4 ।।

(फिर नीचे मुताबिक नमुत्थुणं कहना)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । भगवान्हं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।।

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर स्थापन करके मस्तक झुकाकर निम्न पाठ पढे)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्म–भूमीसु ।।
जावंत के वि साहू, रयहरण–गुच्छ–पडिग्गह–धारा ।।1 ।।
पंच–महव्वय–धारा, अट्ठारस–सहस्स–सीलंग–धारा ।।
अक्खुया–यार–चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण
वंदामि ।।2 ।।

श्री सीमंधरस्वामी के दोहे

अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड ।
केवलधर मुगते गया, वंदु बे करजोड ।। 1।।

जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह ।
विषय कषाये न गांजीआ, ते प्रणमुं निश दिन ।। 2।।

बे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश ।
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निश दिश ।। 3।।

महाविदेहमां श्री सीमंधरस्वामी नित्य वंदु प्रभात ।
त्रिकरण वळी त्रियोगथी, जपुं अहर्निश जाप ।। 4।।

भरतक्षेत्रमां हुं रहुं, आप रहे विमुख ।
ध्यान–लोह चुंबक परे, करुं दृष्टि सन्मुख ।। 5।।

वृषभ लंछन चरणमां, कंचनवरणी काय ।
चोत्रीश अतिशय शोभता, वंदु सदा तुम पाय ।। 6।।

(हर दोहे के बाद एक खमासमण देना) इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री सीमंधर स्वामी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं (फिर दाया पैर उपर करके)

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमे उपगारी ,
श्री श्रेयांस पिता कुले, बहु शोभा तुम्हारी... ।।1।।

धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी,
वृषभ लंछने विराजमान, वंदे नरनारी... ।।2।।

धनुष पांचशे देहडीए, सोहिये सोवन वान,
कीर्ति–विजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान...।।3।।

जं किंचि नाम–तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिण–बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं–संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस–सीहाणं, पुरिस–वर–पुंडरीआणं, पुरिस–वर–गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग–नाहाणं, लोग–हिआणं, लोग–पईवाणं, लोग–पज्जोअ–गराणं ।।4।। अभय–दयाणं, चक्खु–दयाणं, मग्ग–दयाणं, सरण–दयाणं, बोहि–दयाणं ।।5।। धम्म–दयाणं, धम्म–देसयाणं, धम्म–नायगाणं, धम्म–सारहीणं, धम्मवर–चाउरंत–चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय–वरनाण–दंसण–धराणं, वियट्ट–छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व–दरिसीणं, सिव–मयल–मरूअ–मणंत–मक्खय– मव्वाबाह–मपुणरावित्ति –सिद्धिगइ–नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ–भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति–णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ–लोए अ;
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥1॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय–महाविदेहे अ; सव्वेसिं
तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ॥1॥

नमोऽर्हत्–सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्व–साधुभ्यः

सुणो चंदाजी! सीमंधर परमातम पासे जाजो.
मुज विनतडी प्रेम धरीने, एणी पेरे तुम संभलावजो.
जे त्रण भुवननो नायक छे,जस चोसठ इन्द्र पायक छे,
ज्ञान दर्शन जेहने खायक छे सुणो.1

जेनी कंचनवरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे,
पुंडरीगिणी नगरीनो राया छे सुणो. 2

बार पर्षदामांही बिराजे छे, तुम चौत्रीश अतिशय छाजे छे,
गुण पांत्रीस वाणीअे गाजे छे सुणो. 3

भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे,
रूप देखी भविजन मोहे छे सुणो. 4

तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसियो छुं,
महा मोहराय कर फसियो छुं सुणो. 5

पण साहिब चित्तमां धरियो छे, तुम आणा खड्ग कर ग्रहियो छे,
तो कांईक मुजथी डरियो छे सुणो. 6

जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो,
तो वाधे मुज मन अति नूरो सूणो. 7

जय वीयराय ! जग गुरु ! होउ ममं तुह पभावओ, भयवं, भव–निव्वेओ, मग्गाणुसारिआ इट्ठ–फल–सिद्धि।।1 ।। लोग–विरूद्ध–च्चाओ, गुरु–जण–पूआ परत्थ–करणं च, सुह–गुरु–जोगो तव्वयण–सेवणा आभव–म खंडा ।।2 ।। वारिज्जइ जइवि नियाण–बंधणं वीयराय ! तुह समये, तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं।।3 ।।दुक्ख–क्खओ कम्म–क्खओ, समाहि–मरणं च बोहि–लाभो अ, संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम–करणेणं ।।4 ।। सर्व–मंङ्गल–माङ्गल्यं, सर्व–कल्याण–कारणम् , प्रधानं सर्व–धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5 ।।

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए पूअण–वत्तिआए, सक्कार–वत्तिआए, सम्माण–वत्तिआए, बोहि–लाभ–वत्तिआए निरूवसग्ग–वत्तिआए ।।2 ।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1 ।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2 ।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3 ।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4 ।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5 ।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत् कहकर एक स्तुति

कहे वह नीचे मुताबिक है)

नमोऽर्हत्–सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्व–साधुभ्यः

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव ।
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करूं सेव ।।
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी ।
जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुण खाणी ।।

श्री शत्रुंजय-सिद्धक्षेत्र के दोहे

एकेकु डगलुं भरे, शेत्रुंजा सामुं जेह
रिखव कहे भव क्रोडनां कर्म खपावे तेह ।। 1।।

शेत्रुंजा समो तीरथ नहीं, रिखव समो नहीं देव ।
गौतम सरिखा गुरू नहीं, वळी वळी वंदुं तेह ।। 2।।

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोजार ।
मनुष्य जनम पामी करी, वंदुं वार हजार ।। 3।।

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार ।
शेत्रुंज नदी नाह्यो नहीं, एळे गयो अवतार ।। 4।।

शेत्रुंजी नदीए नाहीने, मुख बांधी मुखकोश ।
देव युगादि पूजीए, आणी मन संतोष ।। 5।।

जगमां तीरथ दो वड़ा, शत्रुंजय गिरनार ।
एक गढ रिखव समोसर्या, एक गढ नेमकुमार ।। 6।।

सिद्धाचल सिद्धि वर्या, गृही मुनिलिंग अनंत ।
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवि भगवंत ।। 7।।

शत्रुंजय गिरिमंडणो, मरूदेवीनो नंद ।
युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद ।। 8।।

(हर दोहे के बाद एक खमासमण देना,) इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री शत्रुंजय महातीर्थ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं (फिर दाया पैर उपर करके)

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ;
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे... ।।1।।

अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय;
पूर्व नव्वाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविआ प्रभु पाय... ।।2।।

सूरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम ;
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम... ।।3।।

जं किंचि नाम-तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

जावंति चेईआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ–लोए अ; सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1 ।।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय–महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ।।1 ।।

नमोऽर्हत्–सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्व–साधुभ्यः

सिद्धाचलगिरि भेटया (रागः दर्शन देजो नाथ)

सिद्धाचलगिरि भेटया रे, धन्य भाग्य हमारा,
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पारा,
रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नव्वाणुं वारा रे ।। 1

मूलनायक श्री आदिजिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चार,
अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे ।। 2

भावभक्ति शुं प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा,
यात्रा करी भविजन शुभभावे, नरक तिर्यंचगति वारा रे।। 3

दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा,
पतित उद्धारण बिरूद तमारूं, ए तीरथ जग सारा रे।। 4

संवत अढार त्याशी मास अषाढो, वदि आठम भोमवारा,
प्रभुजी के चरण प्रताप के संघ में, खिमारतन प्रभु प्यारा रे 5

जय वीयराय ! जग गुरु ! होउ ममं तुह पभावओ, भयवं, भव–निव्वेओ, मग्गाणुसारिआ इट्ठ–फल–सिद्धि ।।1 ।। लोग–विरूद्ध–च्चाओ, गुरु–जण–पूआ परत्थ–करणं च, सुह–गुरु–जोगो तव्वयण–सेवणा आभव–

म खंडा ।।2।। वारिज्जइ जइवि नियाण–बंधणं वीयराय ! तुह समये, तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।। दुक्ख–क्खओ कम्म–क्खओ, समाहि–मरणं च बोहि–लाभो अ, संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम–करणेणं ।।4।। सर्व–मंङ्गल–माङ्गल्यं, सर्व–कल्याण–कारणम् , प्रधानं सर्व–धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।।

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए पूअण–वत्तिआए, सक्कार–वत्तिआए, सम्माण–वत्तिआए, बोहि–लाभ–वत्तिआए निरूवसग्ग–वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ, ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं, ठाणेणं मोणेणं,झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे)

नमोऽर्हत्–सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्व–साधुभ्यः

सिद्धाचल मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल, मरुदेवानंदन, वंदन करुं त्रणकाल, ए तीरथ जाणी, पूर्व नवाणुं वार, आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ।।

सामायिक पारने की विधि पेजं.181 से 185 देखे ।

(चउक्कसाय से जयवीयराय सूत्र नही बोले)

देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि

(सामायिक लेने की विधि पेज नं.5 से पेज नं. 10)

(फिर यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहीं करना और वांदणा भी नहीं देना, यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना और यदि भोजन भी किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन करके दो वांदणा भी देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं? "इच्छं"

(ऐसा कहकर "मुहपत्ति" पडिलेहनी फिर वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो

कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छकारी भगवन ! पसाय करी पच्चक्खाणनो आदेश देशोजी

(बाद में पच्चक्खाण करना जो नीचे मुताबिक है)

(चउविहार) 1. खाद्य पदार्थ, 2. पानी, 3. फल, जूस, चाय आदि, 4. दवाई–मुखवास, तबाकु, अफीम आदि सभी का त्याग (तिविहार) इसमें सिर्फ पानी की छुट का पच्चक्खाण)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहं/तिविहं पि आहारं–असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।।

(यदि एकासणं, बियासणं व आयंबिल, निवी तथा तिविहार उपवास किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना)

पाणहार–दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।।

(खुद पच्चक्खाण करे तो "वोसिरामि" कहे)

(चौदह नियम धारनेवालों को देसावगासिय का पच्चक्खाण)

देसावगासिअं उवभोगं, परिभोगं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूं? "इच्छं"

(ऐसा कहकर बांया घुटना ऊंचा करके सकलकुशल वल्लि कहना फिर चैत्यवंदन करना)

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्त्त मेघो, दुरित तिमिरभानुः कल्प वृक्षोपमानः। भवजल निधिपोतः, सर्व सम्पत्ति हेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः। श्रेयसे पार्श्वनाथः।

सिद्धारथ सूत वंदिये, त्रिशलानो जायो
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो... ।।1।।

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया,
बहोंतर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ... ।।2।।

खिमाविजय जिनरायना अे, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्या, पद्मविजय विख्यात... ।।3।।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1 ।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1 ।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2 ।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3 ।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-

हिआणं, लोग–पईवाणं, लोग–पज्जोअ–गराणं ।।4।। अभय–दयाणं, चक्खु–दयाणं, मग्ग–दयाणं, सरण–दयाणं, बोहि–दयाणं ।।5।। धम्म–दयाणं, धम्म–देसयाणं, धम्म–नायगाणं, धम्म–सारहीणं, धम्मवर–चाउरंत–चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय–वरनाण–दंसण–धराणं, वियट्ट–छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व–दरिसीणं, सिव–मयल–मरूअ–मणंत–मक्खय– मव्वाबाह–मपुणरावित्ति –सिद्धिगइ–नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ–भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति–णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

अरिहंत–चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण–वत्तिआए पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर कहके स्तुति बोलना,)

“ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽपाध्याय सर्वसाधुभ्य:’

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजिए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत ! अलवेसरु...

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

सव्वलोए अरिहंत-चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण-वत्तिआए पूअण-वत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माण-वत्तिआए बोहिलाभ-वत्तिआए निरुवसग्ग-वत्तिआए।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं

सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके करके फिर दूसरी स्तुति बोलना, वह नीचे मुताबिक है)

दोया राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुणनीला
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण लह्या

पुक्खरवर–दीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय–विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1 ।। तम–तिमिर–पडल–विद्धंसणस्स सुरगण–नरिंद–महियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ–मोहजालस्स ।।2 ।। जाइ–जरा–मरण–सोग–पणासणस्स, कल्लाण–पुक्खल–विसाल–सुहावहस्स। को देव दाणव–नरिंद–गणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।3 ।। सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं–नाग–सुवन्न–किन्नर–गण–सब्भूअ–भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क–मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4 ।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण–वत्तिआए पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके फिर तीसरी स्तुति बोलना, वह नीचे मुताबिक है)

आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखियो, ते हुओ शिव सुख साखीओ

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार–गयाणं परंपर–गयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं ।।1 ।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसन्ति। तं देव देव–म हिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2 ।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर–वसहस्स वद्धमाणस्स। संसार–सागराओ, तारेइं नरं व नारिं वा ।।3 ।। उज्जिंतसेल–सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ–जस्स। तं धम्म–चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं, नमंसामि ।।4 ।। चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ–निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5 ।।

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठि–समाहिगराणं करेमि काउसग्गं।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–

मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर फिर चोथी स्तुति बोलना वह नीचे मुताबिक है)

''नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽ–पाध्याय सर्वसाधुभ्य:'

धरणेन्द्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती; सहु संघनां संकट चूरती, नयविमलनां वांछित पूरती।।4।।

(फिर नीचे बैठकर बांया घुटना ऊंचा करके नमुत्थुणं बोलना)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं–संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस–सीहाणं, पुरिस–वर–पुंडरीआणं, पुरिस–वर–गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग–नाहाणं, लोग–हिआणं, लोग–पईवाणं, लोग–पज्जोअ–गराणं ।।4।। अभय–दयाणं, चक्खु–दयाणं, मग्ग–दयाणं, सरण–दयाणं, बोहि–दयाणं ।।5।।धम्म–दयाणं,धम्म–देसयाणं,धम्म–नायगाणं,धम्म–सारहीणं, धम्मवर–चाउरंत–चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय–वरनाण–दंसण–धराणं, वियट्ट–छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व–दरिसीणं, सिव–मयल–मरूअ–मणंत–मक्खय–मव्वाबाह–मपुणरावित्ति –सिद्धिगइ–नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ–भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति–णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। भगवान्हं,

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। आचार्यहं

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। उपाध्यायहं

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। सर्व साधुहं

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ पडिक्क्मणे ठाऊं? इच्छं

(दाहिना हाथ का पंजा चरवळा या कटासणा पर रखकर सिर झूकाकर नीचे मुताबिक सूत्र बोलना)

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छामि दुक्कडं ।।

(बाद में खडे होकर)

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,

सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह–मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारस–विहस्स सावग–धम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(फिर अतिचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना, काउस्सग्ग में गिनने की आठ गाथा नीचे मुताबिक है)

नाणम्मि दंसणम्मि अ चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1 ।। काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे। वंजण अत्थ–तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।।2 ।। निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूह–थिरीकरणे, वच्छल्ल–

पभावणे अट्ठ ।।3।। पणिहाण–जोग–जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरिता यारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4।। बारसविहम्मि वि तवे, सब्भिंतर–बाहिरे कुसल–दिट्ठे। अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ।।5।। अणसणमूणोअरिया, वित्ती–संखेवणं रस–च्चाओ। काय–किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ।।6।। पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होई ।।7।। अणिगूहिअ–बल–वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो। जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरिआयारो ।।8।।

(काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजब)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे ।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर तीसरे आवश्यक की ''मुहपत्ति' का पडिलेहण करना)
(मुहपत्ति के 50 बोलसे मुहपत्ति को उभडक बैठकर पडिलेहनी, फिर वांदणा नीचे मुजब देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(चरवला हो तो खडे होकर हाथ जोडकर नीचे मुजब बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं? इच्छं। आलोएमि, जो मे देवसिओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ-कप्पो अ-करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्म स्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(दोनों हाथ जोडकर "सातलाख' सूत्र कहे)

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण - वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय; बे लाख चउरिन्द्रिय ।।1 ।। चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय,चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोराशी लाख जीवयोनिमांहि,मारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय; हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ।।2।।

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति-अरति, सोलमे पर-परिवाद, सत्तरमे माया-मृषा-वाद,अढारमे मिथ्यात्व-

शल्य ।।1।। ए अढार पापस्थानकमांहि, मारे जीवे जे कोई पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये, अनुमोद्युं होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ।।2।।

(अब हाथ जोडकर "सव्वसवि' सूत्र बोले)

सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(बाद में नीचे बैठकर दाहिना घुटना ऊंचा करके "वंदित्तु' सूत्र नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ-कप्पो अ-करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(वंदितु सूत्र)

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ, इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ।।1।। जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ, सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि।।2।। दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे, कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।3।। जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि।।4।। आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे, अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।5।। संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।6।। छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा, अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे।।7।। पंचण्ह मणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे, सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।8।। पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग-पाणाइवाय-विरईओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं।।9।। वह-वंध-छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए, पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।10।। बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरईओ, आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं।।11।। सहसा-रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ, बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं।।12।। तइए अणुव्वयम्मि, थूलग-पर-दव्व-हरण-विरईओ, आयरियअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं।।13।। तेना-हड-प्पओगे, तप्पडिरूवे

विरुद्ध–गमणे अ, कूडतुल–कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।14 ।। चउत्थे अणुवयम्मि, निच्चं परदार–गमण–विरईओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।15 ।। अपरिग्गहिआ–इत्तर–अणंग–वीवाह–तिव्व–अणुरागे, चउत्थवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।16 ।। इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअ मप्पसत्थम्मि, परिमाण –परिच्छेए, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।17 ।। धण–धन्न खित्त–वत्थू–रुप्प–सुवन्ने अ कुविअ–परिमाणे, दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।18 ।। गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च, वुड्ढी सइ–अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।।19 ।। मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध–मल्ले अ, उवभोग–परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ।।20 ।। सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल–दुप्पोलिअं च आहारे, तुच्छोसहि–भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।21 ।। इंगाली वण साडी, भाडी फोडीसु–वज्जए कम्मं, वाणिज्जं चेव दंत–लक्ख–रस–केस–विस–विसयं ।।22 ।। एवं खु जंतपील्लण–कम्मं निल्लंछणं च दव–दाणं, सर–दह–तलाय–सोसं, असई–पोसं च वज्जिज्जा ।।23 ।। सत्थग्गि–मुसल–जंतग–तण–कट्ठे मंत–मूल–भेसज्जे, दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।24 ।। न्हाणुव्वट्टण–वन्नग–विलेवणे सद्द–रूव–रस–गंधे, वत्थासण–आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।25 ।। कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि–अहिगरण–भोग–अइरित्ते, दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ।।26 ।। तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे

तहा सइ–विहूणे, सामाइअ वितह–कए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27 ।। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल–क्खेवे ।। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28 ।। संथारुच्चारविही–पमाय तह चेव भोयणाभोए, पोसह–विहि–विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।। सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस–मच्छरे चेव, कालाइक्कम–दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30 ।। सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31 ।। साहूसु संविभागो, न कओ तव–चरण–करण–जुत्तेसु, संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32 ।। इह लोए परलोए, जीविअ–मरणे अ आसंस–पओगे, पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33 ।।काएणकाइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए, मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34 ।।वंदण–वय–सिक्खा–गारवेसु सन्ना–कसाय–दंडेसु, गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइयारो अ तं निंदे ।।35 ।। सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि, अप्पो सि होइ बंधो, जेणं न निद्धंधसं कुणइ ।।36 ।। तं पि हु सपडिक्कमणं, सपरिआवं स उत्तर गुणं च, खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सु–सिक्खिओ विज्जो ।।37 ।। जहा विसं कुट्ठ–गयं, मंत–मूल –विसारया, विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38 ।। एवं अट्ठविहं कम्मं, राग–दोस–समज्जिअं, आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सु सावओ ।।39 ।। कय–पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु–सगासे, होइ अइरेग–लहुओ, ओहरिअ–भरुव्व भारवहो ।।40 ।। आवस्सएण

एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ।।41 ।। आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण–काले, मूलगुण–उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।। तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स

(यहाँ चरवळा हो तो खडे हो जाना चाहिये, अगर चरवळा न हो तो दाहिना पैर जो खडा किया था वो नीचे रख देना, बादमें बाकी रही आठ गाथा बोलना)

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए विरओ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43 ।। जावंति चेइयाइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44 ।। जावंत के वि साहू, भरहेरवय–महाविदेहे अ, सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ।।45 ।। चिर–संचिय–पाव–पणासणीइ भव–सय–सहस्स–महणीए, चउवीस–जिण–विणिग्गय–कहाइ वोलंतु मे दिअहा ।।46 ।। मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ, समद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।47 ।। पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं, असद्दहणे अ तहा, विवरीअ–परूवणाए अ ।।48 ।। खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49 ।। एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50 ।।

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो?

अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मि च्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर–देवसिअं खामेउं ? (गुरु हो तो कहेंगे–खामेह) इच्छं, खामेमि देवसिअं !

(फिर चरवले के उपर या आसन पर दाहिना हाथ रखकर)

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए। जं किंचि मज्झ विणय–परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

(फिर दो बार वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणि ज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे?

जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(अब मस्तक पर दो हाथ जोडकर नीचे मुताबिक बोलना)

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए-कुल-गणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि।।1।। सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करीअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि।।2।। सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ घम्म-निहिअ-निअ-चित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि।।3।।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ-कप्पो अ-करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं,

चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(दो लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' तक न आता हो तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करके फिर "नमो अरिहंताणं' कहकर सम्पूर्ण लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय–

वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ।।6 ।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

सव्वलोए अरिहंत–चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वंदण–वत्तिआए पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' तक न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करके "नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारके पुक्खरवरदीवड्ढे सूत्र नीचे मुताबिक कहना)

पुक्खरवर–दीवड्ढे, धायईसंडे य जंबुदीवे अ। भरहेरवय–विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1 ।। तम–तिमिर–पडल–विद्धंसणस्स सुरगण–नरिंद–महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ–मोहजालस्स ।।2 ।। जाइ–जरा–मरण–

सोग–पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल – विसाल – सुहावहस्स। को देव–दाणव–नरिंद–गणच्चियस्स, धम्म स्स सारमुवलब्भ करे पमायं।।3।। सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं–नाग–सुवन्न–किन्नर–गण–सब्भूअ–भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क–मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ।।4।। सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण–वत्तियाए।। पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा। तक न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करके "नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारके "सिद्धाणं बुद्धाणं' सूत्र नीचे मुताबिक कहना)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार–गयाणं परंपर–गयाणं। लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं।।1।। जो देवाण वि

देवो, जं देवा पंजली नमंसन्ति। तं देव देव–महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2 ।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर–वसहस्स वद्धमाणस्स। संसार–सागराओ, तारेइं नरं व नारिं वा ।।3 ।। उज्जिंतसेल–सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ–जस्स। तं धम्म–चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं, नमंसामि ।।4 ।। चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ–निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5 ।।

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर "नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽ उपाध्याय सर्वसाधुभ्य:' कहके स्तुति बोलना वह नीचे मुताबिक है)

(सिर्फ पुरुषो के लिए)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीय–कम्म–संघायं,
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअ–सायरे भत्ती

(सिर्फ स्त्रियों के लिए)

कमलदल विपुल नयना, कमल मुखी कमलगर्भ सम गौरी
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ।।

(सभी के लिए)

खित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर "नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽ उपाध्याय सर्वसाधुभ्य:' कहके स्तुति बोलना वह नीचे मुताबिक है)

(सिर्फ पुरुषो के लिए)

जिसे खित्ते साहू. दंसण–नाणेहिं चरण–सहिएहिं,
साहंति मुक्ख–मग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ।।1।।

(सिर्फ स्त्रियो के लिए)

यस्या: क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभि: साध्यते क्रिया,
सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्न सुख दायिनी ।।1।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

(छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहनी और दो वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी

(इस प्रकार छः आवश्यक याद करें)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(फिर योग मुद्रा (बायां घुटना उपर रखना))

(फिर पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्धमानाय' की स्तुति कहे)

नमोऽस्तुवर्द्धमानाय,स्पर्द्धमानायकर्मणा।तज्जयावाप्त–मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्।।1।। येषां विकचारविन्द–राज्या, जयायःक्रम–कमलावलिं दधत्या। सद्दशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः।।2।। कषाय–तापार्दित–जन्तु–निर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्र–मासोद्भव–वृष्टि–सन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्।।3।।

(स्त्रियां "संसारदावानल' की तीन गाथा कहे जो नीचे मुताबिक है)

संसार–दावानल–दाह–नीरं, संमोह–धूली हरणे–समीरं। माया–रसा–दारण–सार–सीरं, नमामि वीरं गिरि–सार–धीरं।।1।। भावा–वनाम–सुर–दानव–मानवेन–चूला–विलोल–कमला–वलि–मालितानि। संपूरिता–भिनत–लोक–समीहितानि, कामं नमामि जिन–राज–पदानि तानि।।2।। बोधागाधं सु–पद–पदवी–नीर–पूराभिरामं, जीवा–हिंसा–विरल–लहरी–संगमा–गाह–देहं। चूला–वेलं गुरुगम–मणी–संकुलं दूर–पारं, सारं वीरागम–जलनिधिं सादरं साधु सेवे।।3।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1 ।। आइगराणं तित्थयराणं सयं–संबुद्धाणं ।।2 ।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस–सीहाणं, पुरिस–वरपुंडरीआणं, पुरिस–वरगंधहत्थीणं ।।3 ।। लोगुत्तमाणं, लोग–नाहाणं, लोग–हिआणं, लोग–पईवाणं, लोग–पज्जोअगराणं ।।4 ।।अभय–दयाणं, चक्खु–दयाणं, मग्ग–दयाणं, सरण–दयाणं, बोहि–दयाणं ।।5 ।। धम्म–दयाणं, धम्म–देसयाणं, धम्म–नायगाणं, धम्म–सारहीणं, धम्म–वर–चाउरंत–चक्कवट्टीणं ।।6 ।। अप्पडिहय–वर–नाण–दंसण–धराणं, वियट्ट–छउमाणं ।।7 ।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8 ।। सव्वन्नूणं सव्व–दरिसीणं–सिव–मयल–मरुय–मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरा वित्ति–सिद्धिगइ–नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ–भयाणं ।।9 ।। जे अ अईआ, सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10 ।।

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

तुं प्रभु म्हारो, हुं प्रभु ताहरो

तुं प्रभु म्हारो, हुं प्रभु ताहरो, क्षण एक मुजने नाही विसारो
महेर करी मुज विनंती स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहालो.1

लाख चौराशी भटकी प्रभुजी, आव्यो छुं तारा शरणे जिनजी
दुर्गति कापो शिवसुख आपो, भक्त सेवकने निजपदे स्थापो..2

अक्षय खजानो प्रभु तारो भर्यो छे, आपो कृपालु में हाथ धर्यो छे
वामानंदन जगवंदन प्यारो, देव अनेरा माहे तुं छे न्यारो.. 3

पल पल समरुं नाथ शंखेश्वर, समरथ तारण तुं ही जिनेश्वर
प्राण थकी मुज अधिको व्हालो, दया करी मुजने नेहे निहालो .4

भक्त वत्सल तारुं बिरुद जाणी, केड न छोडूं प्रभु ऐम लेजो जाणी
चरणोनी सेवा नित–नित चाहूं, घडी–घडी मन मांहे उमांहू 5

ज्ञान विमल तुज भक्ति प्रभावे, भवो भवना संताप समावे,
अमीय भरेली तारी मुरति निहाली, पाप अंतरना देजो पखाली.6

(फिर वरकनक सूत्र से 170 जिनेश्वर को वंदन करे)(सिर्फ पुरुषो के लिए)

वरकनक–शंख–विद्रुम–मरकत–घन–सन्निभं विगत–मोहम्। सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर–पूजितं वन्दे ।।1 ।।

(फिर नीचे मुताबिक चार खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "भगवान्हं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "आचार्यहं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "उपाध्यायहं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "सर्वसाधुहं'

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर सिर झुकाकर)

अड्ढाइज्जेसु दीव–समुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु। जावंत के वि साहू, रयहरण–गुच्छ–पडिग्गह–धारा ।।1 ।। पंच म हव्वय–धारा, अट्ठारस–सहस्स–सीलंग–धारा। अक्खुयायार–चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।2 ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ–पायच्छित्त–विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, देवसिअ–पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(ऐसा कहकर चार लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' तक काउस्सग्ग करना, न आता हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर प्रगट सम्पूर्ण लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुं? "इच्छं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करुं? "इच्छं'

(फिर नीचे बैठकर)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं। (सज्झाय संग्रह पेज नं.233 मे दिया है वह से बोले)

जगत है स्वार्थ का साथी, समझ ले कौन है अपना,
ये काया काँचका कुंभा, नाहक तुं देखके फूलता,
पलक में फूट जावेगा, पता ज्युं डालसे गिरताजगत. ।।1 ।।

मनुष्य की एंसी जिंदगानी, अभी तुं चेत अभिमानी,
जीवन का क्या भरोसा है, करी ले धर्म की करणी ।।2।।

खजाना माल ने मंदिर, क्युं कहेता मेरा मेरा तुं,
यहाँ सब छोड जाना है, न आवे साथ कुछ तेरे ।।3 ।।

कुटुंब परिवार सुत दारा, सुपन सम देख जग सारा,
निकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा ।।4 ।।

तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवर को,
कहे खान्ति यही प्राणी हटावे कर्म जंजीर को ।।5 ।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

(फिर खडे होकर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं काउस्सग्ग करुं? इच्छं दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार "लोगस्स संपूर्ण' (पूरा लोगस्स) का काउस्सग्ग करना न आता हो तो 16 नवकार गिनना उसके बाद "नमो अरिहंताणं' कहके काउस्सग्ग पारके बाद में कहकर लघु शान्ति नीचे मुताबिक कहना)

"नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽपाध्याय सर्वसाधुभ्यः'

शान्तिं शान्ति–निशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य,
स्तोतुः शान्ति–निमित्तं, मन्त्र पदैः शान्तये स्तौमि ।।1।।

ओमिति निश्चित–वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्,
शान्ति–जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ।।2

सकला–तिशेषक–महा, संपत्ति–समन्विताय शस्याय,
त्रैलोक्य–पूजिताय च, नमो नमः शान्ति देवाय ।।3।।

सर्वाऽमर–सु–समूह–स्वामिक–संपूजिताय न जिताय,
भुवन–जन–पालनोद्यत–तमाय सततं नमस्तस्मै ।।4।।

सर्व–दुरितौघ–नाशन–कराय सर्वाऽशिव–प्रशमनाय,
दुष्ट–ग्रह–भूत–पिशाच–शाकिनीनां प्रमथनाय ।।5।।

यस्येति नाम–मन्त्र–प्रधान–वाक्योपयोगकृत–तोषा,
विजयाकुरूते जन–हित–मिति च नुता नमत तं शान्तिम् .6

भवतु नमस्ते भगवति! विजये! सुजये! परापरैरजिते!
अ–पराजिते!जगत्यां, जयतीति जया–वहे भवति! ।।7।।

सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र–कल्याण–मंगल–प्रददे!
साधूनां च सदा शिव–सु–तुष्टि–पुष्टि प्रदे! जीयाः ।।8।।

भव्यानां कृत–सिद्धे! निर्वृत्ति–निर्वाण–जननि! सत्त्वानाम्
अभय–प्रदान–निरते! नमोऽस्तु स्वस्ति–प्रदे! तुभ्यम् ।।9

भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि!
सम्यग–दृष्टीनां धृति–रति–मति–बुद्धि–प्रदानाय ।।10।।

जिनशासन–निरतानां, शान्ति–नतानां च जगति जनतानाम्
श्री–संपत्कीर्ति–यशो–वर्द्धनि! जयदेवि! विजयस्व ।।11

सलिला–ऽनल–विष–विषधर, दुष्ट–ग्रह–राज–रोग–रण–भयतः
राक्षस–रिपु–गण–मारी–चौरेति–श्वापदाऽऽदिभ्यः ।।12

अथ रक्ष रक्ष सु–शिवं, कुरू कुरू शान्तिं च कुरू कुरू सदेति,
तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं, कुरू कुरू स्वस्तिं च कुरू कुरू त्वम्

भगवति! गुणवति! शिव–शान्ति–तुष्टि–पुष्टि–
स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्,

ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः
यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा। ।।14।।

एवं यन्नामा–ऽक्षर–पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी,
कुरूते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ।।15।।

इति–पूर्व–सूरि–दर्शित–मन्त्र–पद–विदर्भितः स्तवःशान्तेः
सलिलादि–भय–विनाशी, शान्त्यादि–करश्च भक्तिमताम्

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा–योगम्,
स हि शान्तिपदं यातात् सूरिः श्रीमान–देवश्च ।।17।।

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न वल्लयः
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।18।।

सर्व–मंगल–मांगल्यं, सर्व–कल्याण–कारणम्,
प्रधानं सर्व–धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।19।।

(फिर काउस्सग्ग पारकर प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि

जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4 ।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5 ।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ।।6 ।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

फिर सामायिक पारने की विधि

पेज नं. 181 से पेज नं 185 तक देखकर पारे ।

प्रतिक्रमण का उपदेश या उपकरण देने का फल

* 10000 गायो का एक गोकुल होता है, ऐसे 10 हजार गोकुल का दान देने से जो पुण्य उपार्जन होता है उतना पुण्य किसी को प्रतिक्रमण करने का उपदेश देने से होता है ।
* 84 हजार दानशाला बांधने से जितना पुण्य मिले उतना पुण्य, गुरु को द्वादशावर्त्त वंदन करने से होता है

  5500 सोना महोर खर्च करके जीवाभिगम पन्नवणा भगवती सूत्र आदि लिखाने से या 5500 गर्भवती गायों को अभयदान देने से जो पुण्य मिले उतना पुण्य एक मुहपत्ति देने वाला प्राप्त कर सकता है ।
* 25000 शिखरबंधी जिनालय बांधने से या 100 स्तंभ युक्त 52 जिनालय बांधने से जितना पुण्य मिले उतना एक चरवले का दान करने से होता है ।
* मासक्षमण की तपश्चर्या करने से या जीव रक्षा के लिए क्रोड पिंजरा बनाने जो पुण्य मिले वह एक बैठका (कटासना) देने से मिलता है ।
* 500 धनुष प्रमाण 28 हजार प्रतिमा भराने से जो पुण्य होता है वह एक समय इरियावहियं करने से होता है ।
* जो मणिजडित स्वर्ण की सिडीयुक्त हजार स्तंभयुक्त ऊँचा. स्वर्ण के तलवाला श्री जिनमंदिर निर्माण करवाता है, उससे भी ज्यादा फल तपयुक्त एक पौषध करने से मिलता है ।
* 1 लाख योजन प्रमाण जंबूद्वीप में जितने पर्वत है वे सब कदाचित् सुवर्ण के हो जाय और जंबूद्वीप में जितनी धुल (रेती) है, उस रेती के सब कण कदाचित रत्न बन जाये, इन सबको कोई दान करे तो भी एक दिन मे लगे पाप की शुद्धि नहीं हो सकती ।

संवत्सरी प्रतिक्रमण की विधि

सामायिक लेने की विधि पेज नं.5 से पेज नं. 10)

(फिर यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहीं करना और वांदणा भी नहीं देना, यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना और यदि भोजन भी किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन करके दो वांदणा भी देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं? "इच्छं"

(ऐसा कहकर "मुहपत्ति" पडिलेहनी फिर वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे ! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो

कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छकारी भगवान् ! पसाय करी पच्चक्खाणनो आदेश देशोजी

(बाद में पच्चक्खाण करना जो नीचे मुताबिक है)

(चउविहार) 1. खाद्य पदार्थ, 2. पानी, 3. फल, जूस, चाय आदि, 4. दवाई–मुखवास, तबाकु, अफीम आदि सभी का त्याग (तिविहार) इसमें सिर्फ पानी की छुट का पच्चक्खाण)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहं/तिविहं पि आहारं–असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।।

(यदि चौविहार उपवास किया हो तो)

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थाणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।।

(यदि एकासणं, बियासणं व आयंबिल, निवी तथा तिविहार उपवास किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना)

पाणहार–दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।।

(खुद पच्चक्खाण करे तो "वोसिरामि" कहे)

(चौदह नियम धारनेवालों को देसावगासिय का पच्चक्खाण)

देसावगासिअं उवभोगं, परिभोगं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूं? "इच्छं"

(ऐसा कहकर बांया घुटना ऊंचा करके सकलकुशल वल्लि कहना फिर चैत्यवंदन करना)

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्त्त मेघो, दुरित तिमिरभानुः कल्प वृक्षोपमानः। भवजल निधिपोतः, सर्व सम्पत्ति हेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः। श्रेयसे पार्श्वनाथः।

श्री सकलार्हत् चैत्यवंदन

सकलार्हत्–प्रतिष्ठानमधिष्ठानं शिवश्रियः।
भूर्भुवः–स्वस्त्रयीशानमार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ।।1।।

नामाऽऽकृति–द्रव्य–भावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनम्।
क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्नर्हतः समुपास्महे ।।2।।

आदिमं पृथिवीनाथमादिमं निष्परिग्रहम्।
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभ–स्वामिनं स्तुमः ।।3।।

अर्हन्तमजितं विश्व–कमलाकर–भास्करम् ।
अम्लान–केवलादर्श–सङ्क्रान्त–जगतं स्तुवे ।।4 ।।

विश्व–भव्य–जनाराम–कुल्या–तुल्या–जयन्ति ताः ।
देशना–समये वाचः, श्रीसंभव–जगत्पतेः ।।5 ।।

अनेकांत मतांभोधि–समुल्लासन–चन्द्रमाः ।
दद्यादमन्दमानंदं, भगवानभिनंदनः ।।6 ।।

द्युसत्–किरीट–शाणाग्रोत्तेजिताङ्घ्रि–नखावलिः ।
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ।।7 ।।

पद्मप्रभ–प्रभोर्देह–भासः पुष्णन्तु वः श्रियम् ।
अन्तरङ्गारि–मथने, कोपाटोपादिवारुणाः ।।8 ।।

श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्र–महिताङ्घ्रये ।
नमश्चतुर्वर्ण–सङ्घ–गगनाभोग–भास्वते ।।9 ।।

चन्द्रप्रभ–प्रभोश्चन्द्र–मरीचि–निचयोज्ज्वला ।
मूर्तिर्मूर्त–सितध्यान–निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ।।10 ।।

करामलकवद् विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ।
अचिन्त्य माहात्म्य–निधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तुवः ।।11 ।।

सत्त्वानां–परमानन्द–कन्दोद्भेद–नवाम्बुदः ।
स्याद्वादामृत–निस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः । ।12 ।।

भव–रोगाऽऽर्त्त–जन्तूनामगदंकार–दर्शनः ।
निःश्रेयस–श्री–रमणः,श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः । ।13 ।।

विश्वोपकारकीभूत–तीर्थकृत्–कर्म–निर्मितिः ।
सुरासुर–नरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः । ।14 ।।

विमलस्वामिनो वाचः, कतक–क्षोद–सोदराः।
जयन्ति त्रिजगच्चेतो–जल–नैर्मल्य–हेतवः। ।15।।

स्वयम्भूरमण–स्पर्द्धी, करुणारस–वारिणा।
अनन्तजिदनन्तां वः, प्रयच्छतु सुख–श्रियम् । ।16।।

कल्पद्रुम–सधर्माणमिष्ट–प्राप्तौ शरीरिणाम्।
चतुर्द्धा धर्म–देष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे। ।17।।

सुधा–सोदर–वाग्–ज्योत्स्ना–निर्मलीकृत–दिङ्मुखः
मृग–लक्ष्मा तमःशान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः।।18।।

श्रीकुन्थुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः।
सुरासुर–नृ–नाथाना–मेकनाथोस्तुवः श्रिये। ।19।।

अरनाथस्तु भगवां–श्चतुर्थार–नभो–रविः।
चतुर्थ–पुरुषार्थ–श्री–विलासं वितनोतु वः ।।20।।

सुरासुर–नराधीश–मयूर–नव–वारिदम्।
कर्मद्रून्मूलने हस्ति–मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ।।21।।

जगन्महामोह–निद्रा–प्रत्यूष–समयोपमम्।
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशना–वचनं स्तुमः ।।22।।

लुठन्तो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकार–कारणम्।
वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पाद–नखांशवः ।।23।।

यदुवंश–समुद्रेन्दुः, कर्म–कक्ष–हुताशनः।
अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ।।24।।

कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति।
प्रभुस्तुल्य–मनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ।।25।।

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया।
महानन्द–सरो–राजमरालायार्हते नमः ।।26।।

कृतापराधेऽपि जने, कृपा–मन्थर–तारयोः।
ईषद्–बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्री वीरजिन–नेत्रयोः ।।27।।

जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीश–सेवितः श्रीमान्।
विमलस्त्रास–विरहितस्त्रिभुवन–चूडामणिर्भगवान् ।।28।।

वीरः सर्व–सुरासुरेन्द्र–महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्म–निचयो, वीराय नित्यं नमः।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री धृति कीर्त्ति कान्ति–निचयः श्रीवीर! भद्रं दिश।।29।।

अवनितल–गतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां,
वरभवन–गतानां दिव्य–वैमानिकानाम्।
इह मनुज–कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर–भवनानां भावतोऽहं नमामि ।।30।।

सर्वेषां वेधसमाद्यमादिमं परमेष्ठिनाम्।
देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ।।31।।

देवोऽनेक–भवार्जितोर्जित–महापाप–प्रदीपानलो,
देवःसिद्धि–वधू–विशाल–हृदयालंकार–हारोपमः।
देवोऽष्टादश–दोष–सिन्धुरघटा–निर्भेद–पञ्चाननो,
भव्यानां विदधातु, वाञ्छितफलं श्रीवीतरागो जिनः।।32।।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्री चित्रकूटादय
स्तत्र श्री ऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।।33।।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1 ।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1 ।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2 ।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3 ।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

अरिहंत-चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण-वत्तिआए पूअण-वत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माण-वत्तिआए बोहिलाभ-वत्तिआए निरुवसग्ग-वत्तिआए।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-

मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके स्तुति बोलना)

" नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽपाध्याय सर्वसाधुभ्य:'

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभो: शैशवे,
रूपालोकन–विस्मयाहृत–रस–भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा।
उन्मृष्टं नयन–प्रभा धवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुन: पुन: स जयति श्रीवर्द्धमानो जिन: ।।1 ।।

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।1 ।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे ।।2 ।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3 ।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4 ।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5 ।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ।।6 ।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

सव्वलोए अरिहंत–चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण–वत्तिआए पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके फिर दूसरी स्तुति बोलना, वह नीचे मुताबिक है)

हंसांसाहत–पद्मरेणु–कपिश–क्षीरार्णवाम्भोभृतैः,
कुम्भैरप्सरसां पयोधर–भर–प्रस्पर्द्धिभिः काञ्चनैः।
येषां मन्दर–रत्नशैल–शिखरे जन्माभिषेकः कृतः।
सर्वैः सर्व–सुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ।।2।।

पुक्खरवर–दीवड्ढे, धायईसंडे य जंबुदीवे अ। भरहेरवय–विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1।। तम–तिमिर–पडल–विद्धंसणस्स सुरगण–नरिंद–महियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ–मोहजालस्स ।।2।। जाइ–जरा–मरण–सोग–पणासणस्स, कल्लाण–पुक्खल–

विसाल–सुहावहस्स। को देव दाणव–नरिंद–गणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।3 ।। सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं–नाग–सुवन्न–किन्नर–गण–सब्भूअ–भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क–मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4 ।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण–वत्तिआए पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके फिर तीसरी स्तुति बोलना, वह नीचे मुताबिक है)

अर्हद्वक्त्र–प्रसूतं गणधर–रचितं द्वादशाङ्गं विशालं,
चित्रं बह्वर्थ–युक्तं मुनिगण–वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः।
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरण–फलं ज्ञेय–भावप्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ।।3।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार–गयाणं परंपर–गयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं।।1।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसन्ति। तं देव देव–महिअं, सिरसा वंदे महावीरं।।2।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर–वसहस्स वद्धमाणस्स। संसार–सागराओ, तारेइं नरं व नारिं वा।।3।। उज्जिंतसेल–सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ–जस्स। तं धम्म–चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं, नमंसामि।।4।। चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ–निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।5।।

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठि–समाहिगराणं करेमि काउसग्गं।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर चोथी स्तुति बोलना)

''नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽपाध्याय सर्वसाधुभ्यः'

निष्पंक–व्योम–नील–द्युतिमलसदृशं बालचन्द्राभदंष्ट्रं,
मत्तं घण्टारवेण प्रसृत–मदजलं पूरयन्तं समन्तात्।
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी,
यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम्।।4।।

(फिर नीचे बैठकर बांया घुटना ऊंचा करके नमुत्थुणं बोलना)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ।।4।। अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6।।अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8।। सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। भगवान्हं,

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। आचार्यहं

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। उपाध्यायहं

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।। सर्व साधुहं

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ पडिक्क्मणे ठाऊं? इच्छं

(दाहिना हाथ का पंजा चरवळा या कटासणा पर रखकर सिर झूकाकर नीचे मुताबिक सूत्र बोलना)

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छामि दुक्कडं ।।

(बाद में खडे होकर)

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि ठामि काउस्सगं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ-कप्पो अ-करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणु-व्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स-उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सगं ।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय–निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(फिर अतिचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना, काउस्सग्ग में गिनने की आठ गाथा नीचे मुताबिक है)

नाणम्मि दंसणम्मि अ चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।।1 ।। काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे। वंजण अत्थ–तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।।2 ।। निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूह–थिरीकरणे, वच्छल्ल–पभावणे अट्ठ ।।3 ।। पणिहाण–जोग–जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरिता यारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।।4 ।। बारसविहम्मि वि तवे, सब्भिंतर–बाहिरे कुसल–दिट्ठे। अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ।।5 ।। अणसणमूणोअरिया, वित्ती–संखेवणं रस–च्चाओ। काय–किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ।।6 ।। पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होई ।।7 ।। अणिगूहिअ–बल–वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो। जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरिआयारो ।।8 ।।

(काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजब)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

(फिर तीसरे आवश्यक की "मुहपत्ति' का पडिलेहण करना)
(मुहपत्ति के 50 बोलसे मुहपत्ति को उभडक बैठकर पडिलेहनी, फिर वांदणा नीचे मुजब देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय-संफासं-खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-

दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(चरवला हो तो खडे होकर हाथ जोडकर नीचे मुजब बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं? इच्छं। आलोएमि, जो मे देवसिओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ–कप्पो अ–करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग–पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु–व्वयाणं, तिण्हं गुण–व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्म स्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(दोनों हाथ जोडकर "सातलाख' सूत्र कहे)

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक-वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण-वनस्पतिकाय, बे लाख बेइन्द्रिय, बे लाख तेइन्द्रिय, बे लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच-पञ्चेन्द्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे चौरासी लाख जीवयोनिमांहि मारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय ते सवि हुं मन, वचन , कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं।

(दोनों हाथ जोडकर "अढारपापस्थानक' सूत्र कहे)

पहले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पाँचमें परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमें मान, आठवें माया, नवमें लोभ, दशमें राग, अग्यारमें द्वेष, बारमें कलह, तेरमें अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे रति-अरति, सोलमें पर-परिवाद, सत्तरमे माया-मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व-शल्य। ए अढार पापस्थानकमांहि मारे जीवे जे कोई पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय ते सवि हुं मने, वचने, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं।

(अब हाथ जोडकर "सव्वसवि' सूत्र बोले)

सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(बाद में नीचे बैठकर दाहिना घुटना ऊंचा करके
"वंदित्तु' सूत्र नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ–कप्पो अ–करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग–पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु–व्वयाणं, तिण्हं गुण–व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(वंदितु सूत्र)

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ, इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग–धम्माइआरस्स ।।1।। जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ, सुहुमो अ बायरो

वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2 ।। दुविहे परिग्गहम्मि सावज्जे बहुविहे अ आरंभे, कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।3।। जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4 ।। आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे, अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।5 ।। संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।6 ।। छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा, अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7 ।। पंचण्ह मणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे, सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।8 ।। पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग-पाणाइवाय-विरईओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ।।9 ।। वह-वंध-छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए, पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।10 ।। बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिय-वयण-विरईओ, आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ।।11 ।। सहसा-रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ, बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।12 ।। तइए अणुव्वयम्मि, थूलग-पर-दव्व-हरण-विरईओ, आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ।।13 ।। तेना-हड-प्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ, कूडतुल-कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।14 ।। चउत्थे अणुवयम्मि, निच्चं परदार-गमण-विरईओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ।।15 ।। अपरिग्गहिआ-इत्तर-अणंग-वीवाह-तिव्व-अणुरागे,

चउत्थवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।16।। इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअ मप्पसत्थम्मि, परिमाण –परिच्छेए, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।17।। धण–धन्न खित्त–वत्थू–रुप्प–सुवन्ने अ कुविअ–परिमाणे, दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।18 ।। गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च, वुड्ढी सइ–अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।।19।। मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध–मल्ले अ, उवभोग–परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ।।20।। सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल–दुप्पोलिअं च आहारे, तुच्छोसहि–भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।21।। इंगाली वण साडी, भाडी फोडीसु–वज्जए कम्मं, वाणिज्जं चेव दंत–लक्ख–रस–केस–विस–विसयं ।।22।। एवं खु जंतपील्लण–कम्मं निल्लंछणं च दव–दाणं, सर–दह–तलाय–सोसं, असई–पोसं च वज्जिज्जा ।।23।। सत्थग्गि–मुसल–जंतग–तण–कट्ठे मंत–मूल–भेसज्जे, दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।24।। न्हाणुव्वट्टण–वन्नग–विलेवणे सद्द–रूव–रस–गंधे, वत्थासण–आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।25।। कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि–अहिगरण–भोग–अइरित्ते, दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ।।26।। तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ–विहूणे, सामाइअ वितह–कए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27।। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल–क्खेवे ।। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28।। संथारुच्चारविही–पमाय तह चेव भोयणाभोए, पोसह–

विहि–विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।। सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस–मच्छरे चेव, कालाइक्कम–दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30 ।। सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31 ।। साहूसु संविभागो, न कओ तव–चरण–करण–जुत्तेसु, संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32 ।। इह लोए परलोए, जीविअ–मरणे अ आसंस–पओगे, पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33 ।। काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए, मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34 ।। वंदण–वय–सिक्खा–गारवेसु सन्ना–कसाय–दंडेसु, गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35 ।। सम्म दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि, अप्पो सि होइ बंधो, जेणं न निद्धंधसं कुणइ ।।36 ।। तं पि हु सपडिक्कमणं, सपरिआवं स उत्तर गुणं च, खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सु–सिक्खिओ विज्जो ।।37 ।। जहा विसं कुट्ठ–गयं, मंत–मूल –विसारया, विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38 ।। एवं अट्ठविहं कम्मं, राग–दोस–समज्जिअं, आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सु सावओ ।।39 ।। कय–पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु–सगासे, होइ अइरेग–लहुओ, ओहरिअ–भरुव्व भारवहो ।।40 ।। आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ।।41 ।। आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण–काले, मूलगुण–उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।। तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स

(यहाँ चरवळा हो तो खडे हो जाना चाहिये, अगर चरवळा न हो तो दाहिना पैर जो खडा किया था वो नीचे रख देना, बादमें बाकी रही आठ गाथा बोलना)

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए विरओ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43।। जावंति चेइयाइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44।। जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ, सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ।।45।। चिर-संचिय-पाव-पणासणीइ भव-सय-सहस्स-महणीए, चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ।।46।। मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ, समद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।47।। पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं, असद्दहणे अ तहा, विवरीअ-परूवणाए अ ।।48।। खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49।। एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।। देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् संवच्छरी (पक्खि/चउमासी) मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं

(ऐसा कहकर मुहपत्ति के 50 बोल आता हो तो बोल बोलना चाहिये "मुहपत्ति' पडिलेहनी फिर वांदणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए,

कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओहं सम्बुद्धा खामणेणं अब्भिंतर संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) खामेउं? "इच्छं' खामेमि संवच्छरिअं (पक्खिअं/ चउमासिअं)

(ऐसा बोलकर दाहिना हाथ का पंजा कटासणा या चरवळा के उपर रखकर नीचे का सूत्र बोलना)

संवत्छरी के लिए : बार मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तीन सौ साठ राइ-दियाणं,

(पक्खिअ के लिए : एक पक्खस्स पन्नरस राइदियाणं)

(चउमासी के लिए : चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एकसौ बीस राइदियाणं)

जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि, मज्झविणय परिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।।

(फिर खडे होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् संवच्छरिअं (पक्खिअं/ चउमासिअं) आलोउं? (गुरू कहते है – "आलोएह') इच्छं। आलोएमि जो मे संवच्छरिओ (पक्खिओ, चाउमासियो) अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ–कप्पो अ–करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग–पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु–व्वयाणं, तिण्हं गुण–व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् संवच्छरिअं (पक्खिअं/ चउमासिअं)अतिचार आलोउं? इच्छं

(ऐसा कहकर संवच्छरी अतिचार कहना, वह नीचे मुताबिक है)

गुजराती अतिचार

नाणंमि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि, आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।। 1 ।। ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/ चउमासि) दिवस मांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुओ होय; ते सवि हु, मने, वचने, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं।। 1 ।।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार, काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे; वंजण–अत्थ–तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।। 2 ।। ज्ञान–काल वेलाए भण्यो–गण्यो

नहीं, अकाले भण्यो– विनयहीन, बहुमानहीन, योग–उपधानहीन अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरू कह्यो । देव–गुरू वांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय करतां, भणतां–गणतां, कूडो अक्षर, काने, मात्राए अधिको–ओछो, भण्यो. सूत्र कुडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तदुभय कूडां कह्यां. भणीने विसार्यां. साधुतणे धर्मे–काजो अणुउद्धर्ये, दांडो अणपडिलेहे, वसति अणशोधे, अणपवेसे, असज्झाय, अणोज्झाय–मांहे श्रीदशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो–गण्यो. श्रावकतणे धर्मे थविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाला, प्रमुख सिद्धांत भण्यो गण्यो. कालवेला काजो अणउद्धर्ये पढ्यो, ज्ञानोपगरण–पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकारवाली, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, ओलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो, ओशीसे धर्यो, कने छतां आहार–निहार कीधो. ज्ञानद्रव्य भक्षतां उपेक्षा कीधी. प्रज्ञापराधे, विणाश्यो. विणसतां उवेख्यो, छती शक्तिए सार–संभाल न कीधी. ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष, मत्सर, चिंतव्यो. अवज्ञा–आशातना कीधी. कोई प्रत्ये भणतां गणतां अंतराय कीधो. आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी. कोई–तोतडो, बोबडो देखी हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी. ज्ञानाचार विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 1॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार– निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा; अमूढदिट्ठी अ, उववूह, थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ. ।। 3।। देव, गुरू, धर्मतणे विषे निः शंकपणुं न कीधुं, तथा एकांत निश्चय न कीधो, धर्म संबंधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं, साधु–साध्वीनां मल–मलिन गात्र देखी दुगंछा निपजावी, कुचारित्रीया देखी चारित्रीया उपर अभाव हुओ, मिथ्यात्वीतणी पूजा, प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं । तथा संघमांहे गुणवंत–तणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति, निपजावी, अबहुमान कीधुं। तथा देवद्रव्य, गुरूद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराधे विणाश्यां, विणसतां उवेख्यां, छती शक्तिए सार–संभाल न कीधी, तथा साधर्मिक साथे कलह–कर्मबंध कीधो । अधोती, अष्टपड–मुखकोश–पाखे देवपूजा कीधी, बिंब–प्रत्ये वासकुंपी, धूपधाणुं, कलश–तणो ठबको लाग्यो, बिंब हाथ थकी पाड्युं, ऊसास–निःसास लाग्यो । देहरे, उपाश्रये, मल, श्लेष्मादिक लोह्युं, देहरामांहे–हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधां, पान, सोपारी, निवेदिआं खाधां, ठवणायरिय हाथ थकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्या। जिन–भवने चोराशी आशातना, गुरू–गुरूणी प्रत्ये तेत्रीस आशातना कीधी होय, गुरूवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं। दर्शनाचार–विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।। 2।।

चारित्राचारे आठ अतिचार–पणिहाण–जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं; एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।। 4।। इर्यासमिति ते–अणजोए हिंड्या, भाषा समिति ते –सावद्य वचन बोल्या, एषणा–समिति ते–तृण, डगल, अन्नपाणी, असूझतुं लीधुं, आदान–भंडमत्त निक्खेवणा–समिति ते–आसन, शयन, उपकरण, मातरूं, प्रमुख अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाये मूक्युं–लीधुं, पारिष्ठापनिका–समिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादि, अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाये परठव्युं। मनोगुप्ति–मनमां आर्त्त–रौद्र ध्यान ध्यायां, वचन–गुप्ति–सावद्य वचन बोल्या, कायगुप्ति–शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा । ए अष्ट प्रवचनमाता साधु तणे धर्मे सदैव, अने श्रावकतणे धर्मे सामायिक, पोसह लीधे रूडी पेरे पाल्या नहीं, खंडणा–विराधना हुई । चारित्राचार–विषईयो अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।। 1।। ।। 3।।

विशेषत:– श्रावकतणे धर्मे–श्रीसम्यक्त्वमूल बार व्रत –सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार–संका कंख विगिच्छा ।। शंका :– श्री अरिहंत–तणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयाना चारित्र, श्रीजिनवचनतणो संदेह कीधो । आकांक्षा:– ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादर–देवता, गोत्र–देवता, ग्रह–पूजा, विनायक, हनुमंत:, सुग्रीव, वाली, नाह इत्येवमादिक–देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी,

जूजूआ–देव–दहेराना प्रभाव देखी, रोग–आतंक–कष्ट आव्ये इहलोक परलोकार्थे पूज्या–मान्या । सिद्ध–विनायक, जीराउलाने मान्युं–इच्छ्युं. बौद्ध–सांख्यादिकः–संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीया–तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विना भूलाव्या, व्यामोह्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां । श्राद्ध, संवच्छरी–होली, बलेव, माही–पूनम, अजा–पडवो, प्रेत–बीज, गौरी–त्रीज, विनायक–चोथ, नागपंचमी, झीलणा–छट्ठी, शील –सातमी, ध्रुव–आठमी, नौली–नवमी, अहवा–दशमी, व्रत–अग्यारशी, वच्छ–बारशी, धन–तेरशी, अनन्त–चउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां । नवोदक, याग, भोग, उतारणां कीधां, कराव्यां अनुमोद्यां, पींपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां, घर–बाहिर, क्षेत्रे, खले, कुवे, तलावे, नदीए, द्रहे, वाविए, समुद्रे, कुंडे, पुण्य हेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां, ग्रहण, शनैश्वर, महामासे नवरात्रि नाह्यां, अजाणना थाप्यां – अनेराई व्रत – व्रतोलां कीधां–कराव्यां। वितिगिच्छा–धर्म–संबंधीयां फलतणे विषे संदेह कीधो, जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण भणी न मान्या–न पूज्या, महासती–महात्मानी इहलोक –परलोक संबंधीया भोग–वांछित पूजा कीधी । रोग–आतंक कष्ट आव्ये खीण वचन, भोग मान्या, महात्माना भात–पाणी, मल, शोभा तणी निंदा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुभाव हुवो, मिथ्यात्वी–तणी पूजा–प्रभावना देखी

प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दाक्षिण्य–लगे तेहनो धर्म मान्यो कीधो । श्री सम्यक्त्व–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 1॥

पहेले स्थूल प्राणातिपात–विरमण–व्रते पांच अतिचार– वह–बंध–छवि–च्छेए.॥ द्विपद, चतुष्पद प्रत्ये–रीसवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंधने बांध्यो, अधिक भार घाल्यो, निर्लांछन–कर्म कीधां, चारा–पाणी–तणी वेलाअे सार– संभाल न कीधी, लेहणे–देहणे किणहिप्रत्ये लंघाव्यो, तेणे भूख्ये आपणे जम्या, कन्हे रही मराव्यो, बंदीखाने घलाव्यो । सल्यां धान्य तावडे नाख्यां, दलाव्यां, भरडाव्यां, शोधी न वावर्यां, इंधण, छाणां अणशोध्यां बाल्यां, ते मांहि–साप, विंछी, खजुरा, सरवला, मांकड, जुआ, गिंगोडा, साहता मूआ, दुहव्या, रूडे स्थानके न मूक्या कीडी–मंकोडीनां इंडा विछोह्या, लीख फोडी, उदेही, कीडी, मंकोडी, घीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगिया, देडका, अलसिया, ईयल, कुंता, डांस, मसा, बगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणट्ठा. माला हलावतां–चलावतां, पंखी, चकला, काग–तणां इंडां फोड्यां, अनेरा एकेन्द्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, दुहव्या, कांई हलावतां–चलावतां–पाणी छांटतां, अनेरा कांई काम–काज करतां निर्ध्वंसपणुं कीधुं, जीव–रक्षा रूडी न कीधी, संखारो सूकव्यो, रूडुं गलणुं न कीधुं, अणगल पाणी वावर्युं, रूडी जयणा न कीधी, अणगल पाणीए– झील्या, लुगडां धोयां, खाटला तावडे नांख्या, झाटक्या,

जीवाकुलभूमि लींपी, वाशी गार राखी, दलणे, खांडणे, लींपणे रूडी जयणा न कीधी, आठम, चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी । पहेले स्थूल–प्राणातिपात–विरमण व्रत–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।। 1।।

बीजे स्थूल–मृषावाद–विरमण व्रते पांच अतिचार– सहसा–रहस्स–दारे ।। सहसात्कारे–कुणहि प्रत्ये अजुगतुं आल–अभ्याख्यान दीधुं, स्वदारा मंत्रभेद कीधो, अनेरा कुणहनो मंत्र, आलोच, मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अनर्थ पाडवा कुडी बुद्धि दीधी, कुडो लेख लख्यो, कुडी साख भरी, थापण–मोसो कीधो । कन्या, गौ, ढोर, भूमि, संबंधी लेहणे–देहणे, व्यवसाये, वाद–वढवाड करतां मोटकुं जुठुं बोल्या, हाथ पग तणी गाल दीधी, कडकडा मोड्या, मर्म वचन बोल्या। बीजे स्थूल–मृषावाद–विरमण–व्रत–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।। 2।।

त्रीजे स्थूल–अदत्तादान–विरमण व्रते पांच अतिचार– तेनाऽऽहड–प्पओगे ।। घर, बाहिर, क्षेत्रे, खले, पराई वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी, चोराई वस्तु वहोरी, चोर, धाड प्रत्ये संकेत कीधो, तेहने संबल दीधुं, तेहनी वस्तु लीधी, विरूद्ध– राज्यातिक्रम कीधो, नवा–पुराणा, सरस–विरस, सजीव–निर्जीव, वस्तुना भेल–संभेल कीधां, कुडे–काटले,

तोले, माने, मापे, वहोर्या, दाण–चोरी कीधी, कुणहने लेखे वरांस्यो, साटे लांच लीधी, कूडो करहो काढ्यो, विश्वासघात कीधो, परवंचना कीधी, पासंग कुडा कीधां, दांडी चडावी, लहके–त्रहके, कुडां काटलां, मान, मापां कीधां। माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र–वंची कुणहिने दीधुं, जुदी गांठ कीधी, थापण ओलवी, कुणहिने लेखे–पलेखे भूलाव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी। त्रीजे स्थूल–अदत्तादान–विरमण व्रत–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।।3।।

चोथे स्वदारा–संतोष–परस्त्रीगमन–विरमण–व्रते पांच अतिचार–अपरिग्गहिया–इत्तर ।। अपरिगृहिता–गमन, इत्वर–परिगृहीतागमन–कीधुं, विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वदारा–शोक तणे विषे दृष्टि विपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्या, आठम, चउदश, अनेरी पर्वतिथिना नियम लई भांग्या, घर घरणां कीधां–कराव्यां, वर–वहु वखाण्यां, कुविकल्प चिंतव्यो, अनंग–क्रीडा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां, पराया विवाह जोडया, ढींगला–ढींगली परणाव्या, काम–भोग तणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो । अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे–स्वप्नान्तरे हुआ, कुस्वप्न लाध्यां, नट, विट, स्त्रीशुं हांसुं कीधुं । चोथे स्वदारा–संतोष–परस्त्रीगमन विरमण–व्रत–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।।4।।

पांचमे परिग्रह–परिमाण–व्रते–पांच अतिचार–धण–धन्न–खित्त–वत्थू.।। धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद, ए नवविध परिग्रह–तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छा लगे संक्षेप न कीधो, माता, पिता, पुत्र, स्त्री–तणे लेखे कीधो, परिग्रह, परिमाण लीधुं नहीं, लईने पढिउं नहीं, पढवुं विसार्युं, अ–लीधुं मेल्युं, नियम विसार्या । पांचमे परिग्रह परिमाण व्रत विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस मांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।। 5।।

छट्ठे–दिक् परिमाण व्रते पांच अतिचार–गमणस्स उ परिमाणे.।। ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्–दिशिए जावा आववा–तणा–नियम लई भांग्या, अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी–पाछी मोकली, वहाण–व्यवसाय कीधो, वर्षाकाले गामतरूं कीधुं, भूमिका एक गमा संक्षेपी, बीजी गमा वधारी । छट्ठे दिक् –परिमाण–व्रत–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।।6।।

सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रते–भोजन आश्रयी पांच अतिचार, अने कर्म–हुंती–पंदर अतिचार एवं–वीश अतिचार। –सचित्ते पडिबद्धे ।। सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं, अपक्वाहार, दुपक्वाहार, तुच्छौषधि–तणुं भक्षण कीधुं, ओला, उंबी, पोंक, पापडी खाधां ।

सचित्त–दव्व–विगई–वाणह–तंबोल–वत्थ–कुसुमेसु ।
वाहण–सयण–विलेवण–बंभ–दिसि–ण्हाण–भत्तेसु।।1।।

ए चौद नियम दिनगत, रात्रिगत, लीधां नहीं, लइने भांग्या, बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आदु, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालु कचूरो, सूरण, कुंणी–आंबली, गलो वाघरडां खाधां, वाशी–कठोल, पोली रोटली, त्रण दिवसनुं ओदन लीधुं, मधु, महुडां, माखण, माटी, वेंगण, पीऊं, पींचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टींबरु, गुंदा, महोर, बोल–अथाणुं, आंबलबोर, काचुं–मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधां, लगभग वेलाए वाळु कीधुं, दिवस विण उगे शिराव्यां. तथा कर्मत: पन्नर कर्मादान–इंगाल–कम्मे, वण–कम्मे, साडी कम्मे, भाडी–कम्मे, फोडी–कम्मे, ए पांच कर्म, दंत–वाणिज्जे, लक्ख–वाणिज्जे, रस–वाणिज्जे, केस–वाणिज्जे, विस–वाणिज्जे, ए पांच वाणिज्य, जंतपिल्लण–कम्मे, निल्लंछण–कम्मे, दवग्गि–दावणया, सर–दह–तलाय–सोसणया, असई–पोसणया, ए पांच सामान्य. ए पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला कराव्या, इंट, निभाडा पकाव्या, धाणी, चणा, पकवान करी वेच्यां, वाशी माखण तवाव्या, तिल वहोर्या, फागण मास उपरांत राख्या, दलीदो कीधो, अंगीठा कराव्या, श्वान, बिलाडा, सूडा, सालहि पोष्या. अनेरां जे कांई बहु–सावद्य, खर, कर्मादिक समाचर्या, वाशी गार राखी, लींपणे, गुंपणे, महारंभ कीधो, अणशोध्या चूला संधूक्या, घी, तेल, गोळ,

छाश–तणां भाजन उघाडां मूक्यां, तेमांहि मांखी, कुंति, उंदर, गीरोली पडी, कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी । सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत विषिईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 7॥

आठमे अनर्थदंड विरमरणव्रते पांच अतिचार– कंदप्पे कुक्कुईए ॥ कंदर्प्प–लगे–विट–चेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां, पुरुष–स्त्रीनां हावभाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराई तांत कीधी तथा पैशुन्यपणुं कीधुं, आर्त–रौद्र ध्यान ध्यायां । खांडा, कटार, कोश, कुहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घरंटी, निसाहे, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण्य लगे माग्यां आप्यां, पापोपदेश कीधो, अष्टमी चतुर्दशीए खांडवा दलवा तणा नियम भांग्या, मुखरपणा लगे असंबद्ध वाक्य बोल्या, प्रमादाचरण सेव्यां, अंघोले, नाहणे, दातणे, पग–धोअणे, खेल, पाणी, तेल, छांटया, झीलणे झील्या, जुगटे रम्या, हिंचोळे हिंच्या, नाटक–प्रेक्षणक जोयां, कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां कर्कश वचन बोल्या, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा, करकडा मोड्या, मच्छर धर्यो, संभेडा लगाडया, श्राप दिधा । भेंसा, सांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादि झुझार्या, झुझता जोया खादि लगे अदेखाई चिंतवी, माटी, मीठुं, कण, कपासिया, काजविण चांप्या, ते उपर बेठा, आली वनस्पति खुंदी सूई, शस्त्रादिक निपजाव्या, घणी निद्रा

कीधी, राग–द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्युहानि वांछी । आठमे अनर्थदंड विरमण व्रत विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस मांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।। 8।।

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार– तिविहे दुप्पणिहाणे ।। सामायिक लीधे– मन आहट्ट–दोहट्ट, चिंतव्युं, सावद्य वचन बोल्या, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाए सामायिक न लीधुं, सामायिक लई–उघाडे मुखे बोल्या, उंघ आवी, वात, विकथा, घरतणी चिंता कीधी, वीज, दीवातणी, उज्जेहि हुई, कण, कपाशीया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी, अरणेट्टो, पाषाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल, हरियक्काय, बीयक्काय इत्यादि आभडया, स्त्री, तिर्यंच–तणा निरंतर परंपर, संघट्ट हुआ मुहपत्तीओ संघट्टी सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवु विसार्युं, नवमे सामायिक व्रत विषईओ अनेरो जे कोई संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस मांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कड।। 9।।

दशमे देशावगाशिक व्रते पांच अतिचार आणवणे–पेसवणे ।। आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाई, रुवाणुवाई बहियापुग्गल–पक्खेवे, नियमित भूमिकामांहि बाहिरथी कांई अणाव्युं, आपण कन्हेथी बाहेर कांई मोकल्युं, अथवा–रुप देखाडी, कांकरो नांखी, साद करी, आपणपणुं छतुं जणाव्युं । दशमे देशावगाशिक व्रत विषईओ

अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस मांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 10॥

अग्यारमे पौषधोपवास व्रते पांच अतिचार–संथारुच्चारविही। अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, सिज्जा–संथारए, अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, उच्चार–पासवण भूमि–पोसह लीधे संथारातणी भूमि न पउंजी। बाहिरलां–लहुडां, वडां, स्थंडिल दिवसे शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपुंज्युं हलाव्युं, अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाए परठव्युं, परठवतां "अणुजाणह जस्सुग्गहो" न कह्यो, परठव्या पूंठे वार त्रण "वोसिरे वोसिरे" न कह्यो। पोसहशालामांहि पेसतां–"निसीहि" निसरतां–"आवस्सहि" वार त्रण भणी नहीं। पुढवी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव, हुआ। संथारापोरिसीतणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसीमांहे ऊंघ्या, अविधे संथारो पाथर्यो, पारणादिकतणी चिंता कीधी, काल वेलाए देव न वांद्यां, पडिक्कमणुं न कीधुं, पोसह असूरो लीधो सवेरो पार्यो, पर्वतिथिए पोसह लीधो नहीं। अग्यारमे पौषधोपवास व्रत विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 11॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रते पांच अतिचार–सच्चित्ते निक्खिवणे॥ सचित्त वस्तु हेठ, उपर छतां महात्मा, महासती, प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं, देवानी बुद्धे–असूझतुं

फेडी सूझतुं कीधुं, परायुं फेडी आपणुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धे–सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेला टली रह्या, असुर करी महात्मा तेड्या, मच्छर धरी दान दीधुं, गुणवंत आव्ये भक्ति न साचवी, छते शक्ते साहम्मि वच्छल्ल न कीधुं, अनेरां धर्म–क्षेत्र सीदाता छती शक्तिए उद्धर्या नहीं, दीन, क्षीण प्रत्ये अनुकंपा–दान न दीधुं । बारमे अतिथि–संविभागव्रत विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 12॥

संलेषणातणा पांच अतिचार– इह–लोए पर–लोए ॥ इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगा संसप्पओगे । इहलोके धर्मना प्रभाव लगे–राज, ऋद्धि, सुख सौभाग्य, परिवार, वांछया, परलोके– देव, देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्तीतणी पदवी वांछी, सुख आव्ये जीवितव्य वांछयुं, दुःख आव्ये मरण वांछयुं, कामभोगतणी वांछा कीधी । संलेषणा विषईओ, अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 13॥

तपाचार बारभेद :– छ बाह्य, छ अभ्यन्तर । अणसण–मूणोअरिया ॥ अणसण भणी उपवास विशेष–पर्वतिथे छती शक्तिए कीधो नहीं, ऊणोदरी व्रत ते–कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नहीं, वृत्तिसंक्षेप ते–द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो

संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते–विगयत्याग न कीधो, कायकलेश, लोचादिक कष्ट सहन कर्यां नहीं, संलीनता, अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं, पच्चक्खाण भांग्यां, पाटलो डगडगतो फेड्यो नहीं, गंठसी, पोरिसी, साड्ढपोरिसी, पुरिमड्ढ , एकासणुं, बेआसणुं, नीवी, आंबिल, प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसतां नवकार न भण्यो, उठतां पच्चक्खाण करवुं विसार्युं, गंठसीउ भांग्युं, नीवि, आंबिल, उपवासादि तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुओ । बाह्यतप–विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस मांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 14॥

अभ्यन्तर तप– पायच्छित्तं विणओ ॥ मनशुद्धे–गुरू कन्हे आलोअण लीधी नहीं, गुरूदत्त प्रायश्चित्त–तप लेखा –शुद्धे पहुंचाडयो नहीं, देव, गुरु, संघ, साहम्मिअ प्रत्ये विनय साचव्यो नहीं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वेयावच्च न कीधुं. वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा,–लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्मक्षयनिमित्ते लोगस्स दश–वीशनो काउस्सग्ग न कीधो। अभ्यंतर तप विषईओ अनेरो जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 15॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार– अणिगूहिअ–बलवीरिओ ॥ पढवे–गुणवे, विनय–वैयावच्च, देव–पूजा, सामायिक,

पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, कायातणुं छतुं बल, छतुं वीर्य गोपव्युं। रूडां पंचांग खमासमण न दीधां, वांदणातणा आवर्त्त–विधि साचव्या नहीं, अन्यचित्त, निरादरपणे बेठा, उतावळुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं । वीर्याचार विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मन,वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 16॥

नाणाइ अट्ठ पइवय–सम्म संलेहण पण, पन्नर कम्मेसु । बारस तप, वीरिअ–तिगं, चउव्वीस–सयं अइआरा॥ पडिसिद्धाणं करणे प्रतिषेध–अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजभक्षण, महारंभ, परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नहीं, आपणी कुम तिलगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी । तथा–प्राणतिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति–अरति, पर–परिवाद, माया–मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय । दिनकृत्य–प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च, न कीधां, अनेरूं जे कांइ वीतरागनी आज्ञा–विरूद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय । ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर जाणतां, अजाणतां हुओ होय ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ 17॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री सम्यक्त्व मूल–बार व्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहि अनेरो जे कोई अतिचार

संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर जाणतां, अजाणतां हुओ होय ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं

सव्वस्स वि संवच्छरिअ (पक्खिअ/चउमासिअ), दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

इच्छकारी भगवन्! पसाय करी संवच्छरी (पक्खि/चउमासी) तप प्रसाद करशोजी।

संवत्सरी के लिए : अट्ठमभत्तं तीन उपवास, छ आयंबिल, नव नीवि, बारह एकासणा, चोवीस बियासणा, छ हजार सज्झाय, अथवा तो 60 बांधी (पक्की) माला यथाशक्ति तप करी पहोंचाडजो।

(पक्खि के लिए : चउत्थेणं एक उपवास, दो आयंबिल, तीन नीवि, चार एकासणा, आठ बियासणा, दो हजार सज्झाय, यथाशक्ति तप करी पहोंचाडजो।)

(चउमासी के लिए : छट्ठेणं दो उपवास, चार आयंबिल, छ नीवि, आठ एकासणा, सोलह बिआसणा, चार हजार सज्झाय, यथाशक्ति तप करी पहोंचाडजो।)

(तप किया हो तो "पइट्ठिओ" कहें और करने का हो तो "तहत्ति" कहे और न करने का हो तो मात्र मौन रहना)

(फिर नीचे मुताबिक वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व

मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओहं पत्तेअ खामणेणं अब्भिंतर–संवच्छरिअं (पक्खिअं/चाउमासिअं) खामेउं ? (गुरु हो तो बोलेंगे–खामेह) इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं (पक्खिअं/चाउमासिअं)!

(फिर दाहिना हाथ का पंजा चरवळा या कटासणा पे स्थापन करके बाकी का पाठ पुरा करे)

संवच्छरी के लिए : बार मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तीन सौ साठ राइ–दियाणं,

(पक्खि के लिए : एक पक्खस्स पन्नरस राइदियाणं)

(चउमासी के लिए : चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एकसौ बीस राइदियाणं)

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए। जं किंचि मज्झ विणय–परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

(फिर सकल संघ को आपस में और 84 लाख जीवयोनी के जीवो से मिच्छामि दुक्कडं कहना उसके बाद फिर वांदणा देना जो नीचे मुताबिक)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व

मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

देवसिअ आलोइअ, पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संवच्छरिअं (पक्खिअं/चाउमासिअं) पडिक्कमामि? सम्मं पडिक्कमामि "इच्छं"।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे संवच्छरिओ (पक्खिओ/चउमासिओ)अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ-कप्पो अ-करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संवच्छरी (पक्खि/चउमासि) सूत्र कढुं? "इच्छं"

(फिर नवकार तीन बार गिनना, फिर साधु हो तो वह संवच्छरी सूत्र कहे और न होवे तो श्रावक वंदित्तु सूत्र कहे वह नीचे मुताबिक है)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।। (तीन बार गिने)

(वंदितु सूत्र)

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ, इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग–धम्माइआरस्स ।।1 ।। जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ, सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ।।2 ।। दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे, कारावणे अ करणे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।3।। जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।4 ।। आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे, अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।5 ।। संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।6 ।। छक्काय–समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा, अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ।।7 ।। पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे, सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।8 ।। पढमे अणुव्वयम्मी, थूलग–पाणाइवाय–विरईओ, आयरिय

मप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।9 ।। वह–वंध–छविच्छेए, अइभारे भत्त–पाण–वुच्छेए, पढम–वयस्स–इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।10 ।। बीए अणुव्वयम्मी, परिथूलग–अलिय–वयण–विरईओ, आयरिय–मप्पसत्थे,इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।11 ।। सहसा–रहस्स–दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ, बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।12 ।। तइए अणुव्वयम्मी, थूलग–पर–दव्व–हरण–विरईओ, आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।13 ।। तेना–हड–प्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध–गमणे अ, कूडतुल–कूडमाणे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।14 ।। चउत्थे अणुवयम्मी, निच्चं परदार–गमण–विरईओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।15 ।। अपरिग्गहिआ–इत्तर–अणंग–विवाह–तिव्व–अणुरागे, चउत्थवयस्स इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।16 ।। इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअ मप्पसत्थम्मि, परिमाण–परिच्छेए, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।17 ।। धण–धन्न खित्त–वत्थू–रुप्प–सुवन्ने अ कुविअ–परिमाणे, दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।18 ।। गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च, वुड्ढी सइ–अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।।19 ।। मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध–मल्ले अ, उवभोग–परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ।।20 ।।

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल-दुप्पोलिअं च आहारे, तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।21 ।। इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं, वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ।।22 ।। एवं खु जंतपील्लण-कम्मं निल्लंछणं च दव-दाणं, सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा ।।23 ।। सत्थग्गि-मुसल-जंतग-तण-कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे, दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।24 ।। न्हाणुव्वट्टण-वन्नग-विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे, वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।25 ।। कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोग-अइरित्ते, दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ।।26 ।। तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ-विहूणे, सामाइअ वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27 ।। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल-क्खेवे ।। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28 ।। संथारुच्चारविही-पमाय तह चेव भोयणाभोए, पोसह-विहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।। सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव, कालाइक्कम-दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30 ।। सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31 ।। साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु, संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32 ।। इह लोए

परलोए, जीविअ–मरणे अ आसंस–पओगे, पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33 ।। काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए, मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34 ।। वंदण–वय–सिक्खा–गारवेसु सन्ना–कसाय–दंडेसु, गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35 ।। सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि, अप्पो सि होइ बंधो, जेणं न निद्धंधसं कुणइ ।।36 ।। तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं स उत्तर गुणं च, खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सु–सिक्खिओ विज्जो ।।37 ।। जहा विसं कुट्ठ–गयं, मंत–मूल–विसारया, विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38 ।। एवं अट्ठविहं कम्मं, राग–दोस–समज्जिअं, आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सु सावओ ।।39 ।। कय–पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु–सगासे, होइ अइरेग–लहुओ, ओहरिअ–भरुव्व भारवहो ।।40 ।। आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ।।41 ।। आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण–काले, मूलगुण–उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।। तस्स धम्मस केवलि–पन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए विरओ मि विराहणाए , तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43 ।। जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44 ।। जावंत के वि साहू, भरहेरवय–महाविदेहे अ, सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ।।45 ।। चिर–संचिय–पाव–पणासणीइ भव–सय–सहस्स–महणीए, चउवीस–जिण–

विणिग्गय–कहाइ वोलंतु मे दिअहा ।।46 ।। मम मंगलम रिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ, समद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।47 ।। पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणम करणे अ पडिक्कमणं, असद्दहणे अ तहा, विवरीअ–परूवणाए अ ।।48 ।। खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49 ।। एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50 ।।

(फिर श्रुत देवता की नीचे मुताबिक स्तुति कहनी)(सिर्फ पुरुषो के लिए)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीय–कम्म–संघायं ।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअ–सायरे भत्ती ।।1 ।।

(फिर नीचे बैठकर दाहिना घुटना खडा करके नीचे मुताबिक कहना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे संवच्छरिओ (पक्खिओ/चउमासिओ) अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ–कप्पो अ–करणिज्जो, दुज्झाओ

दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्म स्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(वंदितु सूत्र)

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ, इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ।।1।। जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ, सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि।।2।। दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे, कारावणे अ करणे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं।।3।। जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि।।4।। आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे, अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं।।5।। संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं।।6।। छक्काय-समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा, अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे।।7।। पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे, सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं।।8।। पढमे अणुव्वयम्मी, थूलग-पाणाइवाय-विरईओ, आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं।।9।। वह-वंध-

छविच्छेए, अइभारे भत्त–पाण–वुच्छेए, पढम–वयस्स–इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।10 ।। बीए अणुव्वयम्मी, परिथूलग–अलिय–वयण–विरईओ, आयरिय–मप्पसत्थे,इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।11 ।। सहसा–रहस्स–दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ, बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।12 ।। तइए अणुव्वयम्मी, थूलग–पर–दव्व–हरण–विरईओ, आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।13 ।। तेना–हड–प्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध–गमणे अ, कूडतुल–कूडमाणे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।14 ।। चउत्थे अणुवयम्मी, निच्चं परदार–गमण–विरईओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।15 ।। अपरिग्गहिआ–इत्तर–अणंग–विवाह–तिव्व–अणुरागे, चउत्थवयस्स इआरे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।16 ।। इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि आयरिअ मप्पसत्थम्मि, परिमाण–परिच्छेए, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ।।17 ।। धण–धन्न खित्त–वत्थू–रुप्प–सुवन्ने अ कुविअ–परिमाणे, दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।18 ।। गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च, वुड्ढी सइ–अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।।19 ।। मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध–मल्ले अ, उवभोग–परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ।।20 ।। सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल–दुप्पोलिअं च आहारे,

तुच्छोसहि–भक्खणया, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।21 ।। इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं, वाणिज्जं चेव दंत–लक्ख–रस–केस–विस–विसयं ।।22 ।। एवं खु जंतपील्लण–कम्मं निल्लंछणं च दव–दाणं, सर–दह–तलाय–सोसं, असई–पोसं च वज्जिज्जा ।।23 ।। सत्थग्गि–मुसल–जंतग–तण–कट्ठे मंत–मूल–भेसज्जे, दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।24 ।। न्हाणुव्वट्टण–वन्नग–विलेवणे सद्द–रूव–रस–गंधे, वत्थासण–आभरणे, पडिक्कमे संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) सव्वं ।।25 ।। कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि–अहिगरण–भोग–अइरित्ते, दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ।।26 ।। तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ–विहूणे, सामाइअ वितह–कए, पढमे सिक्खावए निंदे ।।27 ।। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल–क्खेवे ।। देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ।।28 ।। संथारुच्चारविही–पमाय तह चेव भोयणाभोए, पोसह–विहि–विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ।।29।। सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस–मच्छरे चेव, कालाइक्कम–दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ।।30 ।। सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।।31 ।। साहूसु संविभागो, न कओ तव–चरण–करण–जुत्तेसु, संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।32 ।। इह लोए परलोए, जीविअ–मरणे अ आसंस–पओगे, पंचविहो

अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।33 ।। काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए, मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ।।34 ।। वंदण–वय–सिक्खा–गारवेसु सन्ना–कसाय–दंडेसु, गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ।।35 ।। सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि, अप्पो सि होइ बंधो, जेणं न निद्धंधसं कुणइ ।।36 ।। तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं स उत्तर गुणं च, खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सु–सिक्खिओ विज्जो ।।37 ।। जहा विसं कुट्ठ–गयं, मंत–मूल–विसारया, विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ।।38 ।। एवं अट्ठविहं कम्मं, राग–दोस–समज्जिअं, आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सु सावओ ।।39 ।। कय–पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु–सगासे, होइ अइरेग–लहुओ, ओहरिअ–भरुव्व भारवहो ।।40 ।। आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ।।41 ।। आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण–काले, मूलगुण–उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ।।42।। तस्स धम्मस केवलि–पन्नत्तस्स

(यहाँ चरवळा हो तो खडे हो जाना चाहिये, अगर चरवळा न हो तो दाहिना पैर जो खडा किया था वो नीचे रख देना, बादमें बाकी रही आठ गाथा बोलना)

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए विरओ मि विराहणाए , तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।43 ।। जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।44 ।। जावंत के वि साहू,

भरहेरवय–महाविदेहे अ, सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ।।45 ।। चिर–संचिय–पाव–पणासणीइ भव–सय–सहस्स–महणीए, चउवीस–जिण–विणिग्गय–कहाइ वोलंतु मे दिअहा ।।46 ।। मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ, समद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।47 ।। पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं, असद्दहणे अ तहा, विवरीअ–परूवणाए अ ।।48 ।। खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।49 ।। एवम हं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।50 ।।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे संवच्छरिओ (पक्खिओ/चउमासिओ) अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ–कप्पो अ–करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग–पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु–व्वयाणं, तिण्हं गुण–व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

संवच्छरी के लिए (फिर चालीस लोगस्स का "चंदेसु निम्मलयरा' तक का काउस्सग्ग और ऊपर एक नवकार का काउस्सग्ग करना लोगस्स नहीं आवे तो 160 (एक सौ साठ) नवकार का काउस्सग्ग करना)

पक्खि के लिए (फिर बारह लोगस्स का "चंदेसु निम्मलयरा' तक का काउस्सग्ग करना लोगस्स नहीं आवे तो 48 (अडतालिस) नवकार का काउस्सग्ग करना)

चउमासी के लिए (फिर बीस लोगस्स का "चंदेसु निम्मलयरा' तक का काउस्सग्ग करना लोगस्स नहीं आवे तो 80 (अस्सी) नवकार का काउस्सग्ग करना)

(काउस्सग्ग पारकर प्रकट लोगस्स कहना वह नीचे मुताबिक है)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं

च चन्दप्पहं वंदे ।।2 ।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3 ।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4 ।। एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5 ।। कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ।।6 ।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

(फिर मुहपत्ति पडिलेहण करना और दो वांदणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय-संफासं-खमणिज्जो, भे! किलामो ? अप्प किलंताणं बहु-सुभेण भे ! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो।संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं,निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! संवच्छरो वइक्कंतो(पक्खो वइक्कंतो/ चउमासिअ वइक्कंता) ? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमासिअं) वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं संवच्छरिआए (पक्खिआए, चउमासिआए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमि च्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओहं समत्त खामणेणं अब्भिंतर–संवच्छरिअं (पक्खिअं/ चाउमसिअं) खामेउं ? (गुरु हो तो कहेंगे–खामेह) इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं (पक्खिअं/चउमसिअं)।

(फिर दाहिना हाथ का पंजा चरवळा या कटासणा पर रखकर बाकी का पाठ बोले)

संवच्छरी के लिए : बार मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तीन सौ साठ राइ–दियाणं,

(पक्खिअ के लिए : एक पक्खस्स पन्नरस राइदियाणं)

(चउमासी के लिए : चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एकसौ बीस राइदियाणं)

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वैयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए। जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संवच्छरी (पक्खि/चाउमासी)खामणा खामुं? इच्छं

(ऐसा कहके प्रत्येक खामणां के पहले एक खमासमण देकर दाहिना हाथ चरवला या आसन पर रखकर सिर झुकाकर और अगर साधु भगवंत न होवे तो नीचे मुताबिक चार खामणां देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छामि खमासमणो।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।। सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।1।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छामि खमासमणो।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।। सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।2।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छामि खमासमणो।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।3।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छामि खमासमणो।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।। सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।4।।

इच्छामों अणुसट्ठिं

(फिर दो बार वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय-संफासं-खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए,

कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय-संफासं-खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं ? (गुरु हो तो कहेंगे-खामेह) इच्छं, खामेमि देवसिअं !

(फिर चरवले के उपर या आसन पर दाहिना हाथ रखकर)

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए। जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

(फिर दो बार वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणि ज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मि च्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय–संफासं–खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु–सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण–दुक्कडाए वय–दुक्कडाए काय–दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(अब मस्तक पर दो हाथ जोडकर नीचे मुताबिक बोलना)

आयरिय–उवज्झाए, सीसे साहम्मिए–कुल–गणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि।।1।। सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करीअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि।।2।। सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ घम्म–निहिअ–निअ–चित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि।।3।।

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अ–कप्पो अ–करणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग–पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु–व्वयाणं, तिण्हं गुण–व्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–

मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(दो लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' तक न आता हो तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करके फिर "नमो अरिहंताणं' कहकर सम्पूर्ण लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

सव्वलोए अरिहंत–चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण–वत्तिआए पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' तक न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करके "नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारके पुक्खरवरदीवड्डे सूत्र नीचे मुताबिक कहना)

पुक्खरवर–दीवड्ढे, धायईसंडे य जंबुदीवे अ। भरहेरवय–विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ।।1 ।। तम–तिमिर–पडल–विद्धंसणस्स सुरगण–नरिंद–महियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ–मोहजालस्स ।।2 ।। जाइ–जरा–मरण –सोग–पणासणस्स, कल्लाण–पुक्खल–विसाल–सुहावहस्स। को देव–दाणव–नरिंद–गणच्चियस्स, धम्म स्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।3 ।। सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं–नाग–सुवन्न–किन्नर–गण–सब्भूअ–भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क–मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।4 ।। सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण–वत्तियाए।। पूअण–वत्तिआए सक्कार–वत्तिआए सम्माण–वत्तिआए बोहिलाभ–वत्तिआए निरुवसग्ग–वत्तिआए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा। तक न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करके "नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारके "सिद्धाणं बुद्धाणं' सूत्र नीचे मुताबिक कहना)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार–गयाणं परंपर–गयाणं। लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्व–सिद्धाणं ।।1 ।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसन्ति। तं देव देव–महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।2 ।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर–वसहस्स वद्धमाणस्स। संसार–सागराओ, तारेइं नरं व नारिं वा ।।3 ।। उज्जिंतसेल–सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ–जस्स। तं धम्म–चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं, नमंसामि ।।4 ।। चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ–निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।5 ।।

भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर "नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽ उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः' कहके स्तुति बोलना वह नीचे मुताबिक है)

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्, विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम।

खित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके स्तुति बोलना)

"नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽ उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः'

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया,
सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी।।1।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व–साहूणं, एसो पंच–नमुक्कारो, सव्व–पाव–प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहनी और दो वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय-संफासं-खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणि ज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, "आवस्सिआए' पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

(दूसरी वांदणा)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहो कायं, काय-संफासं-खमणिज्जो, भे! किलामो? अप्प किलंताणं बहु-सुभेण भे! दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी

(इस प्रकार छः आवश्यक याद करें)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(फिर योग मुद्रा (बायां घुटना उपर रखना)

(फिर पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्धमानाय' की स्तुति कहे)

नमोऽस्तुवर्द्धमानाय,स्पर्द्धमानायकर्मणा।तज्जयावाप्त–मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ।।1 ।। येषां विकचारविन्द–राज्या, जयायःक्रम–कमलावलिं दधत्या। सद्दशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ।।2 ।। कषाय–तापार्दित–जन्तु–निर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्र–मासोद्भव–वृष्टि–सन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ।।3 ।।

(स्त्रियां "संसारदावा' की तीन गाथा कहे जो नीचे मुताबिक है)

संसार–दावानल–दाह–नीरं, संमोह–धूली हरणे–समीरं। माया–रसा–दारण–सार–सीरं, नमामि वीरं गिरि–सार–धीरं ।।1 ।। भावा–वनाम–सुर–दानव–मानवेन–चूला–विलोल–कमला–वलि–मालितानि। संपूरिता–भिनत–लोक–समीहितानि, कामं नमामि जिन–राज–पदानि तानि ।।2 ।। बोधागाधं सु–पद–पदवी–नीर–पूराभिरामं, जीवा–हिंसा–विरल–लहरी–संगमा–गाह–देहं। चूला–वेलं गुरुगम–मणी–संकुलं दूर–पारं, सारं वीरागम–जलनिधिं सादरं साधु सेवे ।।3 ।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1 ।। आइगराणं तित्थयराणं सयं-संबुद्धाणं ।।2 ।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वरपुंडरीआणं, पुरिस-वरगंधहत्थीणं ।।3 ।। लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ।।4 ।।अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ।।5 ।। धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।6 ।। अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ।।7 ।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8 ।। सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं-सिव-मयल-मरुय-मणंत मक्खयमव्वाबाहमपुणरा वित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ।।9 ।। जे अ अईआ, सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10 ।।

(ऐसा कहकर श्री अजितशांतिका स्तवन बोलना)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

अजिअं जिय-सव्व-भअं, संतिं च पसंत-सव्व-गय-पावं, जयगुरुसंति - गुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ।।1 ।। गाहा

ववगय-मंगुल-भावे, तेहं विउल-तव-निम्मल सहावे, निरुवम-महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ।।2 ।। गाहा

सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतीणं । सया अजिअ-संतीणं, नमो अजिअ-संतीणं ।।3 ।। सिलोगो

अजियजिण सुह–प्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम! नाम–कित्तणं। तह य धिइ–मइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम! संति! कित्तणं ।।4 ।। मागहिया

किरिआ – विहि – संचिअ – कम्म – किलेस – विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि–सिद्धिगयं। अजिअस्स य संति महामुणिणो वि य संतिकरं, सययं मम निव्वुइ–कारणयं च नमंसणयं ।।5 ।। आलिगणयं

पुरिसा ! जइ दुक्ख–वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख–कारणं, अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ।।6 ।। मागहिआ

अरइ–रइ–तिमिर–विरहिअमुवरय–जर–मरणं, सुर–असुर गरुल– भुयगवइ–पयय–पणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनय–नय–निउणमभयकरं, सरणमुवसरिय भुवि–दिविज –महिअं सययमुवणमे ।।7 ।। संगययं

तं च जिणुत्तम–मुत्तम–नित्तम–सत्त–धरं, अज्जव–म द्दव–खंति–विमुत्ति–समाहि–निहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तम –तित्थयरं, संतिमुणि! मम संति–समाहि–वरं दिसउ ।।8 ।। सोवाणयं

सावत्थि – पुव्व – पत्थिवं च वरहत्थि – मत्थय पसत्थ–वित्थिन्न–संथिअं थिर–सरिच्छ–वच्छं, मयगल–लीलायमाण–वरगंधहत्थि–पत्थाण–पत्थियं संथ वारिहं। हत्थि हत्थ–बाहु धन्त–कणग–रुअग–निरुवहय–पिंजरं पवर लक्खणोवचिय–सोम–चारु–रूवं, सुइ–सुह–म णाभिराम–परम–रमणिज्ज–वर–देव–दुंदुहि–निनाय–म हुरयर–सुहगिरं ।।9 ।। वेड्ढओ

अजिअं जिआरिगणं, जिअ–सव्व–भयं भवोह–रिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ।।10 ।। रासालुद्धओ

कुरु–जणवय–हत्थिणाउर–नरीसरो पढमं, तओ महा चक्कवट्टि–भोए महप्पभावो, जो बावत्तरि–पुरवर–सहस्स–वर–नगर–निगम–जणवय–वई–बत्तीसा–रायवर–सहस्साणुयाय–मग्गो ,चउदस–वररयण–नव–महानिहि–चउसट्ठि सहस्स–पवर–जुवईण–सुन्दरवई,चुलसी–हय–गय–रह–सयसहस्स–सामी छन्नवई–गाम कोडि–सामी आसी जो भारहंमि भयवं ।।11।। वेड्ढओ

तं संतिं–संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ।।12 ।। रासानंदिअयं

इक्खाग ! विदेह ! नरीसर ! नर–वसहा ! मुणि–वसहा !, नव–सारय–ससि–सकलाणण ! विगय–तमा ! विहुअ–रया ! अजि ! उत्तम–तेअ ! गुणेहिं महामुणि ! अमिअ– बला ! विउल–कुला ! पणमामि तें भव–भय–मूरण ! जग–सरणा ! मम सरणं ।।13 ।। चित्तलेहा

देव–दाणविंद–चंद–सूर–वंद ! हट्ठ तुट्ठ ! जिट्ठ ! परम–लट्ठ–रूव ! धंत–रुप्प–पट्ट–सेअ–सुद्ध–निद्ध–धवल–दंत–पंति ! संति ! सत्ति–कित्ति–मुत्ति–जुत्ति–गुत्ति–पवर ! दित्त–तेअ–वंद–धेय। सव्व–लोअ–भाविअ–प्पभाव ! णेअ ! पइस मे समाहिं ।।14 ।। ।नारायओ

विमल–ससि–कलाइरेअ–सोमं,वितिमिर–सूर कराइरेअ–तेअं। तिअस–वइ–गणाइरेअ–रूवं, धरणिधर–प्पवराइरेअ–सारं ।।15 ।। कुसुमलया

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं। तव-संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ।।16 ।। भुअगपरिरिंगिअं

सोम-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी। रूव-गुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ।।7 ।। खिज्जिअयं

तित्थवर - पवत्तयं - तम - रय - रहिअं, धीर - जण थुअच्चियं-चुअ-कलि-कलुसं। संति-सुह-प्पवत्तयं-तिगरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरण मुवणमे ।।18 ।। ललिअयं

विणओणय - सिर - रइअंजलि - रिसिगण - संथुअं थिमिअं,विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चिअं बहुसो। अइरुग्गय - सरय - दिवायर - समहिअ - सप्पभं तवसा, गयणंगण - वियरण - समुइअ - चारणवंदिअं सिरसा ।।19 ।। किसलयमाला

असुर-गरुल-परिवंदिअं, किन्नरोरग-नमंसिअं। देव-कोडि-सय-संथुअं, समण-संघ-परिवंदिअं ।।20 ।। सुमुहं

अभयं अणहं, अरयं अरुयं। अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ।।21 ।। विज्जुविलसिअं

आगयावर-विमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय पहकर-सएहिं-हुलिअं,ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिअ चल-कुंडलंगय-तिरीड-सोहंत-मउलि-माला ।।22 ।। वेड्ढओ

जं सुर–संघा–सासुर–संघा वेर–विउत्ता भत्ति–सुजुत्ता, आयर–भूसिअ–संभम–पिंडिअ–सुट्ठु–सुविम्हिअ–सव्व–बलोघा ।। उत्तम–कंचण–रयण–परूविअ–भासुर–भूसण–भासुरियंगा, गाय–समोणय–भत्ति–वसागय–पंजली पेसिअ–सीस–पणामा ।।23 ।। रयणमाला

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ।।24 ।। खित्तयं

तं महामुणिमहं पि पंजली, राग–दोस–भय–मोह–वज्जिअं ।देव–दाणव–नरिदं–वंदिअं,संतिमुत्तमंमहातवंनमे ।।25 ।। खित्तयं

अंबरंतर–विआरणिआहिं,ललिअ–हंस–वहु–गामिणिआहिं । पीण–सोणि–थण–सालिणिआहिं, सकल–कमल–दल–लोअणिआहिं ।।26।। दीवयं

पीण–निरंतर–थणभर–विणमिय–गाय–लयाहिं, मणि –कंचण–पसिढिल–मेहल–सोहिअ–सोणि–तडाहिं । वर–खिंखिणि–नेउर–सतिलय–वलय–विभूसणिआहिं, रइकर–चउर–मणोहर–सुंदर–दंसणिआहिं ।।27 ।। चित्तक्खरा

देव–सुंदरीहिं–पाय–वंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डुण–प्पगारएहिं केहिं केहिं वि, अवंग–तिलय–पत्तलेह–नामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति–संनिविट्ठ–वंदणाग–याहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ।।28 ।। नारायओ

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिय–मोहं। धुय–सव्व–किलेसं, पयओ पणमामि ।।29 ।। नंदिअयं

थुअ–वंदिअयस्सा, रिसि–गण–देव–गणेहिं। तो देव–वहूहिं, पयओ–पणमिअस्सा।। जस्स–जगुत्तम–सासण–अस्सा, भत्ति–वसागय–पिंडिअयाहिं। देव–वरच्छरसा–बहुआहिं, सुर–वर–रइगुण–पंडिअयाहिं।।30।। भासुरयं

वंस–सद्द–तंति–ताल–मेलिए तिउक्खराभिराम–सद्द–मीसए– कए अ सुइ–समाण–णेअ–सुद्ध–सज्ज–गीय–पाय– जाल–घंटिआहिं। वलय–मेहला–कलाव–नेउराभिराम–सद्द–मीसए कए अ, देव–नट्टिआहिं हाव–भाव–विब्भम–प्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं।। वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय–सव्व–सत्त–संतिकारयं। पसंत–सव्व–पाव–दोसमेस हं, नमामि संतिमुत्तमं जिणं।।31।। नारायओ

छत्त–चामर–पडाग–जूअ–जव–मंडिआ,झयवर–मगर–तुरय–सिरिवच्छ–सुलंछणा। दीव–समुद्द–मंदर दिसागय–सोहिआ,सत्थिअ–वसह–सीह–रह–चक्क–वरंकिया।।32।। ललिअयं

सहाव–लट्ठा–सम–प्पइट्ठा, अदोस–दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसाय–सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा।।33।। वाणवासिआ

ते तवेण धुअ–सव्व–पावया, सव्वलोअ–हिय–मूल–पावया। संथुआ अजिय–संति–पायया, हुंतु मे सिव–सुहाण–दायया।।34।। अपरांतिका

एवं तव–बल–विउलं, थुयं मए अजिय–संति–जिण–जुअलं। ववगय–कम्म–रय–मलं, गइं गयं सासयं विउलं।।35।। गाहा

तं बहु–गुण–प्पसायं, मुक्ख–सुहेण परमेण अविसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अपरिसाविअ–प्पसायं ।।36।। गाहा

तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं।।37।। गाहा

पक्खिअ–चाउम्मासिअ–संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग–निवारणो एसो।।38।।

जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअ–संति–थयं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विणासंति।।39।।

जइ इच्छह परम–पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे। तो तेलुक्कुद्धरणे, जिण–वयणे आयरं कुणह।।40।।

(सिर्फ पुरुषो के लिए)

(फिर वरकनक सूत्र से 170 जिनेश्वर को वंदन करे)

वरकनक–शंख–विद्रुम–मरकत–घन–सन्निभं विगत–मोहम्। सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर–पूजितं वन्दे ।।1 ।।

(फिर नीचे मुताबिक चार खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिऊं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "भगवान्हं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिऊं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "आचार्यहं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिऊं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "उपाध्यायहं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिऊं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि "सर्वसाधुहं'

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर सिर झुकाकर)

अड्ढाइज्जेसु दीव–समुद्देसु पनरससु कम्मभूमीसु। जावंत के वि साहू, रयहरण–गुच्छ–पडिग्गह–धारा ।।1 ।। पंच महव्वय–धारा, अट्ठारस–सहस्स–सीलंग–धारा। अक्खुयायार–चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।।2 ।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ–पायच्छित्त–विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, देवसिअ–पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(ऐसा कहकर चार लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' तक काउस्सग्ग करना, न आता हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर प्रगट सम्पूर्ण लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।1 ।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे ।।2 ।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3 ।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4 ।। एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5 ।। कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ।।6 ।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु? "इच्छं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करुं? "इच्छं'

(फिर नीचे बैठकर एक नवकार और उवसग्गहरं कहकर संसारदावा

की सज्झाय बोलें)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

उवसग्ग हरं पासं, पासं वंदामि–कम्म–घण–मुक्कं। विसहर–विस–निन्नासं, मंगल–कल्लाण–आवासं ।।1 ।। विसहर–फुलिंग–मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह–रोग–मारी–दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।2 ।। चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर–तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख–दोगच्चं ।।3 ।। तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि–कप्पपायव–ब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।14 ।। इअ संथुओ महा यस ! भत्तिब्भर–निब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास–जिणचंद !।।5 ।।

संसार–दावानल–दाह–नीरं, संमोह–धूली हरणे–समीरं। माया–रसा–दारण–सार–सीरं, नमामि वीरं गिरि–सार–धीरं ।।1 ।। भावा–वनाम–सुर–दानव–मानवेन– चूला–विलोल–कमला–वलि–मालितानि। संपूरिता–भिनत–लोक–समीहितानि, कामं नमामि जिन–राज–पदानि तानि ।।2 ।। बोधागाधं सु–पद–पदवी–नीर–पूराभिरामं, जीवा–हिंसा–विरल–लहरी–संगमा–गाह–देहं। चूला–वेलं गुरुगम–मणी–संकुलं दूर–पारं, सारं वीरागम–जलनिधिं सादरं साधु सेवे ।।3 ।। आमूलालोल–धूली–बहुल–परिमलाऽऽलीढ–लोलालिमाला–

(यहाँ से सकल संघ साथ में बोलें)

झंकारा राव – सारामलदल – कमला – गार – भूमि – निवासे ! छाया–संभार–सारे ! वर कमल–करे ! तार–हाराभिरामे ! वाणी–संदोह–देहे ! भव विरह वरं देहि मे देवि ! सारं ।।4 ।।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।(अगर प्रतिक्रमण दौरान छिंक आई हो तो छिंक की विधि करनी जो पेज नं.177 से पेज नं .180 तक दी गई है ।)

(फिर खडे होकर खमासमण देकर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! दुक्कक्खय कम्मक्खय निमित्तं काउस्सग्ग करुं? इच्छं दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार "लोगस्स संपूर्ण' (पूरा लोगस्स) का काउस्सग्ग करना न आता हो तो 16 नवकार गिनना उसके बाद "नमो अरिहंताणं' कहकर बडी शान्ति नीचे मुताबिक कहना)

"नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योऽपाध्याय सर्वसाधुभ्यः'

बृहच्छान्तिः (बड़ी शान्ति)

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां–त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादि–प्रभावा–दारोग्य–श्री–धृति–मति–करी क्लेश–विध्वंसहेतुः।।

भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत–विदेह–सम्भवानां समस्त–तीर्थकृतां जन्मन्यासन–प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः, सुघोषा–घण्टा–चालनानन्तरं, सकल–सुरा–सुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्–भट्टारकं, गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रि शृङ्गे, विहित–जन्माभिषेकः शान्ति मुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति भव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्ति मुद्घोषयामि, तत्पूजा–यात्रा–स्नात्रादि–महोत्सवानन्तर मिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन स्त्रिलोक नाथा स्त्रिलोक महिता स्त्रिलोक पूज्या स्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योत कराः।।

ॐ ऋषभ–अजित–सम्भव–अभिनन्दन–सुमति–पद्मप्रभ–सुपार्श्व–चन्द्रप्रभ–सुविधि–शीतल–श्रेयांस–वासुपूज्य–विमल–अनन्त–धर्म–शान्ति–कुन्थु–अर–मल्लि–मुनिसुव्रत–नमि–नेमि–पार्श्व वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय–दुर्भिक्ष–कान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।।

ॐ ह्रीं–श्रीं धृति – मति – कीर्ति – कान्ति–बुद्धि – लक्ष्मी – मेधा – विद्या – साधन – प्रवेश – निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः।।

ॐ रोहिणी – प्रज्ञप्ति – वज्रशृंखला – वज्राङ्कुशी – अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता – काली – महाकाली – गौरी – गान्धारी – सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी – वैरोट्या – अच्छुप्ता – मानसी – महामानसी – षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।।

ॐ आचार्योपाध्याय–प्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमण संघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।।

ॐ ग्रहाश्चन्द्र – सूर्याङ्गारक – बुध – बृहस्पति–शुक्र – शनैश्चर – राहु – केतु – सहिताः सलोकपालाः सोम – यम – वरुण–कुबेर–वासवादित्य–स्कन्द–विनायको पेता ये चान्येऽपि ग्राम–नगर–क्षेत्र–देवताऽऽदयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् अक्षीण–कोश–कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा।।

ॐ पुत्र–मित्र–भ्रातृ–कलत्र–सुहृत्–स्वजन–सम्बन्धी – बन्धुवर्ग – सहिता नित्यं चामोद–प्रमोद कारिणः ।। अस्मिंश्च भूमण्डले, आयतन–निवासि–साधु–साध्वी –श्रावक–श्राविकाणां रोगोपसर्ग–व्याधि–दुःख–दुर्भिक्ष–दौर्मनस्योपशमनाय शान्ति र्भवतु।।

ॐ तुष्टि–पुष्टि–ऋद्धि–वृद्धि–मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु, दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा।।

श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्तिविधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश–मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये।।
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे।।
उन्मृष्ट–रिष्ट–दुष्ट–ग्रह–गति–दुःस्वप्न–दुर्निमित्तादि।
सम्पादित–हित–सम्पन्नाम–ग्रहणं जयति शान्तेः।।
श्रीसंघ–जगज्जनपद–राजाधिप–राज–सन्नि वेशानाम्।
गोष्ठिक–पुरमुख्यानां, व्याहरणै र्व्याहरेच्छान्तिम्।।
श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु।
श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु।
श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु।
श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु।
श्रीगोष्ठीकानां शान्तिर्भवतु।
श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु।
श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु।
श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु।।

ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठा–यात्रा–स्नात्राद्यवसानेषु शान्ति –कलशं गृहीत्वा कुंकुम–चन्दन–कर्पूरागरु–धूप वास–कुसुमाञ्जलि समेतः स्नात्र–चतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचि–शुचि–वपुः पुष्प–वस्त्र–चन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्ति मुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्य मिति।।

नृत्यन्ति नृत्यं मणि–पुष्प–वर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके।।

शिवमस्तु सर्वजगतः, पर–हित–निरता भवन्तु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः ।।

अहं तित्थयर–माया, सिवादेवी तुम्ह नयर–निवासिनी। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा।।

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न–वल्लयः।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।
सर्व–मङ्गल–माङ्गल्यं, सर्व–कल्याण–कारणम्।
प्रधानं सर्व–धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।

(फिर काउस्सग्ग पारकर प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

(प्रतिक्रमण के अंत में श्री संतिकरं स्तोत्र बोला जाता है, जो नीचे मुताबिक है)

संतिकरं संतिजिणं, जग–सरणं जय–सिरीई दायारं।
समरामि भत्त–पालग–निव्वाणी–गरुड–कय–सेवं।।1।।

ॐ सनमो विप्पोसहि–पत्ताणं संतिसामि–पायाणं।
झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिव–दुरिअ–हरणाणं ।।2।।

ॐ संति–नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ–लद्धि पत्ताणं।
सौँ ह्रीँ नमो य सव्वोसहि–पत्ताणं च देइ सिरिं ।।3।।

वाणी–तिहुअण–सामिणि–सिरिदेवी–जक्खराय–गणिपिडगा।
गह–दिसिपाल–सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ।।4।।

रक्खंतु मम रोहिणि–पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया।
वज्जंकुसी चक्केसरि–नरदत्ता–कालि–महाकाली ।15।।

गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा।
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआओ देवीओ ।।6।।

जक्खा गोमुह–महजक्ख–तिमुह–जक्खेस–तुंबरू–कुसुमो।
मायंग–विजय–अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ।।7।।

छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव्व तह य जक्खिंदो।
कूबर–वरुणो भिउडी, गोमेहो पास–मायंगा ।।8।।

देवीओ चक्केसरि–अजिआ–दुरिआरि–काली–महाकाली ।
अच्चुअ–संता–जाला, सुतारया सोअ–सिरिवच्छा ।।9।।

चंडा विजयंकुसि–पन्नइत्ति–निव्वाणी–अच्चुआ धरणी।
वइरुट्ट–छुत्त–गंधारि–अंब–पउमावई–सिद्धा ।।10।।

इअ तित्थ–रक्खण–रया, अन्ने वि सुरा सुरी य चउहा वि।
वंतर–जोईणी–पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ।।11।।

एवं सुदिट्ठि–सुरगण–सहिओ संघस्स संति–जिणचन्दो।
मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरि–थुअ महिमा।।12।।

इअ संतिनाह सम्मद्दिट्ठि–रक्खं सरइ तिकालं जो।
सव्वोवद्दव–रहिओ, स लहइ सुह–संपयं परमं। ।13।।

(तवगच्छ– गयण– दिणयर – जुगवर–सिरि सोमसुंदरगुरूणं।
सुपसाय–लद्ध–गणहर– विज्जासिद्धी–भणइ सीसो)।14।।

(प्रतिक्रमण यहाँ पर पूर्ण हुआ अब सामायिक पारना उनकी विधि नीचे मुजब है)

प्रतिक्रमण में छींक आने से आलोचना विधि

(संवत्सरी (पक्खि/चउमासी) प्रतिक्रमण में छींक आवे तो ही करने की विधि)

(संवत्सरी (पक्खि/चउमासी) प्रतिक्रमण करते समय संवत्सरि अतिचार से पहले छींक आवे तो इरियावहियं से लेकर प्रारंभ से पूरा वापस करना। अतिचार के बाद और बडी (बृहत्) शांति तक छींक आवे तो "दुक्खक्खय कम्मक्खय' का काउसग्ग करने से पहले नीचे मुताबिक विधि करनी)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएणं वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए। गमणा गमणे। पाण–क्कमणे, बीय–क्कमणे, हरिय–क्कमणे, ओसा–उत्तिंग–पणग–दगमट्टी मक्कडा–संताणा–संकमणे। जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

("चंदेसु निम्मलयरा' तक का एक लोगस्स का नहि आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारकर प्रकट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च

वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं क्षुद्रोपद्रव अहोड्डावणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स का "सागरवर गंभीरा' तक का काउस्सग्ग करना सावधान यहाँ काउस्सग्ग दो पद का ज्यादा है। चार लोगस्स नहीं आवे तो 16 नवकार का काउस्सग्ग करना फिर "नमो अरिहंताणं' कहकर निम्न स्तुति कहना)

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्य–करा जिने
क्षुद्रोपद्रव–संघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः।

(फिर प्रगट लोगस्स बोलना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल–सिज्जंस–वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण–जर–मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

---

* समरो मंत्र भलो नवकार *

समरो मंत्र भलो नवकार, ए छे चौद पूर्वनो सार, एहना महिमानो नहि पार, एनो अर्थ अनंत अपार
सुखमां समरो दुःखमा समरो, समरो दिवस ने रात, जीवता समरो, मरता समरो, समरो सौ संगत
योगी समरे, भोगी समरे समरे राजा रंक, देवो समरे दानव समरे, समरे सौ निःशंक
अडसठ अक्षर अेहना जाणो, अडसठ तीरथ सार, आठ संपदाथी परमाणो, अष्टसिद्धि दातार
नवपद एहना नवनिधि आपे, भवभवनां दुःख कापे, वीर वचनथी हृदय स्थापे, परमातम पद आपे..

सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं। इरियावहियाए विराहणाए। गमणा गमणे। पाण–क्कमणे, बीय–क्कमणे, हरिय–क्कमणे, ओसा–उत्तिंग–पणग–दगमट्टी–मक्कडा–संताणा–संकमणे। जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।।

तस्स–उत्तरी–करणेणं, पायच्छित्त–करणेणं, विसोही–करणेणं, विसल्ली–करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।।1।।

अन्नत्थ–ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त–मुच्छाए सुहुमेहिं अंग–संचालेहिं सुहुमेहिं खेल–संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी–संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स "चंदेसु निम्मलयरा' नही आवे तो चार नवकार तक का फिर प्रकट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।।1।। उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे।।2।। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।5।। कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु।।6।। चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।7।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि।

(फिर दायां घुंटना ऊंचा करके चउक्कसाय नीचे मुताबिक बोलना)

चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु। सरस-पियंगु-वन्नु गय-गामिउ, जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ।।1।। जसु-तणु-कंति-कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणि-मणि-किरणालिद्धउ। नं नव-जल हर तडिल्लय-लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ।12।।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।1 ।। आइगराणं तित्थयराणं सयं–संबुद्धाणं ।।2 ।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिस–सीहाणं, पुरिस–वरपुंडरीआणं, पुरिस–वरगंधहत्थीणं ।।3 ।। लोगुत्तमाणं, लोग–नाहाणं, लोग–हिआणं, लोग–पईवाणं, लोग–पज्जोअगराणं ।।4 ।। अभय–दयाणं, चक्खु–दयाणं, मग्ग–दयाणं, सरण–दयाणं, बोहि–दयाणं ।।5 ।। धम्म–दयाणं, धम्म–देसयाणं, धम्म–नायगाणं, धम्म–सारहीणं, धम्म–वर–चाउरंत–चक्कवट्टीणं ।।6 ।। अप्पडिहय–वर–नाण–दंसण–धराणं, वियट्ट–छउमाणं ।।7 ।। जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ।।8 ।। सव्वन्नूणं सव्व–दरिसीणं–सिव–मयल–मरुय–मणंत मक्खय मव्वाबाहमपुणरा पुणरा वित्ति–सिद्धिगइ–नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ–भयाणं ।।9 ।। (गाहा) जे अ अईआ, सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10 ।।

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअ–लोए अ। सव्वाइँ ताइँ वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।।1 ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि।

जावंत के वि साहू, भरहेरवय–महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड–विरयाणं ।।1 ।।

नमोऽर्हत्–सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्यः ।।1 ।।

उवसग्ग हरं पासं, पासं वंदामि–कम्म–घण–मुक्कं। विसहर–विस–निन्नासं, मंगल–कल्लाण–आवासं ।।1 ।। विसहर–फुलिंग–मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह–रोग–मारी–दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।2 ।। चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर–तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख–दोगच्चं ।।3 ।। तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि–कप्पपायव–ब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।14 ।। इह संथुओ महा यस ! भतिब्भर–निब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास–जिणचंद !।।5 ।।

(फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय ! जग गुरु! होऊ ममं तुह पभावओ भयवं ! भव–निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल–सिद्धी ।।1 ।। लोग–विरुद्ध–च्चाओ, गुरु जण–पूआ परत्थ करणं च। सुह गुरु–जोगो, तव्वयण–सेवणा, आभवमखंडा ।।2 ।। वारिज्जइ जइ वि नियाण, बंधणं वीय राय ! तुह समये। तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3 ।। दुक्ख–क्खओ कम्म–क्खओ, समाहि मरणं च, बोहि लाभो अ। संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणाम करणेणं ।।4 ।। सर्व मङ्गल माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणम्। प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5 ।।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसहं भगवन्! सामायिक पारु? यथाशक्ति

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पार्युं? तहत्ति

(ऐसा कहके चरवळा या आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे मुताबिक बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।1 ।।

सामाइअ वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो। छिन्नइ असुहंकम्मं, सामाइअजत्तिआवारा ।।1 ।।सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवई जम्हा। एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ।।2 ।। मैंने सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं। दस मन के, दस वचन के, बारह काया के कुल बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

(फिर बाद में यदि स्थापनाजी की स्थापना की हो तो सीधा हाथ की हथेली अपनी तरफ रखकर एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।1 ।।

हिन्दी अतिचार

नाणम्मि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि, आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ।। 1।। ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांच आचारों में जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/ चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार – काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे, वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।। 2।। ज्ञान नियमित वक्त में पढा नहीं, अकाल वक्त में पढा। विनयरहित, बहुमानरहित, योगोपधान रहित पढा। ज्ञान जिससे पढ़ा उससे अतिरिक्त को गुरू माना या कहा। देववंदन, गुरूवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण सज्झाय करते पढते या गुणते, अशुद्ध अक्षर कहा, कानाम ात्रा न्यूनाधिक कही, सूत्र असत्य कहा। अर्थ अशुद्ध किया। अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य कहे। पढकर भूला। असज्झाय के समय में थविरावली, प्रतिक्रमण, उपदेशमाला आदि सिद्धांत पढा । अपवित्र स्थान में पढा या बिना साफ की हुई घृणित (खराब) भूमि पर रखा। ज्ञान के उपकरण तख्ती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात आदि के पैर लगा, थूंक, लगा अथवा थूंक से अक्षर मिटाया। ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, अथवा पास में लिये हुए आहार, निहार किया। ज्ञान द्रव्य भक्षण करने वाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सार संभाल न की, उल्टा नुकसान

किया। ज्ञानवंतके उपर द्वेष किया, इर्ष्या की, तथा अवज्ञा आशातना की। किसीको पढने गुनने में विघ्न डाला। अपने जानपने का मान किया, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यवज्ञान और केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानों में श्रद्धा न की, गुंगे तोतले की हँसी की, ज्ञान में कुतर्क किया, ज्ञान के विपरीत प्ररूपणा की इत्यादि ज्ञानाचार संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

दर्शनाचार के आठ अतिचार – निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अट्ठ ।। 3।। देवगुरू धर्म में नि:शंक न हुआ। एकांत निश्चय न किया। धर्म संबंधी फल में संदेह किया, साधु साध्वी की जुगुप्सा निंदा की, कुचारित्री को देखकर चारित्रवान् पर भी अभाव हुआ, मिथ्यात्वियों की पूजा–प्रभावना देखकर मूढदृष्टिपना किया। संघ में गुणवान की प्रशंसा न की। धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया, साधर्मी का हित न चाहा। भक्ति न की। अपमान किया। देवद्रव्य, गुरूद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य की हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति होते हुए भली प्रकार सार संभाल न की। साधर्मी से कलह क्लेश कर के कर्मबंधन किया। मुख कोश बांधे बिना वीतराग देव की पूजा की, धूपदानी, खसकूंची, कलश आदिक से प्रतिमाजी को ठपका लगाया, जिन बिंब हाथ से छूटा, श्वासोच्छ्वास लेते आशातना हुई, मंदिर और पौषधशाला में थूंका तथा मल, श्लेश्म किया, हंसी मश्करी की, कुतूहल किया।

जिनमंदिर संबंधी चौरासी आशातनाओं में से और गुरूम हाराज संबंधी तेतीस आशातनाओं में से कोई आशातना हुई हो, स्थापनाचार्य हाथ से गिरे हो या उनकी पडिलेहण न की हो, गुरू के वचन को मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

चारित्राचार के आठ अतिचार – पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ।। 4।। इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमि ति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति यह अष्ट प्रवचनमाता सामायिक पौषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं, खंडना विराधना हुयी चारित्राचार संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब, मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

विशेषत: श्रावकधर्म संबंधी श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पांच अतिचार – संका कंख विगिच्छा शंका :– श्री अरिहंत प्रभु के बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिकगुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रवान् के चारित्र में तथा जिनेश्वर देव के वचन में संदेह किया। आकांक्षा :– ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरूड, गूगा, दिक्पाल, गोत्र देवता, नवग्रह पूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, मसानी, आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे जुदे (अलग–अलग) देवादिकों का प्रभाव देखकर शरीर में रोगातंक कष्टादि आने पर इहलोक परलोक के

लिये पूजा मानता की. बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भगत, लिंगिये, जोगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्यदर्शनियों के मंत्र, तंत्र, यंत्र के चमत्कार देखकर, बिना परमार्थ जाने मोहित हुआ, कुशास्त्र, पढा। सुना। श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, राखडीपूनम, (राखी), अजाएकम, प्रेतदूज, गौरीतीज, गणेश चौथ, नागपंचमी, स्कंद षष्ठि, झीलणा छठ, शीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी, व्रत एकादशी, वामन द्वादशी, वत्सद्वादशी, धन तेरस, अनंत चौदश, शिवरात्री, काली चौदश, अमावास्या आदित्यवार, उत्तरायण, याग, भोगादि किये, कराये, करते को भला माना, पीपल में पानी डाला, डलवाया। कूआँ, तालाब, नदी, द्रह, बावडी, समुद्र, कुंड उपर पुण्य निमित्त स्नान तथा दान किया, कराया या अनुमोदन किया। ग्रहण, शनिश्चर, माघ–मास, नवरात्रिका स्नान किया, नवरात्रिव्रत किया, अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये, कराये। वितिगिच्छा :– धर्मसंबंधी सन्देह किया, जिन वीतराग अरिहंत भगवान् धर्म के आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा न की। इहलोक परलोक संबंधी भोगवांछा के लिये पूजा की। रोग–आतंक कष्ट के आने पर क्षीण वचन बोला, मानता मानी, महात्मा–महासती के आहार, पानी, (मलीन वस्त्र) आदि की निंदा की, कुचारित्री को देखकर चरित्रवान् पर कुभाव हुआ, मिथ्यादृष्टि की पूजा–प्रभावना देख कर प्रशंसा तथा प्रीति की। दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना, मिथ्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्री सम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चाउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।।

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रत के पांच अतिचार – वह बंध छविच्छेए द्विपद, चतुष्पद, आदि जीव को क्रोधवश ताडन किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझ डाला, निर्लांछन कर्म, नासिका छिदवाई, कर्ण छेदन करवाया, खसी किया, दाना, घास, पानी के समयपर सार संभाल न की। लेणदेण में किसी के बदले किसी को भूखा रखा, पास में खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया। सडे हुए धान को बिना शोधे काम में लिया, अनाज बिना शोधे पिसवाया, धूप में सुखाया। पानी यतना से न छाना, ईंधन, लकडी उपले, गोहे आदि बिना देखे बाले, उसमें सर्प, बिच्छू, कानखजूरा, कीडी, मकौडी, सरोला, माकंड, जुआ, गिंगोडा आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया, दुःख दिया, दुःखी जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चिंटी (कीडी) मकोडी के अंडे नाश किये, लीख फोडा, दीमक, कीडी, मकोडी, घीमेल, कातरा, चूडेल, पंतगिआ, देडका, अलसियां, इअल, कूंता, डांस, मसा, बगतरां, माखी, टीड्डी प्रमुख जीव का नाश किया। चील, काग, कबूतर आदि के रहने की जगह का नाश किया, घौंसले तोड़े। चलते फिरते या अन्य कुछ काम, करते निर्दयपना किया, भली प्रकार जीवरक्षा न की। बिना छाने पानी से स्नानादि कामकाज किया, कपड़े धोये, यतनापूर्वक कामकाज न किया। चारपाइ, खटोला, पीढ़ा पीढ़ी आदि धूप में रखे, डंडे आदि से झटकाये, जीव संसक्त जमीन को लीपा, दलते–कूटते, लिंपते, या अन्य कुछ कामकाज करते यतना न की। अष्टमी, चौदस आदि तिथि का नियम तोडा, धूनी करवाई। इत्यादि पहले स्थूल

प्राणातिपात विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्य या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत के पांच अतिचार सहसा रहस्स दारे सहसात्कारे बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आल, कलंक दिया। स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रगट की, अथवा अन्य किसी का मंत्रभेद मर्म प्रगट किया। किसी को दु:खी करने के लिये खोटी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी साक्षी दी, अमानत में खयानत की, किसी की धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी, कन्या, गौ, भूमि संबंधी लेन देन में लडते-झगडते बाद विवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदि की गाली दी, इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते या अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

तीसरे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार तेनाहडप्पओगे घर, बाहिर, खेत, खला में बिना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की अथवा बिना आज्ञा अपने काम में ली, चोरी की वस्तु ली, चोर को सहायता दी, राज्य विरूद्ध कर्म किया, अच्छी-बुरी, सजीव-निर्जीव, नई-पुरानी वस्तु का भेल संभेल किया, जकात की चोरी की, लेते देते तराजू की दंडी चढ़ाई अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया, रिश्वत खाई, विश्वास घात किया, ठगी की, हिसाब किताब में किसी को धोखा दिया। माता-पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के साथ ठगी कर किसी को दिया, अथवा पुंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इन्कार किया,

किसी को हिसाब किताब में ठगा, पड़ी हुई चीज उठायी इत्यादि तीसरे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

चौथे स्वदारसंतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत के पांच अतिचार, अप्परिगहिया इत्तर परस्त्री गमन किया। अविवाहिता, कुमारी, विधवा, वेश्यादिक से गमन किया। अनंगक्रीडा की। काम आदि की विशेष जागृति की अभिलाषा से सरागवचन कहा। अष्टमी, चौदस आदि पर्व तिथि का नियम तोड़ा, स्त्री के आंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की, कुविकल्प चिंतन किया, पराये नाते जोडे, गुड्डे–गुड्डियों का विवाह किया या कराया, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वप्न, स्वप्नांतर हुआ, कुस्वप्न आया, स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिक से हास्य किया, स्वस्त्री में संतोष न किया, इत्यादि चौथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

पांचवें स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पांच अतिचार धण धन्न खित्त वत्थु धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना, चांदी, बर्तन आदि। द्विपद :– दास, दासी, नौकर। चतुष्पद :– गौ, बेल, घोड़ादि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया, लेकर बढ़ाया अथवा अधिक देखकर, मूर्छावश माता, पिता, पुत्र, स्त्री के नाम किया, परिग्रह का परिमाण किया नहीं, करके भुलाया, याद न किया इत्यादि पांचवे स्थूल

परिग्रह परिमाण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

छट्ठे दिक्परिमाण व्रत के पांच अतिचार गमणस्स उ परिमाणे उर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशि में जाने–आने के नियमित परिमाण उपरांत भूल से गया, नियम तोडा, प्रमाण उपरांत सांसारिक कार्य के लिए अन्य देश से वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहां भेजी, नौका, जहाज आदि द्वारा व्यापार किया, वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में गया, एक दिशा से परिमाण को कम कर के दूसरी दिशा में अधिक किया। इत्यादि छट्ठे दिक्परिमाण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

सातवें भोगोपभोग परिमाण व्रत के भोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्मआश्रित पंद्रह अतिचार एवं बीस अतिचार सचित्ते पडिबद्धे सचित्त खानपान की वस्तु नियम से अधिक अंगीकार की, सचित्त से मिली हुई वस्तु खाई, तुच्छ औषधि का भक्षण किया, अपक्व आहार, दुपक्व आहार किया, कोमल इमली, बुंट, भुट्टे, फलियां आदि वस्तु खाई।

सचित्त (1), दव्व (2), विगई (3), वाणह (4), तंबोल (5), वत्थ (6), कुसुमेसु (7), वाहण (8), सयण (9), विलेवण (10), बंभ (11), दिसि (12), न्हाण (13), भत्तेसु (14) ।। 1।।

ये चौदह नियम लिये नहीं, लेकर भुलाये, वड, पीपल, पिलंखण, कटूंबर, गूलर, यह पांच फल। मदिरा, मांस, शहद, मक्खन यह चार महाविगई। बरफ, ओले, कच्ची मिट्टी, रात्रिभोजन, बहुबीजफल, आचार, घोलवडे, द्विदल, बेंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनन्तकाय, यह बाईस अभक्ष्य। सूरन, जमीनकंद, कच्ची हल्दी, सतावरी, कच्चा नरकचूर, अदरक, कुंवारपाठा, थोर, गिलोय, लहसुन, गाजर, गठा, प्याज, गोंगलु, कोमलफल, फूल, पत्र, थेगी, हरामोत्था, अमृतवेल, मूली, पदबहेडा, आलु, कचालु, रतालु, पिंडालु आदि अनंतकाय का भक्षण किया, दिवस अस्त होने पर भोजन किया, सूर्योदय से पहले भोजन किया, तथा कर्मत: पंद्रह कर्मादान–इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे यह पांच कर्म। दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, यह पांच वाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्म, निल्लंछणकम्म, दवग्गिदावणया, सरदहतलाय–सोसणया, असइपोसणया यह पांच सामान्य एवं पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य कुल पंद्रह कर्मादान, महा आरम्भ किये, कराये, करते हुए को अच्छा समझा, रंगने का व कोलसा आदिक का काम किया, ईंट निभाडे पकाये, फूले, चणा, पकवान कर बेचे, बासी मक्खन तपाया, फागुन मास उपरांत तिल रखा। श्वान–बिल्ली आदि पोषे, पाले, महासावद्य पापकारी कठोर काम किया इत्यादि सातवें भोगोपभोग परिमाण व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

आठवें अनर्थदंड विरमण व्रत के पांच अतिचार, कंदप्पे कुक्कुइए कंदर्प :– कामाधीन होकर नट, विट, भांड, वेश्यादिक से हास्य, खेल, क्रीडा, कुतूहल किया, स्त्री–पुरूष के हावभाव रूप श्रृंगार संबंधी वार्ता की, विषयरसपोषक कथा की, स्त्री–कथा, देश–कथा, राज–कथा, भक्त–कथा, यह चार विकथा की, पराई भांजगड की, किसी की चुगलखोरी की, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया, खांडा, कटार, कोश, कुल्हाडी, रथ, ऊखल, मुसल, अग्नि चक्की आदि वस्तु दाक्षिण्यता वश किसी को म ांगी–दी, पापोपदेश दिया, अष्टमी, चतुर्दशी के दिन दलने, पिसने आदि का नियम तोड़ा, मूर्खता से असंबद्ध वाक्य बोला, प्रमादाचरण सेवन किया, घी, तैल, दूध, दही, गुड़, छास आदि का भाजन खुला रखा, उसमें जीवादि का नाश हुआ, बासी मक्खन रखा और तपाया, नहाते, धोते, दातून करते जीव अकुलित मोरी में पानी डाला, झुले में झूला, जुआ खेला, नाटक आदि देखा, ढोर–डंगर खरीदवाये, कर्कश वचन कहा, किचकिची ली, ताडना तर्जना की, मत्सरता धारण की, श्राप दिया, भैंसा, सांढ, मेंढा, मुरगा, कुत्ते आदि लड़वाये, या इनकी लडाई देखी, ऋद्धिमान की ऋद्धि देख ईर्ष्या की, मिट्टी, नमक, धान, बिनोले बिना कारण मसले, हरी वनस्पति खूंदी, शस्त्रादिक बनवाये, राग वश से एक का भला चाहा, एक का बुरा चाहा, मृत्यु की वांछा की, मैना, तोते, कबुतर, बटेर, चकोरादि पक्षियों को पींजरे में डाला इत्यादि आठवें अनर्थ दंड विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

नवमें सामायिक व्रत के पांच अतिचार, तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक में संकल्प, विकल्प किया, चित्त स्थिर न रखा, सावद्य वचन बोला, प्रमार्जन किये बिना शरीर हिलाया, इधर–उधर किया, शक्ति के होते हुये सामायिक न किया, सामायिक में खुले मुंह बोला, नींद ली, विकथा की, घर संबंधी विचार किया, दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा, सचित्त वस्तु का संघट्टा हुआ, मुहपत्तिओ संघट्टी, सामायिक अधुरा पारा, बिना पारे उठा इत्यादि नवमें सामायिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

दशवें देशावगासिक व्रत के पांच अतिचार, आणवणे पेसवणे, आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाई, रुवाणुवाई, बहियापुग्गलपक्खेवे नियमित भूमि में बाहिर से वस्तु मंगवाई, अपने पास से अन्यत्र भिजवाई, खुंखारादि शब्द कर के, रूप दिखा के या कंकरादि फेंककर, अपना होना मालूम कराया इत्यादि दशवें देशावगासिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

ग्यारहवें पौषधोपवासव्रत के पांच अतिचार, संथारूच्चार विही अप्पडिलेहिअदुप्पडिलेहिअ सिज्जा संथारए, अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, उच्चारपासवण भूमि, पौषध लेकर सोने की जगह (संथारा) पर बिना पुंजे प्रमार्जे सोया। स्थंडिल आदि की भूमि भली प्रकार शोधी नहीं। लघुनीति–बड़ीनीति करने या परठने–समय

अणुजाणह जस्सुग्गहो न कहा, परठे बाद तीन बार वोसिरे वोसिरे न कहा, जिनमंदिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए निसीहि और बाहिर निकलते आवस्सही तीन बार न कही, वस्त्रादि उपधि की पडिलेहणा न की। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय का संघट्टा हुआ। संथारा पोरिसी पढनी भुलाई, बिना संथारे जमीन पर सोया, पोरिसी में नींद ली। पारणादि की चिंता की, समय पर देववंदन न किया, प्रतिक्रमण न किया पौषध देरी से लिया और जल्दी से पारा, पर्व तिथि को पौषध न लिया इत्यादि ग्यारहवें पौषधव्रत संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

बारहवें अतिथिसंविभाग व्रत के पांच अतिचार, सच्चित्ते निक्खिवणे सचित्त वस्तु के संघट्टेवाला अकल्पनीय आहारपानी साधु, साध्वी को दिया, देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कही, देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही। न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कही, न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही। गोचरी के वक्त इधर उधर हो गया, गोचरी का समय टाला, बेवक्त साधु महाराज को प्रार्थना की, आये हुए गुणवान् की भक्ति न की, शक्ति के होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया, अन्य किसी धर्मक्षेत्र (पाठशाला, लाइब्रेरी, गुरूकुल, पांजरापोल आदि) को पडता देख मदद न की, दीन, दुःखी पर अनुकंपा न की इत्यादि बारहवें अतिथिसंविभाग व्रत, संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस

में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

संलेषणा के पांच अतिचार इहलोए परलोए इहलोगासंसप्पओगे, परलोगा संसप्पओगे, जीविआ संसप्पओगे,मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इहलोक संबंधी राजऋद्धि भोगादि की वांछा की। परलोक में देव, देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की, सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दु:ख आने पर मरने की वांछा की। कामभोग की वांछा की। इत्यादि संलेषणा व्रत संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।।

तपाचार के बारह भेद छः बाह्य, छः अभ्यन्तर। अणसण मूणोअरिया अनशन: शक्ति के होते हुए पर्वतिथि को उपवासादि तप न किया। ऊनोदरी: दो–चार ग्रास कम न खाये। वृत्तिसंक्षेप: द्रव्य खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया, रस:विगय त्याग न किया। कायक्लेश: लोचादि कष्ट सहन न किया, संलीनता: अंगोपांग का संकोच न किया, पच्चक्खाण तोडा, भोजन करते समय एकासणा, आयंबिल प्रमुख में चौकी पटडा , अखलादि हिलता ठीक न किया, पच्चक्खाण पारना भूल गया, बैठते नवकार न पढा, उठते पच्चक्खाण न किया, निवि, आयंबिल, उपवासादि तप में भूल से कच्चा पानी पिया, वमन हुआ, इत्यादि बाह्य तप संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।।

अभ्यंतर तप पायच्छित्तं विणओ शुद्धांत: करण पूर्वक गुरू महाराज से आलोचना न ली, गुरू की दी हुई आलोचना संपूर्ण न की, देव, गुरू, धर्म, संघ, साधर्मी का विनय न किया, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वैयावच्च न की, वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा रूप पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया, धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया, दु:खक्षय, कर्मक्षय निमित्त दस, बीस, लोगस्स का काउस्सग न किया। इत्यादि अभ्यंतर तप संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।।

वीर्याचार के तीन अतिचार अणिगूहिअ बल वीरिओ पढते, गुणते, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक, धर्मकृत्य में मन, वचन, काया का बल वीर्य पराक्रम फोरा नहीं, विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वंदन का विधि भली प्रकार न किया, अन्यचित्त निरादर से बैठा, देववंदन, प्रतिक्रमण में जल्दी की इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।।

नाणाई अट्ठपइवय, सम्मसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु ।
बारस तप विरिअतिगं, चउव्वीस सयं अइयारा ।। 1 ।।

पडिसिद्धाणं करणे प्रतिषेध अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीज भक्षण, महारंभ, परिग्रहादि किया, देवपूजा–

षट्कर्म, सामायिकादि छः आवश्यक, विनयादिक अरिहंत की भक्ति प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमति से उत्सूत्रप्ररूपणा की तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशून्य, रति–अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य यह अट्ठारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे, दिन कृत्य, प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञा से विरुद्ध किया, कराया, करते को भला जाना। इन चार प्रकार के अतिचार में जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

एवंकारे श्रावकधर्म सम्यक्त्वमूल बारह व्रत संबंधी एक सौ चौवीस अतिचारों में से जो कोई अतिचार संवत्सरि (पक्ष/चउमासि) दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते–अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।।

पर्युषण काव्य

दिवस-1

चैत्यवंदन– पर्व पयुर्षण गुण नीलो

पर्व पयुर्षण गुण नीलो, नव कल्पी विहार;
चार मासांतर थिर रहे, अेहीज अर्थ उदार... ।।1।।

अषाढ सुदि चउदश थकी, संवत्सरी पच्चास;
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास... ।।2।।

श्रावक पण समता धरी, करे गुरुनां बहुमान;
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थेई अेकतान... ।।3।।

जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल;
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीअे शिव वरमाल... ।।4।।

दर्पणथी निज रुपनो, जुवे सुदृष्टि रुप;
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञान रमण मुनि भूप... ।।5।।

आतम स्वरुप विलोकता अे, प्रगट्यो मित्र स्वभाव
राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव... ।।6।।

नव वखाण पुजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा;
पंचमी दिने वांचे सुणे, होय विराधक नियमा... ।।7।।

अे नही पर्व पंचमी, सर्व समाणी चोथे;
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्युं अरिहानाथे... ।।8।।

श्रुतकेवली वयणां सुणीअे, लही मानव अवतार;
श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जयजयकार... ।।9।।

स्तुति– पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण...

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पर्युषण पामीजी,
कल्प धरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी,

कुंवर गयवर खंध चडावी, ढोल निशान वजडावोजी
सद्गुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ।।1।।

प्रथम वखाण धर्म सारथी पद, बीजे सुपना चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वली चौथे, वीर जनम अधिकारजी,
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीसजी,
आठमे थिरावली संभलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ।।2।।

छट्ठ अट्ठम अट्ठाई कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेजी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघ सयल खामीजेजी,
आठ दिवस लगे अमर पलावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ।।3 ।।

तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर जेमजी,
मुनिवर मांही जिनवर मोटा, पर्व पर्युषण तेमजी,
अवसर पामी साहमिवच्छल, बहु पकवान वडाईजी,
खीमाविजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ।।4 ।।

स्तवन –सुणजो साजन संत...

सुणजो साजन संत, पजुसण आव्यारे...!,
तमे पुन्य करो पुन्यवंत भविक मन भाव्या रे...!
वीर जिनेश्वर अति अलवेसर वाला मारा परमेश्वर एम बोले रे...
पर्वमांहे पर्युषण म्होटां, अवर न आवे तस तोले रे...।।1।।

चौपदमां जेम केसरी मोटो, वा0 खगमां गरुड ते कहीये रे
नदी मांहे जेम गंगा म्होटी, नगमां मेरु लहीये रे... ।।2 ।।

भुपतिमां भरतेसर भाख्यो वा0 देवमांहे सुर इंद्र रे ;
तीरथमां शेत्रुंजो दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे... ।।3 ।।

दशरा दिवाली ने वली होली, वा0 अखात्रीज दिवासो रे ;
बलेव प्रमुख बहुलां छे बीजा, पण नहि मुक्तिनो वासो रे... ।।4 ।।

ते माटे तमे अमर पलावो, वा0 अट्ठाई – महोत्सव कीजे रे
अट्ठम तप अधिकाइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे... ।।5।।

ढोल ददामा भेरी न फेरी, वा0 कल्पसूत्रने जगावो रे;
झांझरना झणकार करीने, गौरीनी टोली मली आवो रे...6

सोना रुपाने फूलडे वधावो, वा0 कल्पसूत्रने पूजो रे;
नव वखाण विधिये सांभलतां, पाप मेवासी धूजो रे... 7

एम अट्ठाई महोत्सव करतां, वा0 बहु जीव जग उद्धरिया रे
विबुध विमल वर सेवक नय कहे,
नवनिधि ऋिद्धि–सिद्धि वरिया रे...8

सज्झाय : पर्व पर्युषण

पर्व पर्युषण अवीया रे लाल, कीजे घणु धर्म ध्यान रे भविकजन;
आरंभ सकल निवारिए रे लाल, जीवो ने दीजे अभयदान रे...।।1।।

सघला मासमां मास वडो रे लाल, भाद्रव मास सुमास रे, भविकजन
तेहमां आठ दिन रुअडा रे लाल, कीजे सुकृत उल्लास रे ।।2।।

खांडण पीसण गारना रे लाल, नावण धोवण जेह रे, भविकजन
एवा आरंभने टालीए रे लाल, वंछो सुख अछेह रे... ।।3।।

पुस्तक वांचीने राखीए रे लाल, ओच्छव करीए अनेक रे, भविकजन
धर्म सारु वित्त वावरो रे लाल, हैडे आणी विवेक रे... ।।4।।

पुजी अर्ची ने आणीए रे लाल, श्री सद्गुरुनी पास रे, भविकजन
ढोल ददामण फेरीया रे लाल, मंगल गावो गीत रे... ।।5।।

श्रीफल सरस सोपारीओ रे लाल, दीजे साहम्मिने हाथ रे, भविकजन
लाभ अनंता बतावीआ रे लाल, श्रीमुख त्रिभुवन नाथ रे..।।6।।

नव वांचना श्री कल्पसूत्रनी रे लाल, सांभलो शुद्ध भाव रे, भविकजन
साहम्मिवच्छल कीजीए रे लाल, भवजल तरवा नाव रे...।।7।।

चित्ते चैत्य जुहारिए रे लाल, पूजा सत्तर प्रकार रे , भविकजन
अंगपूजा सद्गुरु तणी रे लाल, कीजिए हर्ष अपार रे... ।।8।।

जीव अमारि पलावीए रे लाल, तेहथी शिवसुख होय रे भविकजन
दान संवत्सरी दीजिए लाल, ईण समो पर्व न कोय रे... ।।9 ।।

काऊस्सग करी ने सांभलो रे लाल, आगम आपणे कान रे, भवि.
छट्ठ अट्ठम तपस्या करी रे लाल, कीजे उज्जवल ध्यान रे... ।।10।।
ईणविध पर्व आराधशे रे लाल, लेशे सुखनी कोड रे भविकजन
मुक्ति मंदिरमां म्हालशे रे लाल, मति हंस नमे करजोड रे..।।11।।

पर्युषण दिवस-२ काव्य

चैत्यवंदन – ॐ नमः पार्श्वनाथाय...

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व चिन्तामणीयते;
ह्रीँ धरणेन्द्र–वैरुट्या–पद्मादेवी युताय ते... ।।1।।
शान्ति–तुष्टि–महापुष्टि–धृति–कीर्ति–विधायिने;
ॐ ह्रीँ द्विड–व्याल–वैताल–सर्वाधि–व्याधि–नाशिने... ।।2।।
जया–जिताख्या–विजयाख्या–पराजितयान्वितः,
दिशां पालै–र्ग्रहै–र्यक्षै–र्विद्यादेवीभिरन्वितः... ।।3।।
ॐ असिआउसा नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम्;
चतुःषष्टि–सुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः... ।।4।।
श्री शंखेश्वर मंडण ! पार्श्व जिन प्रणतकल्पतरु कल्प !
चूरय दुष्टव्रातं, पूरय में वांछितं नाथ ! ।।5।।

स्तुति – कल्लाणकंदं

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं,संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं,
पासं पयासं सुगुणिक्क ठाणं,भत्तीइ वंदे सिरि–वद्धमाणं ।।1।
अपार–संसार–समुद्द–पारं,पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं,
सव्वे जिणिंदा सुर–विंद–वंदा,कल्लाण–वल्लीण विसाल–कंदा..2
निव्वाण–मग्गे वर–जाण–कप्पं,पणासियासेस–कुवाइ–दप्पं,
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,नमामि निच्चं तिजग–प्पहाणं।।3।।
कुंदिंदु–गोक्खीर–तुसार–वन्ना,सरोजहत्था कमले निसन्ना,
वाएसिरी पुत्थय–वग्ग–हत्था,सुहाय सा अम्ह सया पसत्था..4

स्तवन- संतिकरं देखे पेज नं...176

सज्झाय : मन्नह जिणाणं (श्रावक कृत्य की)

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं,
छ–व्विह–आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ।।1 ।।

पव्वेसु पोसहवयं, दाणं, सीलं, तवो अ भावो अ,
सज्झाय, नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ।।2 ।।

जिणपूआ, जिणथुणणं, गुरुथुअ, साहम्मिआण वच्छल्लं,
ववहारस्स य सुद्धी, रह–जत्ता तित्थ–जत्ताय ।।3 ।।

उवसम, विवेग, संवर, भासा समिइ, छ–जीव–करूणा य,
धम्मिअ–जण–संसग्गो, करण–दमो, चरण–परिणामो ।।4 ।।

संघोवरि बहु–माणो, पुत्थय–लिहणं, पभावणा तित्थे,
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सु–गुरुवएसेणं ।।5।।

पर्युषण दिवस-3 काव्य

सारे काव्य विधिवत् पक्खि प्रतिक्रमण में दिये हुए है ।

पर्युषण दिवस-4 काव्य

चैत्यवंदन –वडा कल्प पूरव

वडा कल्प पूरव दिने, घरे कल्पने लावो,
रात्रि जागरण प्रमुख करी, शासन सोहावो... ।।1 ।।

हय गय शणगारी, कुमर लावो गुरु पासे,
वडा कल्प दिन सांभलो, वीर चरित्र उल्लासे... ।।2।।

छट्ठ द्वादश तप कीजीए, धरीये शुभ परिणाम,
साधर्मिक वत्सल प्रभावना, पूजा अभिराम... ।।3।।

जिन उत्तम गौतम प्रत्ये, कहे जो एकवीश वार,
गुरु मुख पद्म भावशुं, सुणतां पामे पार... ।।4।।

स्तुति : प्रभु भव पच्चवीशमें

प्रभु भव पचवीशमें, नंदन मुनि महाराज;
तिहां बहु तप कीधा, करवा आतम काज;
लाख अगीयार उपर, जाणो अेंसी हजार;
छस्सो पीस्तालीश, मासखमण सुखकार... ।।1।।

अरिहंत सिद्ध पवयण, सूरि स्थविर उवज्झाय,
साधु नाण दंसण वली, विनय चारित्र कहाय;
बंभवय किरीयाणं, तव गोयम ने जिणाणं,
चरण नाण सुअस्स तित्थ, विशस्थानक गुणखाण... ।।2।।

इम शुभ परिणामे, कीधा तप सुविशाल,
मुनि मारग साधन, साधक सिद्ध दयाल,
समकित समताधर, मुक्तिधर गुणवंत,
नंदन ऋषि राया, प्रणमुं श्रुतधर संत... ।।3।।

धन्य पोटीलाचारज, सद्गुरु गुण भंडार,
इम लाख वरस लगे, चारित्र तप विचार;
पालीने पहोंच्चा, दशमा, स्वर्ग मोझार,
कहे दीपविजय कवि, करता बहु उपकार... ।।4।।

स्तवन : श्री वीरप्रभु का सत्तावीश भव

दोहा (राग: कबीर के दोहे)

श्री शुभविजय सुगुरु नमी, नमी पद्मावती माय,
भव सत्तावीश वर्णवुं, सुणतां समकित थाय ।।1 ।।

समकित पामे जीवने, भव गणतीय गणाय,
जो वली संसारे भमे, तो पण मुगते जाय ।।2 ।।

वीर जिनेश्वर साहिबो, भमीयो काल अनंत,
पण समकित पाम्या पछी, अंते थया अरिहंत ।।3 ।।

।।ढाल पहली।। (राग: मायन मायन)

पहले भवे एक गामनो रे, राय नामे नयसार,
काष्ट लेवा अटवी गयो रे, भोजन वेला थाय रे,
प्राणी धरीये समकित रंग, जिम पामीये सुख अभंग रे, ।।1 ।।

मन चिंते महिमा नीलो रे, आवे तपसी कोय,
दान देइ भोजन करूं रे, तो वांछित फल होय रे, ।।2 ।।

मारग देखी मुनिवरा रे, वंदे देइ उपयोग,
पूछे केम भटको इहां रे, मुनि कहे सार्थ वियोग रे, ।।3 ।।

हर्ष भेर तेडी गयो रे, पडिलाभ्या मुनिराज,
भोजन करी कहे चालीए रे, सार्थ भेला करूं आज रे, ।।4 ।।

पगवटीए भेला कर्या रे, कहे मुनि द्रव्य ए मार्ग,
संसारे भूला भमो रे, भाव मार्ग अपवर्ग रे, ।।5 ।।

देव गुरु ओलखावीया रे, दीधो विधि नवकार,
पश्चिम महाविदेहमां रे, पाम्या समकित सार रे, ।।6 ।।

शुभ ध्याने मरी सुर हुओ रे, पहले स्वर्ग मोझार,
पल्योपम आयु चवी रे, भरत घरे अवतार रे, ।।7 ।।

नामे मरीची यौवने रे, संयम लीये प्रभु पास,
दुष्कर चरण लही थयो रे, त्रिदंडीक शुभ वास रे, ।।8 ।।

।।ढाल दूसरी।। (राग: हे मेरे वतन के लोगो)

नवो वेश रचे तेणी वेला, विचरे आदिश्वर भेला,
जल थोडे स्नान विशेषे, पग पावडी भगवे वेशे ।।1 ।।

धरे त्रिदंड लाकडी म्होटी, शिर मुडंण ने धरे चोटी,
वली छत्र विलेपन अंगे, थूलथी व्रत धरतो रंगे ।।2 ।।

सोनानी जनोई राखे, सहुने मुनि मारग भाखे,
समोसरणे पूछे नरेश, कोइ आगे होशे जिनेश ।।3 ।।

जिन जंपे भरतने ताम, तुज पुत्र मरीची नाम,
वीर नामे थशे जिन छेल्ला, आ भरते वासुदेव पहेला ।।4 ।।

चक्रवर्ती विदेहे थाशे, सुणी आव्या भरत उल्लासे,
मरीचि ने प्रदक्षिणा देता, नमी वंदीने एम कहेता ।।5 ।।

तमे पुन्याइवंत गवाशो, हरि चक्री चरम जिन थाशो,
नवि वंदु त्रिदंडिक वेश, नमुं भक्तिए वीर जिनेश ।।6 ।।

एम स्तवना करी घेर जावे, मरीचि मन हर्ष न मावे,
म्हारे त्रण पदवी नी छाप, दादा जिन चक्री बाप ।।7 ।।

अमें वासुदेव धुर थइशुं, कुल उत्तम म्हारूं कहीशुं,
नाचे कुल मदशुं भराणो, नीच गोत्र तिहां बंधाणो ।।8 ।।

एक दिन तनु रोगे व्यापे, कोई साधु पानी न आपे,
त्यारे वंछे चेलो एक, तव मलियो कपिल अविवेक ।।9 ।।

देशना सुणी दीक्षावासे कहे मरीची लीयो प्रभु पासे,
राजपुत्र कहे तुम पासे, लेशुं अमें दीक्षा उल्लासे ।।10 ।।

तुम दरशने धरमनो व्हेम, सुणी चिंते मरीची अेम,
मुज योग्य मल्यो ए चेलो, मूल कडवे कडवो वेलो ।।11 ।।

मरीची कहे धर्म उभयमां, लीए दीक्षा यौवन वयमां,
एणे वचणे वध्यो संसार, अे त्रीजो कह्यो अवतार ।।12 ।।

लाख चौराशी पूरव आय, पाली पंचमे स्वर्ग सधाय,
दश सागर जीवित त्यांही, शुभवीर सदा सुखदाई ।।13 ।।

।।ढाल तीसरी।। (राग: तुम दिल की धडकन में)

पांचवे भव कोल्लाग सन्निवेश, कौशिक नामें ब्राह्मण वेश,
एंशी लाख पूरव अनुसरी, त्रिदंडियाने वेशे मरी ।।1 ।।

काल बहु भमियो संसार, थुणापुरी छठ्ठो अवतार,
बहोंतेर लाख पूरव नु आय, विप्र त्रिदंडिक वेश धराय ।।2 ।।

सौधर्म मध्य स्थितिअे थयो, आठमे चैत्य सन्निवेशे गयो,
अग्निद्योत द्विज त्रिदंडिओ, पूर्व आयु लाख साठे मुओ ।।3 ।।

मध्य स्थितिअे स्वर्ग सुर इशान, दशमे मंदिर पुर द्विज ठाण,
लाख छप्पन्न पूरवायुधरी, अग्निभूति त्रिदंडीक मरी ।।4 ।।

त्रीजे स्वर्गे मध्यायु धरी, बारमे भवे श्वेताम्बीपुरी,
पुरवलाख चुम्मालीश आय, भारद्वाज त्रिदंडिक थाय ।।5 ।।
तेरमे चोथे स्वर्गे रमी, काल घणो संसारे भमी,
चौदमे भव राजगृही जाय, चोत्रीस लाख पूरवने आय ।।6 ।।
थावर विप्र त्रिदंडी थयो, पांचमे स्वर्गे मरीने गयो,
सोलमे भवे क्रोड वरस नुं आय, राजकुमार विश्वभूति थाय ।।7 ।।
संभूति मुनि पासे अणगार, दुष्कर तप करी वरस हजार,
मासखमण पारणे धरी दया, मथुरामां गोचरीअे गया ।।8 ।।
गाय हण्या मुनि पडिया वशा, विशाखानंदी पितरीया हस्या,
गोशृंगे मुनि गर्वे करी, गगण उछाली धरती धरी ।।9 ।।
तप बलथी होजो बल धणी, करी नियाणुं मुनि अणसणी,
सत्तरमे महाशुक्रे सुरा, श्री शुभवीर सागर सत्तरा ।।10 ।।

।। ढाल चौथी ।।

(राग : क्या खूब लगती हो..., आगे के तीन आंखडी मारी प्रभु)

अढारमे भवे सात, सुपन सूचित सती,
पोतन पुरीए प्रजापति, रानी मृगावती,
तस सुत नामे त्रिपृष्ठ, वासुदेव निपन्या,
पाप घणुं करी, सातमी नरके उपन्या ।।1 ।।

वीशमे भव थई सिंह, चौथी नरके गया,
तिहांथी चवी संसारे, भव बहुला थया,
बावीशमे नरभव लही, पुण्यदशा वर्या,
तेवीशमे राजधानी, मूकामे संचर्या ।।2 ।।

राय धनंजय धारणी, रानीए जनमीया,
लाख चौराशी पूर्व आयु जीवियां,
प्रियमित्र नामे चक्रवर्ती, दीक्षा लही,
कोडी वरस चारित्र दशा पाली सही ।।3 ।।

महाशुक्रे थई देव, इणे भरते चवि,
छत्रिका नगरीए, जितशत्रु राजवी,
भद्रामाय लख पचवीश, वरस स्थिति धरी,
नंदन नामे पुत्रे दीक्षा आचरी ।।4 ।।

अगीयार लाख ने अेंशी, हजार छस्से वली,
उपर पीस्तालीश, अधिक पण मन रूली,
वीशस्थानक मासखमणे, जावज्जीव साधता,
तीर्थंकर नामकर्म, तिहां निकाचता ।।5 ।।

लाख वरस दीक्षा, पर्याय ते पालता,
छव्वीसमे भवे प्राणतकल्पे देवता,
सागर वीशनुं जीवित सुखभर भोगवें,
श्री शुभवीर जिनेश्वर भव सुणजो हवे ।।6 ।।

।। ढाल पांचमी ।। (राग : झणझणणकारो रे...)

नयर माहणकुडमां वसेरे, महात्रद्धि ऋषभदत्त नाम,
देवानंदा द्विज श्राविकारे, पेट लीधो प्रभु विसराम रे, पेट लीधो ।।1 ।।

ब्याशी दिवसने अंतरे रे, सुर हरणीगमेषी आय,
सिद्धारथ राजा घरे रे, त्रिशला कूखे छटकाय रे, त्रिशला ।।2 ।।

नव मासांतरे जनमीया रे, देव देवीए ओच्छव कीध,
परणी यशोदा यौवने रे, नामे महावीर प्रसिद्ध रे, नामे ।।3 ।।

संसार लीला भोगवी रे, त्रीस वर्षे दीक्षा लीध,
बार वरसे हुआ केवली रे, शिववहुनुं तिलक सिर दीध रे, शिववहुनुं ।।4 ।।

संघ चतुर्विध थापियो रे, देवानंदा ऋषभदत्त प्यार,
संयम देई शिव मोकल्या रे, भगवती सूत्रे अधिकार रे, भगवती ।।5 ।।

चोत्रिस अतिशय शोभता रे, साथे चउद सहस अणगार,
छत्रीस सहस ते साध्वी रे, बीजो देव देवी परिवार रे, बीजो ।।6 ।।

त्रीस वरस प्रभु केवली रे, गाम नगर ते पावन कीध,
बहोंतेर वरसनुं आउखुं रे, दीवालीए शिवपद लीध रे, दीवालीये ।।7 ।।

अगुरुलघु अवगाहने रे, कीयो सादि अनंत निवास,
मोहराय मल्ल मुलशुं रे, तन मन सुखनो होय नाश रे, तन मन ।।8।।

तुम सुख एक प्रदेश नुं रे, नवि माये लोकाकाश,
तो अमने सुखीआ करो रे, अमे धरीए तुमारी आश रे, अमे ।।9।।

अखय खजानो नाथनो रे, मे दीठो गुरु उपदेश,
लालच लागी साहेबा रे, नवि भजीये कुमतिनो लेश रे, नवि भजीये ।।10।।

म्होटानो जे आशरो रे, तेथी पामीये लील विलास,
द्रव्य भाव शत्रु हणी रे, शुभवीर सदा सुख वास रे, शुभ वीर ।।11।।

।। कलश ।।

ओगणीश एके, वरस छेके, पूर्णिमा श्रावण वरो,
में थुण्यो लायक विश्वनायक, वर्द्धमान जिनेश्वरो,
संवेग रंग तरंग झीले, जसविजय समता धरो,
शुभविजय पंडित चरण सेवक, वीरविजय जयकरो ।।12।।

सज्झाय : आप स्वभाव की सज्झाय

आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगन में रहना,
जगतजीव है कर्माधीना, अचरिज कछुअ न लीना आ. ।।1

तुम नहीं केरा, कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा,
तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सब हे अनेरा आ. ।।2।।

वपु विनाशी, तुं अविनाशी, अब हे इनका विलासी,
वपुसंग जब दूर निकासी, तब तुम शिव का वासीआ. ।।3।।

राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःख का दीसा,
जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जग का इसा आ. ।।4

पर की आशा सदा निराशा, ये हे जगजनपासा,
ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा. आ. ।।5

कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी
कबहीक जग में कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी आ. 6

पर्युषण दिवस–5 काव्य

चैत्यवंदन –सिद्धारथ सुत वंदिये...

सिद्धारथ सूत वंदिये, त्रिशलानो जायो
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो... ।।1।।

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया,
बहोंतर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ... ।।2।।

खिमाविजय जिनरायना अे, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्या, पद्मविजय विख्यात... ।।3।।

स्तुति : जय जय भवि हितकर...

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुरनरनां नायक , जेहनी सारे सेव।
करुणा रस कंदो, वंदो आणंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणी ।। 1 ।।

जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे ,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे।
ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण,
सवि जिनवर केरा, ए पांचे अहिठाण ।। 2 ।।

जिहां पंच समिति युत, पंच महाव्रत सार,
जेहमां प्रकाश्या, वली पांचे व्यवहार।
परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञने पार,
एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार ।। 3 ।।

मातंग सिद्धाइ, देवी जिनपद सेवी,
दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नित मेवी।
शासन सुखदायी, आइ सुणो अरदास
श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वांछित आश ।। 4 ।।

श्री वीर प्रभु का हालरडा

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे, गावे हालो हालो हालरवानां गीत,
सोना रुपा ने वली रत्ने जडियुं पारणुं,
रेशम दोरी घुंघरी वागे छुम–छुम रीत,
हालो हालो हालो हालो मारा नंदने हालो ।। 1 ।।

जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अंतरे,
होशे चोवीसमो तीर्थंकर जिन परिमाण,
केशी स्वामी मुखथी एहवी वाणी सांभली,
साची साची हुई ते मारे अमृत वाण हालो ।। 2 ।।

चौदे सपने होवे चक्री के जिनराज रे,
वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रीराज।
जिनजी पास प्रभुना श्रीकेशी गणधार,
तेहने वचने जाण्या चोवीसमां जिनराज ।। हालो ।। 3 ।।

मारी कूखे आव्या त्रण भुवन शिरताज,
मारी कूखे आव्या तारण तरण जहाज,
मारी कूखे आव्या संघ तीरथनी लाज,
हूं तो पुन्य पनोती इंद्राणी थइ आज हालो ।। 4 ।।

मुझने दोहलो उपन्यो बेसुं गज अंबाडिये,
सिंहासन पर बेसुं चामर छत्र धराय।
ए सहु लक्षण मुजने नन्दन तारा तेजना,
ते दिन संभारूं ने आनंद अंग न माय हालो. ।। 5 ।।

करतल पगतल लक्षण एक हजार ने आठ छे,
तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश।
नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह बिराजतो,
में तो पहले सुपने दीठो विशवावीश हालो. ।। 6 ।।

नदन नवला बंधव नंदिवर्धनना तमे,
नंदन भोजाईयों ना दिवर छो सुकुमाल।
हसशे भोजाइयो कही दीयर माहरा लाडका ,

हसशे रमशे ने वली चूंटी खणशे गाल
हसशे रमशे ने वली ठूंसा देशे गाल, हालो. ।। 7 ।।

नंदन नवला चेडा राजा ना भाणेज छो,
नंदन नवला पाँचसे मामीना भाणेज छो।
नंदन मामलियाना भाणेजा सुकुमाल,
हससे हाथे उछाली कहीने नाना भाणेजा,
आंखों आंजीने वली टपकुं करशे गाल हालो. ।। 8 ।।

नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगला,
रत्ने जडिया झालर मोती कसबी कोर।
नीलां पीलां ने वली रातां सरवे जातनां रे,
पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर हालो. ।। 9 ।।

नंदन मामा मामी सुखलडी बहु लावशे,
नंदन गजवे भरशे लाडू मोती चूर।
नंदन मुखडा जोइने लेशे मामी भामणां,
नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर हालो. ।। 10 ।।

नंदन नवला चेडा मामानी साते सती,
मारी भत्रीजीने बेन तमारी नंद।
ते पण गजुवे भरवा लाखणसाई लावशे,
तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानन्द हालो. ।। 11

रमवा काजे लावशे लाख टकानो घुघरो रे,
वली सूडा मैना पोपट ने गजराज ।
सारस हंस कोयल तितर ने वली मोरजी रे,
मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज हालो. ।। 12 ।।

छप्पन कुमरी अमरी जल कलशे नवराविया,
नंदन तमने अमने केली घरनी माय।
फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मांडले,
बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांही हालो. ।। 13 ।।

तमने मेरुगिरि पर सुरपतिए नवराविया रे,
निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय।

मुखडा ऊपर वारु कोटी कोटी चंद्रमा,
वली तन पर वारु ग्रहगणनो समुदाय हालो. ।। 14 ।।

नंदन नवला भणवा निशालें पण मूकशुं,
गज पर अंबाडी बेसाडी मोटे साज।
पसली भरशुं श्रीफल फोफल नागर वेलशुं,
सुखलडी लेशु निशालियाने काज हालो. ।। 15 ।।

नंदन नवला मोटा थाशो ने परणावशुं,
बहुवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार।
सरखा वेवाइ वेवाणोने पधरावशुं,
वर बहु पोखी लेशुं जोई जोइने देदार हालो. ।। 16 ।।

पीयर सासर मारा बेहु पख नंदन ऊजला,
मारी कूखे आव्या तात पनोता नंद।
माहरे आंगण वुठया अमृत दूधे मेंहुला,
माहरे आंगणे फलिया सुरतरु सुखना कंद हालो. ।। 17

एणी परे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पारणुं,
जे कोई गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज्य ।
बिलीमोरा नगरे वर्णव्युं वीरनुं हालरुं,
जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज हालो. ।। 18

अइमुत्ता मुनि नी सज्झाय

(रागः दिन दुःखीयानो तु छे)

संयम रंगे रंग्यु जीवन, नानो बालकुमार
वंदो अइमुत्ता अणगार...वंदो... ।।1।।

गौतम स्वामी गोचरी जावे, नाना बालकने मन भावे,
प्रेम थकी निज घेर बोलावे, भाव धरी मोदक वहोरावे,
मारे पण गौतम सम थावुं, एम करे विचार...वंदो... ।।2।।

मननी ईच्छा पूरी कीधी, मातपितानी आज्ञा लीधी,
राज्यतणी ऋद्धिने छोडी, गौतम पासे दिक्षा लीधी,
रहे उमंगे गुरु नी संगे वहेता संयम भार ...वंदो... ।।3।।

तलावडी जलनी एक आवी, बालमुनिने मन बहु भावी,
पात्र तणी नौका खेलावी, गुरुने देखी लज्जा आवी,
अणघटतुं कारज कीधु नें, पाम्या क्षोभ अपार...वंदो... 4

समवसरणमां प्रभुजी सामे, इरियावही पडिक्कमी प्रमाणे,
चार कर्मनी गति विरामे, केवल ज्ञान तिहां मुनि पामे,
देव देवी सहु उत्सव करता, वर्त्यो जयजयकार ...वंदो.. 5

क्षणमां सघला कर्म खपाव्या, एवा अईमुत्ता मुनिराया
भव्यजीवोने बोध पमाडी, अंते मुक्तिपुरी सीधाव्या
ज्ञान विमल कहे मुनिने वंदे, थाये बडो पार ...वंदो... 6

पर्युषण दिवस–6 काव्य

चैत्यबंदन : त्रीस वरस गृहवास

त्रीस वरस गृहवास जस, त्रणे ज्ञाने स्वामी
चउनाणी चारित्रिया, निज आतम रामी ।।1।।

बार वरस उपर वली, साडा षट् मास;
घोर अभिग्रह आदर्यो, कीम कीजे तास... ।।2।।

माधव सुदि दशमी दिने, पाम्या केवलनाण,
पद्म कहे महोत्सव करो, चउविह सुर मंडाण... ।।3।।

स्तुति : आदि जिनवर राया

मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जेणे सोल पहोर देशना पभणी,
नवमल्ली नवलच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन
धणी...1

शिव पाम्य ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास
तीथे,

छट्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावस्या निरमली
अगामी भावी भाव कह्या, दिवाली कल्पे जेह लह्या
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवि तहत्ति करीने सद्दह्या..3
सवि देव मली उद्योत करे, प्रभाते गौतम ज्ञान वरे,
ज्ञानविमल सदा गुण विस्तरे, जिनशासनमां जयकार करे...4

श्री पंचकल्याणक का स्तवन (तीन ढाल का)

शासन नायक शिवकरण,वंदु वीर जिणंद,
पंच कल्याणक तेहनां, गाशुं धती आनंद,
सुणतां थुणतां प्रभु तणां,गुण गिरुआ एकतार,
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफल हुए अवतार....

पहली ढाल

सांभलजो ससनेहि सयणां, प्रभुनुं चरित्र उल्लासे रे,
जे सांभलशे प्रभु गुण तेहनां, समकित निर्मल थाशे रे,
सांभलजो ससनेहि सयणां ॥ 1 ॥

जंबुद्वीपे दक्षिण भरते,माहणकुंड गामे रे,
ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामे रे... सांभलजो ॥ 2 ॥

अषाढ सुदि छट्ठे प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी चविया रे,
उत्तरा फाल्गुनी योगे आवी, तस कुखे अवतरिया रे...
सांभलजो ॥ 3 ॥

तिणे रयणी सा देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे रे,
प्रभाते सुणी कंथ ऋषभदत्त, हियडामांहि हरखे रे सांभलजो ॥ 4 ॥

भाखे भोग अर्थ सुख होस्ये, होस्ये पुत्र सुजाण रे,
ते निसुणी सा देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाण रे सांभलजो ॥ 5 ॥

भोग भला भोगवता विचरे, एहवे अचरिज होवे रे,
शतक्रतु जीव सुरेश्वर हरख्यो, अवधिअे प्रभुने जोवे रसांभलजो ॥ 6 ॥

करी वंदनने इन्द्र सन्मुख, सात आठ डग आवे रे,

शक्रस्तव विधि सहित भणीने, सिंहासन सोहावे रे...सांभलजो ।।7।।
संशय पडियो अेम विमासे, जिन चक्री हरी राम रे,
तुच्छ दरिद्र माहण कुल नावे, उग्र भोग विण धामे रे सांभलजो ।।8।।
अंतिम जिन माहणकुंड आव्या, अेह अच्छेरु कहीये रे,
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एहवुं लहीये रे सांभलजो ।।9।।
इण अवसर्पिणी दश अच्छेरा, थयां ते कहीये तेह रे,
गर्भहरण गोसाला उपसर्ग, निष्फल देशनां जेह रे सांभलजो ।।10।।
मूल विमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात रे,
ए श्री वीर जिनेश्वर वारे, उपना पंच विख्यात रे सांभलजो ।।11।।
स्त्री तीर्थ मल्लि जिन वारे, शीतल ने हरिवंश रे,
ऋषभने अष्टोत्तर सो सिध्या, सुविधि ने असंयती संसरे सांभलजो ।।12।।
शंख शब्दो मीलिया हरि हरिस्युं, नेमीसर ने वारे रे,
तीम प्रभु नीच कुल अवतरिया, सुरपति एम विचारे रे सांभलजो ।।13।।

(ढाल बीजी)

भव सत्तावीश स्थूलमांहि त्रीजे भवे,
मरीचि कियो कुलनो मद भरत यदा स्तवे,
नीच गोत्र कर्म बांध्युं तिहां ते थकी,
अवतरीया माहण कुले, अंतिम जिनपति ...1
अति अघटतुं थयुं अेह थाशे नहि,
जे प्रसवे जिन चक्री, नीच कुले नही,
इहां मारो आचार धरुं उत्तम कुले,
हरिणगमेषी देव तेडावे अेटले ...2
कहे माहणकुंड नयरे जई उचित करो,
देवानंदा कुखेथी प्रभुने संहरो,
नयर क्षत्रियकुंड राय सिद्धारथ गेहिनी,

त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनी ...3

त्रिशला गर्भ लईने धरो माहणी उरे,
ब्याशी रात वसीने कह्युं तीम सुर करे,
माहणी देखे सुपन जाणे त्रिशला हर्या,
त्रिशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्या ...4

हाथी ऋषभ सिंह लक्ष्मी माला सुंदरुं,
शशी रवि ध्वज कुंभ पद्म सरोवर सागरुं,
देवविमान रयणपुंज अग्नि विमल हवे,
जुए त्रिशला अेह के पीयुने विनवे ...5

हरख्यो राय सुपन पाठक तेडावीया,
राज भोग सुत फल सुणी ते वधाविया,
त्रिशला राणी विधिस्युं गर्भ सुखे हवे,
माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे ...6

माय धरे दुःख घोर विलाप घणुं करे,
कहे में कीधा पाप अघोर भवांतरे,
गर्भ हर्यो मुज कोणे हवे केम पामीये,
दुःखनुं कारण जाणी विचार्युं स्वामीये ...7

अहो अहो मोह विडंबन जालिम जगत में,
अणदीठे दुःख अेवडो उपायो पलकमें,
ताम अभिग्रह धारे प्रभु ते कहुं,
माता पिता जीवतां संयम नवि ग्रहुं ...8

करुणा आणी अंग हलाव्यु जिनपति,
बोली त्रिशला माता हिये घणुं हिसती,
अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सलवल्यो,
सेव्यो श्री जैन धर्म के सुरतरु जिम फल्यो ...9

सखीय कहे शीखामण स्वामिनी सांभलो,
हलवे हलवे बोलो हसो रंगे चलो,
इम आनंदे विचरतां दोहला पुरता,

नव महिना ने साडा सात दिवस थता ...10

चैत्र तणी सुदि तेरस नक्षत्र उत्तरा,
जोगे जनम्या वीर के तव विकसी धरा,
त्रिभुवन थयो उद्योत के रंग वधामणा,
सोना रुपानी वृष्टि करे घेर सुर घणा ...11

आवी छप्पन कुमारी के ओच्छव प्रभु तणे,
चल्युं रे सिंहासन इंद्र के घंटा रणझणे,
मली सुरनी कोड के सुरवर आवीयो,
पंच रुप करी प्रभुने सुरगिरि लावीयो ...12

एक क्रोड साठ लाख कलश जलशुं भर्या,
किम सहेस्ये लघु वीर के इंद्र संशय धर्या,
प्रभु अंगुठे मेरु चांप्यो अति गडगडे,
गडगडे पृथ्वी लोक के जगतना लडथडे ...13

अनंत बली प्रभु जाणी इंद्रे खमावियो,
चार वृषभनां रुप करी जल नामीयो,
पूजी अर्ची प्रभु माय पास धरे,
अंगुठे अमृत वाही गया नंदीश्वरे ...14

ढाल त्रीजी

करी महोत्सव सिद्धारथ भूप, नाम धरे वर्धमान रे,
दिन दिन वाधे प्रभु सुरतरु जिम, रुपकला असमान रे..हमचडी ।।1।।

एक दिन प्रभुजी रमवा कारण, पूर बाहिर जावे रे,
इंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वी सुर आवे रे..हमचडी ।। 2 ।।

अहि रुप विंटाणो तरस्यों, प्रभुअे नाख्यो उछाली रे,
सात ताडनुं रुप कर्युं तव, मुठे नाख्यो वाली रे..हमचडी ।। 3 ।।

पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर रे,
जेवो इंद्रे वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीर रे..हमचडी...।। 4 ।।

माता–पिता निशाले मुके, आठ वरसना जाणी रे,

इंद्र तणा तिहां संशय टाल्या, नव व्याकरण वखाणी रे..हमचडी ।।5।।
अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदा राणी रे,
अट्ठावीस वरसे प्रभुनां माता–पिता निर्वाणी रे..हमचडी... ।। 6 ।।
दोय वरस भाईने आग्रह, प्रभु घर वासे वसीया रे,
धर्म पंथ देखाडो इम कहे, लोकांतिक उल्लसीया रे..हमचडी ।। 7 ।।
एक क्रोड आठ लाख सोनैया, दिन दिन प्रभुजी आपे रे,
इम संवत्सरी दान देईने जगना दारिद्र कापे रे ..हमचडी ।। 8 ।।
छोड्यां राज अंतेउर प्रभुजी, भाई अनुमति दीधी,
मृगशीर वद दसमी उत्तराये, वीरे दीक्षा लीधी रे..हमचडी ।। 9 ।।
चउनाणी तिण दिनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझे रे,
चिवर अर्ध ब्राह्मणने दीधुं, खंड खंड बे फेरी रे..हमचडी ।। 10 ।।
घोर–परिसह साडा बार, वरस जे जे सहिया रे,
घोर अभिग्रह जे जे धरिया, ते नवि जाये कहीया रे..हमचडी.। 11 ।।
शूलपाणि ने संगम देवे, चंडकोशीक गोशाले रे,
दीधुं दुःख ने पायस रांधी, पग उपर गोवाले रे ..हमचडी ।। 12 ।।
काने गोपे खीला मार्या,काढतां मूकी राटी रे,
जे सांभलतां त्रिभुवन कंप्या, पर्वत शिला फाटी रे हमचडी ।।13।।
ते ते दुष्ट सहु उद्धरिया प्रभुजी पर उपगारी रे,
अडद तणा बाकुला लईने, चंदनबाला तारी रे ..हमचडी ।।14।।
दोय छ मासी नव चउमासी, अढीमासी त्रणमासी रे,
दोढ मासी बे बे कीधां, छ कीधां बे मासी रे ..हमचडी ।।15।।
बार मासी ने पख बहोंतेर, छट्ठ बसे ओगणतीस वखाणुं,
बार अट्ठम भद्रादि प्रतिमा, दिन दोई चार दश जाणुं रे हमचडी ।।16।।
इम तप कीधां बारे वरसे, वीण पाणी उल्लासे रे,
तेमां पारणां प्रभुजीअे कीधा, त्रणसे ओगण पचास रे..हमचडी ।।17।।
कर्म खपावी वैशाख मासे, सुद दशमी शुभ जाण रे,
उत्तरा योगे शालि वृक्ष तले, पाम्या केवलनाण रे..हमचडी ।।18।।
इंद्रभूति आदि प्रतिबोध्या, गणधर पदवी दीधी,

साधु–साध्वी श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधी रे ..हमचडी ।।19।।
चउद सहस अणगार, साध्वी सहस छत्तीस कहीजे रे,
एक लाख ने सहस गुणसठ, श्रावक शुद्ध कहीजे रे..हमचडी ।।20।।
तीन लाख अढार सहस वली, श्राविका संख्या जाणी रे,
त्रणसे चउद पूर्वधारी, तेरसे ओहीनाणी रे ..हमचडी ।।21।।
सात सयां ते केवलनाणी लब्धिधारी पण तेता,
विपुल मतिया पांचसे कहीया, चारसे वादी जित्या रे..हमचडी ।।22।।
सातसे अंतेवासी सिध्यां, साध्वी चउदसे सार रे,
दिन दिन तेज सवाये दीपे, प्रभुजीनो परिवार रे..हमचडी ।।23।।
त्रीस वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे रे,
त्रीस वरस केवल बेंतालीस, वरस श्रमण मध्ये रे..हमचडी ।।24।।
वरस बहोंत्तेर केरुं आयु, वीर जिणंदनुं जाणो रे,
दिवाली दिने स्वाती नक्षत्रे, प्रभुजीनुं निर्वाण रे..हमचडी ।।25।।
पंच कल्याणक एम वखाण्या, प्रभुजीना उल्लासे रे,
संघ तणो आग्रह हरख धरीने, सुरत रही चोमासुं रे..हमचडी।।26।।

कलश

इम चरम जिनवर सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी,
अषाढ उज्जवल पंचमी दिन, संवत सत्तर त्रिहोतरे,
(भादरवा सुद पडवा तणे दिन रविवार उलट भरी)
विमल विजय उवज्झाय पदकज, भ्रमर सम शुभ शिष्य अे,
रामविजय जिनवर नामे, लहे अधिक जगीश अे ।।

सज्झाय : कडवा फल छे क्रोधना

कडवां फल छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले;
रीसतणो रस जाणीए, हलाहल तोले... ।। क.1 ।।
क्रोधे क्रोड पूरवतणुं, संजम फल जाय;
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय... ।। क. 2
साधु घणो तपीयो हतो, धरतो मन वैराग;

शिष्यना क्रोधथकी थयो, चंडकोशीओ नाग... ।। क. 3

आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाले;
जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले... ।। क. 4

क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवल नाणी;
हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी... ।। क. 5 ।।

उदयरत्न कहे क्रोधने , काढजो गले साही;
काया करजो निर्मली, उपशम रसे नाही... ।। क. 6 ।।

पर्युषण दिवस-७ काव्य

दुसरे दिवस की तरह ही यहाँ सारे काव्य कहना

पेज नं .204

पर्युषण दिवस-८ काव्य

सारे काव्य विधिवत् संवत्सरि प्रतिक्रमण में दिये हुए है ।

काव्य संग्रह

चैत्यवंदन : श्री सीमंधर ! जगधणी !

श्री सीमंधर ! जगधणी !, आ भरते आवो,
करूणावंत करूणाकरी अमने वंदावो ।। 1 ।।

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ,
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ ।। 2 ।।

सयल संग छंडी करी , चारित्र लेईशुं,
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं ।। 3 ।।

ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव,
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव ।। 4 ।।

कर जोडीने विनंवु, सामो रही ईशान,
भाव जिनेश्वर भाणने, देजो समकित दान ।। 5 ।।

चैत्यवंदन : श्री सीमंधर परमात्मा...

श्री सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ;
पुक्खलवई विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ 1 ॥

पूर्वविदेह पुंडरीगिणी, नयरीए सोहे ;
श्री श्रेयांसराजा तिहां, भवियणनां मन मोहे ॥ 2 ॥

चौद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ;
कुंथु–अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर जात ॥ 3 ॥

अनुक्रमे प्रभु जनमीया, भर यौवन पावे ;
मात–पिता हरखे करी रूक्मणी परणावे ॥ 4 ॥

भोगवी सुख संसारनां, संयम मन लावे ;
मुनिसुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ॥ 5 ॥

घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवलनाण;
ऋषभ लंछने शोभता, सर्व भावना जाण ॥ 6 ॥

चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो क्रोड ;
त्रण भुवनमां जोवतां, नहिं कोई एहनी जोड ॥ 7 ॥

दश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार ;
एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ 8 ॥

उदय पेढाल जिन अंतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ;
जसविजय गुरू प्रणमतां, शुभ वांछित फल लीध ॥ 9 ॥

चैत्यवंदन : वंदु जिनवर विहरमान...

वंदु जिनवर विहरमान, सीमंधर स्वामी;
केवल कमला कान्त दान्त, करुणा रस धामी ॥1॥

कञ्चन गिरिसम देहकान्त, ऋषभ लच्छनपाय;
चौरासी पूर्व लाख आय, सेवित सुर राय ॥2॥

छट्ठ भत्त संयम लियो ए, पुण्डरीगिणी भाण;

प्रभु दो दर्शन संपदा, कारण परम कल्याण ।।3।।

चैत्यवंदन–सिद्धाचल विमल–केवल–ज्ञान...

विमल–केवल–ज्ञान –कमला–कलित ! त्रिभुवन–हितकरं।
सुरराज–संस्तुत–चरणपंकज ! नमो आदि जिनेश्वरं ।। 1

विमल–गिरिवर– शृंग– मंडण–प्रवर–गुणगण–भूधरं।
सुर–असुर–किन्नर–कोडि – सेवित नमो आदि जिनेश्वरं ।।

करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं।
निर्जरावली नमे अहोर्निश, नमो आदि जिनेश्वरं ।। 3 ।।

पुंडरीकगणपति सिद्धि साधित, कोडि पण मुनि मनहरं।
श्री विमलगिरिवर शृंग सिद्धा,नमो आदि जिनेश्वरं ।। 4 ।।

निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोटिनंत ए गिरिवरं।
मुक्तिरमणी वर्या रंगे, नमो आदि जिनेश्वरं ।। 5 ।।

पाताल–नर सुरलोकमांहि, विमल–गिरिवर तो परं।
नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे,नमो आदि जिनेश्वरं ।।6।।

ईम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःखविहंडण ध्याइये।
निज–शुद्ध–सत्ता–साधनार्थं, परमज्योति निपाइयें ।।7।।

जित–मोह–कोह–विछोह–निद्रा, परमपदस्थिति जयकरं।
गिरिराज–सेवा–करणतत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ।।8।।

चैत्यवंदन–सिद्धाचल श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र...

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, पुंडरीकगिरि साचो;
विमलाचले तीर्थराज, जस महिमा जाचो... ।।1।।

मुक्तिनिलय शतकूट नाम, पुष्पदंत भणीजे;
महापद्म ने सहस्त्रपत्र, गिरिराज कहीजे... ।।2।।

इत्यादिक बहु भातशुं ऐ, नाम जपो निरधार;
धीरविमल कविराजनो, शिष्य कहे सुखकार... ।।3।।

चैत्यवंदन–सिद्धाचल ऋषभनी प्रतिमा मणिमयी...

ऋषभनी प्रतिमा मणिमयी, भरतेश्वरे कीधी
ते प्रतिमा छे इणगिरि, अेह वात प्रसिद्धि... ।।1।।
देखे दरिसण कोई जास, मानव इह लोके
त्रीजे भव जे मुक्ति योग्य, नर तेह विलोके... ।।2।।
स्वर्ण गुफा पश्चिम दिशिअे, अे छे जास अहिठाण
दान सुहंकर विमलगिरि, ते प्रणमुं हित आण... ।।3।।

थोय सीमंधरस्वामी– महाविदेह क्षेत्रमां

महाविदेह क्षेत्रमां श्री सीमंधर स्वामी, सोनानुं सिंहासनजी,
रूपानां त्यां छत्र बिराजे, रत्नमणिना दीवा दीपेजी,
कुंकुमवर्णी त्यां गहुंली बिराजे, मोतिना अक्षत सारजी,
त्यां बेठा सीमंधर स्वामी, बोले मधुरी वाणीजी,
केसर चंदन भर्यां कचोलां, कस्तूरी बरासोजी,
पहेली पूजा अमारी होजो, उगमते प्रभाते जी. ।।1।।

थोय सीमंधर मुजने

श्री सीमंधर मुजने व्हाला, आज सफल सुविहाणुं जी,
त्रिगडे तेजे तपता जिनवर, मुज तुठा हुं जाणुं जी,
केवल कमला केली करतां, कुलमंडण कुल दीवो जी
लाख चोरासी पूरव आयु, रुक्मणी वर घणुं जीवो जी...।।1।।

थोय सीमंधरस्वामीजी सौ क्रोड साधु

सौ क्रोड साधु,सौ क्रोड साध्वी जाण,
ऐसे परिवारे सीमंधर भगवान ।।
दश लाख कह्या केवली प्रभुजी नो परिवार,
वाचक जश वंदे नित्य नित्य वार हजार ।। ।।1।।
सिद्धाचलजी की थोय

थोय सिद्धाचलजी सवि मली करी आवो...

सवि मली करी आवो, भावना भव्य भावो,
विमलगिरी वधावो, मोतीया थाल लावो,
जो होय शिवजावो, चित्त तो वात भावो,
न हो दुश्मन दावो, आदि पूजा रचावो... ।।1।।

थोय सिद्धाचलजी आगे पूरव वार नवाणुं...

आगे पूरव वार नवाणुं, आदि जिनेसर आयाजी,
शत्रुंजय लाभ अनंतो जाणी, वंदु तेहना पायाजी,
जगबंधव जगतारण अे गिरि, दीठे दुर्गति वारेजी,
यात्रा करतां छःरी पाले, काज पोताना सारेजी... ।।1।।

थोय सिद्धाचलजी सीमंधर ने पूंछे इंदा...

सीमंधर ने पूंछे इंदा, विनतडी अवधारोजी
भरत क्षेत्रमा वडु कुण तीरथ, ते मुझने निरधारोजी
वलतो श्री जिनमुखे, इम भाखे, सुण इंदा मुज वातजी
सकल तीर्थमां श्री शंत्रुजय, तिहां भरतेसर तातजी

थोय सिद्धाचलजी श्री शत्रुंजय तीरथ सार

श्री शत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मरु उदार, ठाकुर राम अपार,
मंत्र माहे नवकार ज जाणुं, तारा मां जेम चंद्र वखाणुं, जलधर जलमां जाणुं,
पंखीमां जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जेम ऋषभनो वंश, नाभितणो ए अंश,
क्षमावंतमां श्री अरिहंत,तपशूरा मां मुनिवर महंत, शत्रुंजय गिरी गुणवंत.1

स्तवन सीमंधरस्वामी तमे महाविदेहमां जइने

तमे महाविदेहमां जईने कहेजो चांदलीया (2)
कहेजो चांदलीया सीमंधर तेडा मोकले,

तमे भरतक्षेत्रना दुःख कहेजो चांदलीया सीमंधर तेडा मोकले ।।
अज्ञानता तो छवाई रही छे, तत्त्वनी वात तो भूलाई रही छे,
हां रे एवा आत्माना दुःख मारां कहेजो चांदलीया...2 सीमंधर तेडा
पुद्गलना मोहमां फसाई गयो छूं, कर्मोनी जालमां जकडाइ गयो छूं,
हां रे ऐवा कर्मोनां दुःख मारां कहेजो चांदलीया.. सीमंधर
मारु न हतुं तेने मारुं कही मान्युं, मारुं हतुं तेने ना हि पिछाण्युं,
हां रे एवा मूर्खताना दुःख मारां कहेजो चांदलीया.. सीमंधर
सीमंधर सीमंधर हृदयमां धरतो, प्रत्यक्ष दर्शननी आशा हुं राखतो,
हां रे एवा वियोगना दुःख मारां कहेजो चांदलीया.. सीमंधर
संसार नुं सुख मने कारमुंज लागे, तारा बिना बात कहुं कोनी रे आगे,
हां रे एवा वीरविजयनां दुःख मारां कहेजो चांदलीया.. सीमंधर

स्तवन सीमंधरस्वामी पुक्खलवई विजये ...

पुक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार;
श्री सीमंधर साहिबा! रे, राय श्रेयांस कुमार!,
जिणंदराय ! धरजो धर्मस्नेह... ।।1।।

मोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत;
शशि दरिशण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत... ।।2।।

ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वरसंत जलधार;
कर दोय कुसुमे वासिये रे, छाया सवि आधार... ।।3।।

राय ने रंक सरीखा गणे रे, उद्योते शशी सूर;
गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर... ।।4।।

सरीखा सहु ने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज;
मुझशुं अंतर किम करो रे !, बाह्य ग्रह्यानी लाज... ।।5।।

मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण;
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण... ।।6।।

वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन रूक्मिणी कंत;
वाचकयश एम विनवे रे, भयभंजन भगवंत... ।।7।।

स्तवन सीमंधरस्वामी प्यारा सीमंधरस्वामी...

(राग: सिद्धाचलना वासी...)

प्यारा सीमंधरस्वामी, तमे मुक्तिना गामी,
विदेहवासी, विहरमानने वंदन हमारा;
तने मलवा तलशुं, मने प्रीती तेशुं.. ।।1।।

चाले मनमां तारो एक जाप, तोये पजवे त्रिवेदी ताप;
आधि व्याधि वारो, उपाधिथी तारों.. ।।2।।

मने समवसरणमां बोलावो, मीठी मधुरी वाणी सुणावो;
मोह तिमिर टालो, मिथ्यात्वने बालो.. ।।3।।

थाये दर्शन तमारा पवित्र, तमे जगगुरु जगमित्र;
प्रभु जगना बंधु, तने भावे वंदुं .. ।।4।।

तमे श्रेयांसराय कुलचंदा, सती सत्यकी माताना नंदा;
तमे जन मन रंजन, आंजो ज्ञान अंजन.. ।।5।।

सुण महाविदेह वासी वहाला, हुं भावे करुं छु काला वाला;
ज्ञानविमल गुण गाता, भवथी पार उतारता.. ।।6।।

स्तवन सिद्धाचलजी विमलाचल नितु वंदीए...

(राग: ते दिन क्यारे आवशे....)

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा;
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा... ।।1।।
उज्जवल जिन गृह मंडली, तिहां दीपे ऊत्तंगा;
मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा... ।।2।।
कोई अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले;
एम श्री मुख हरि आगले, श्री सीमंधर बोले.. ।।3।।

जे सघलां तीरथ कर्या, यात्रा फल कहीए;
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहीए... ।।4।।

जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे;
सुजशविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे... ।।5।।

स्तवन सिद्धाचलजी सिद्धाचलना वासी...

सिद्धाचलना वासी, विमलाचलना वासी,
जिनजी प्यारा, आदिनाथ ने वंदन हमारा...
प्रभुजीनुं मुखडु मलके, नयनों माथी वरसे,
अमीरस धारा... आदिनाथ ।।1 ।।

प्रभुजीनुं मुखडु छे मलको मिलाकर, दिल में भक्ति की
ज्योति जगाकर, भजीले प्रभुने भावे, दुर्गति कदी न आवे,
जिनजी प्यारा... ।।2।।

भमीने लाख चौराशी हुँ आव्यो, पुण्ये दर्शन तमारा हु पाम्यो,
धन्य दिवस मारो, भवना फेरा टालो, जिनजी प्यारा... ।।3।।

अमे तो मायाना विलासी, तुमे तो मुक्ति पुरीना वासी,
कर्मबंधन कापो, मोक्ष सुख आपो, जिनजी प्यारा .... ।।4।।

अरजी उरमाँ धरजो हमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तमारी,
कहे हर्ष हवे, साचा स्वामी तमे, पूजन करीये अमें, जिनजी प्यारा... ।।5।।

स्तवन सिद्धाचलजी ऊँचा ऊँचा शत्रुंजयना शिखरो

(राग: मेरा जीवन कोरा कागज)

ऊँचा ऊँचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय,
वच्चे मारा दादा केरा देरा जगमग थाय...!
दादा तारी यात्रा करवा, मारुं मन ललचाय,
तलेटीए शीश नमावी, चढता लागुं पाय,
पावन गिरिनो स्पर्श थाता, पापो दूर पलाय... ।।1।।

लीली लीली झाडीओमां, पंखी करे कलशोर,
सोपान चढतां चढतां जाणे, हैयुं अषाढी मोर,

कांकरे कांकरे सिद्धया अनंता, लली लली लागुं पाय...।।2।।

पहेली आवे रामपोलने, त्रीजी वाघणपोल,
शांतिनाथना दर्शन करतां, पहोंच्या हाथीपोल,
सामे मारा...दादा केरा दरबार देखाय... ।।3।।

दोडी दोडी आवुं दादा तारा, दर्शन करवा आज,
भाव भरेली भक्ति करीने, सारु आतम काज,
मरुदेवाना...नंदन नीरखी, जीवन पावन थाय... ।।4।।

क्षमा भावे ओमकार पदनो, नित्य करीश हुं जाप,
दादा तारा गुणला गातां, कापीश भवना पाप,
पद्मविजयने हैये आजे, आनंद उभराय... ।।5।।

स्तवन आदिनाथजी : माता मरूदेवीना नंद

(रागः दादा आदेश्वरजी दूरथी आव्यो...)

माता मरूदेवीना नंद, देखी ताहरी मूरति मारूं मन लोभाणुंजी,
करूणानागर करूणासागर, काया कंचनवान,
धोरी लंछन पाउले कांई, धनुष्य पांचशे मान... माता ।।1 ।।

त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार,
जोजनगामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार... ।।2 ।।
उर्वशी रूडी अपच्छरा ने, रामा छे मन रंग,
पाये नेउर रणझणे कांई, करती नाटारंभ... माता।।3 ।।

तुं ही ब्रह्मा, तुं ही विधाता, तुं जगतारणहार,
तुज सरीखो नहि देव जगतमां, अडवडिया आधार.. ।।4 ।।

तुं ही भ्राता तुं ही त्राता, तुं ही जगतनो देव,
सुरनर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव... माता।।5 ।।

श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद,
कीर्ति करे माणेकमुनि ताहरी, टालो भवभय फंद... ।।6 ।।

स्तवन : महावीरस्वामीजी सिद्धारथ ना रे नंदन विनवुं...

(राग: मेरा जीवन कोरा कागज...)

सिद्धारथ ना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार;
भवमंडपमां रे नाटक नाचीयो, हवे मुज दान देवराव... 1

त्रण रतन मुज आपो तातजी, जेम नावे रे संताप;
दान दियंता रे प्रभु कोसर कीसी, आपो पदवी रे आप... 2

चरण अंगूठे मेरु कंपावियो, मोड्यां सुरनां रे मान;
अष्ट कर्मना रे झगडा जीतवा, दीधां वरसी रे दान... 3

शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला कूखे रतन;
सिद्धारथनो रे वंश दीपावीयो, प्रभुजी तूमे धन्य धन्य... 4

वाचकशेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय;
धर्मतणा एह जिन चोवीशमा, विनयविजय गुण गाय... 5

स्तवन पार्श्वनाथजी हे प्रभु पार्श्व चिंतामणी मेरो

(राग: जिन ! तेरे चरण की शरण ग्रहुँ)

हे प्रभु पार्श्व चिंतामणी मेरो...मेरो प्रभु...!
पार्श्व चिंतामणी मेरो...!
मिल गयो हीरो, मिट गयो फेरो ,
नाम जपु नित्य तेरो तेरो ।।1 ।।
प्रीत बनी अब, प्रभुजी सुं प्यारी,
जैसे चंद चकोरो चकोरो. ।।2।।
आनंदघन प्रभु ! चरण शरण है,
दीयो मोहे मुक्ति को डेरो डेरो... ।।3।।

स्तवन पार्श्वनाथजी तमे बोलो बोलो ने पारसनाथ

तमे बोलो बोलो ने पारसनाथ, बालक तमने बोलावे
तमे आंखड़ी खोलो ने अेक बार, बालक तमने बोलावे...।।1।।
मारा करेलां कर्मो आजे नड्या, मारा अवला ते लेख कोणे

लख्या मारा प्रगट्या छे पूर्वना पाप तमने...॥2॥
कंठ सूकायो मुखेथी बोलातुं नथी, श्वास रुंधायो आँखे थी
देखातु नथी हुँ तो रडु छुं हैया धार तमने...॥3॥
मारी आशा नो दीपक बुझाई गयो, चारे कोर अंधकार छवाई
गयो मारा जीवन मां पड़ी हड़ताल तमने...॥4॥
तमे शांतिनी गोद मां पोढी गया, तरछोडी जता केम न आवी दया
हवे क्या सुधी करशो विश्राम ? बालक तमने ...॥5॥
मारा भक्तिना भाव कोण पूछे ? मारी आँखो ना आँसु कोण लूछे ?
ज्ञानविमल सदा गुण गाय बालक तमने ...॥6॥

सज्झाय विभाग : माननी सज्झाय

(राग: विमलाचल नितु वंदिये...)

रे जीव! मान न कीजीए, माने विनय न आवे रे;
विनय बिना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे? ॥1॥
समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे;
मुक्तिना सुख छे शाश्वतां, ते केम लहीअे जुक्ति रे... ॥2॥
विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे;
माने गुण जाये गली, प्राणी जोजो विचारी रे... ॥3॥
मान कर्युं जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे;
दुर्योधन गरवेकरी, अंते सवि हार्यो रे... ॥4॥
सूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी अे खोटो रे;
उदयरतन कहे मानने, देजो देशवटो रे... ॥5॥

सज्झाय विभाग : वैराग्यकी सज्झाय

क्या तन मांजता रे, एक दिन मिट्टी में मिल जाना,
मिट्टी में मिल जाना बंदे, खाक में खप जाना... ॥1॥
मिट्टीया चुन चुन महेल बंधाये, बंदा कहे घर मेरा,

एक दिन बंदे उठ चलेंगे, यह घर तेरा न मेरा... ।।2।।

मिट्टीया ओढावण मिट्टीया बिछावण, मिट्टी का शीराणा,
इस मिट्टीया कुं एक बूत बनाये, अमर जाल लोभाना...।।3।।

मिट्टीया कहे कुंभारने रे, तुं क्या जाने मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, मैं रुंदूंगी तोय... ।।4।।

लकडी कहे सुथारने रे, तुं नवि जाने मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, मैं भुजुंगी तोय... ।।5।।

दान शीयल तप भावना रे, शिवपुर मार्ग चार,
आनंदघन भाई चेत लो प्यारे, आखिर जाना गवार ।।6।।

शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी,
कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी आ. ।।7 ।।

खमासमण देते समय करने योग्य सत्रह संडासा (प्रमार्जना)

इच्छामि खमासमणो बोलते समय की मुद्रा

वंदिउं बोलते समय की मुद्रा

चरवला के छोर पर स्थित गरम उन के कोर से पीछे के भाग में बाई ओर कमर से पैर की एडी तक प्रमार्जनाकरनी चाहिए

पीछे के भाग में नेर करते हुए मध्य स्थान पर कमर से नीचे तक प्रमार्जना करनी चाहिए ।

पीछे के भाग में दाहिनी ओर कमर से एडी तक प्रमार्जना करनी चाहिए ।

आगे के भाग में बाई ओर पैर के मूल से पैर के पंजे तक प्रमार्जना करनी चाहिए ।

आगे के भाग में मध्यस्थान में नाभि के नीचे से दोनो पैरो के बीच की अंतिम जगह तक प्रमार्जना करनी चाहिए

आगे के भाग में दाहिनी और पैर के पंजे तक प्रमार्जना करनी चाहिए

खमासमण देते समय करने योग्य सत्रह संडासा (प्रमार्जना)

घुटने की स्थापना नीचे करने के लिए योग्य अंतर पर बाए से दाहिने, दाहिने से बाए और बाए से दाहिने क्रमशः तीन बार प्रमार्जना करनी चाहिए।

मुख के आधे भाग की बाई ओर आंख नाक होठ तथा गले की प्रमार्जना करते समय कंधे सेपंजे तक प्रमार्जना करनी चाहिए।

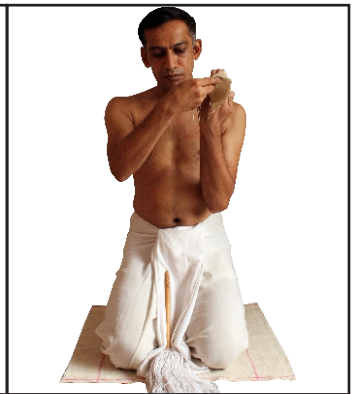

बाए हाथ की हथेली की सीधी प्रमार्जना कर थोडा सा हाथ उंचा कर पीछे के भाग से कुहनी क प्रमार्जना करनी चाहिए।

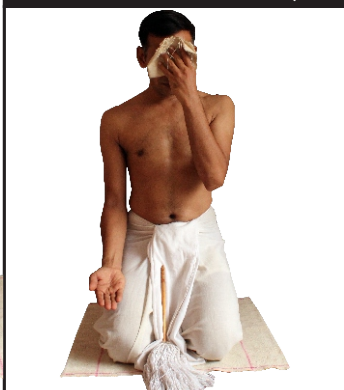

मुख के आधे भाग की दाई ओर आंख नाक होठ तथा गले की प्रमार्जना करते समय कंधे सेपंजे तक प्रमार्जना करनी चाहिए।

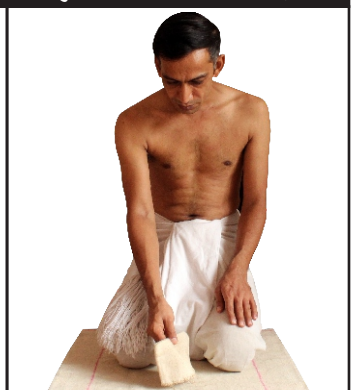

चरवले को गोद में रखकर मुहपति से मस्तक की स्थापना करने की जगह पर बाए से दाहिने के अनुसार तीन बार क्रमशः प्रमार्जना करनी चाहिए।

दो हाथ दो पैर तथा शिर को नीचे झुकाते समय पीछे से ऊँचा नहीं होना चाहिए।

दो हाथ-दो पेर तथा माथा ये पांच अंग जब नीचे जमीन को स्पर्श करे तभी मत्थएण वंदामि बोलना चाहिए।

खडे होते समय सबसे पहले पीछे की ओर थोडी सी नेर कर बाए से दाहिने, इस प्रकार क्रमशः तीन बार पैर के पंजे की स्थापना करने की भूमि पर प्रमार्जना करन चाहिए।

मुहपत्ति और शरीर पडिलेहण के 50 बोल की विस्तृत समझ

उभडक बैक के, हाथ दो पेर के अंदर रखे
और मुहपत्ति के दाये हाथ में रखे मुहपत्ति
को बांधी किनार से पकडकर खोले

मुहपत्ति की बांधी किनारवाला भाग बाये
हाथ से दाये हाथ पर स्थापन कर ।
मुहपत्ति का मध्यभाग पकड के मुहपत्ति मोडे ।

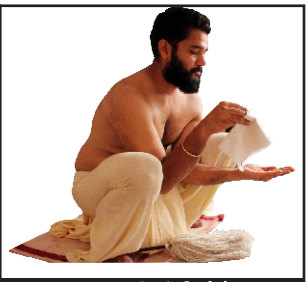

दाय हाथ की अंगूलियो के
अग्रभाग दाये हाथ की हथेली
को स्पर्श किये बिना

कोणी से हाथ तक मुहपत्ति को स्पर्शाते
झाटकते हुए
दाये हाथ के तीन विभाग मन में धारके

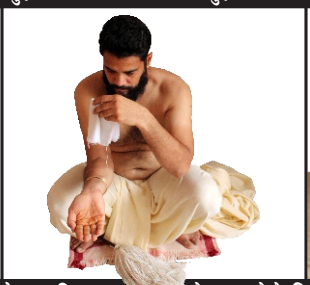

दाये हाथ की तरह हाथ [illegible]डिलेहणा करने के लिए
दाये हाथ में मुहपत्ति आगे की तरह कर बाया हाथ
सीधा पडिलहण करना

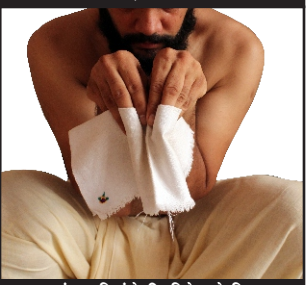

आंख आदि अंगो की पडिलेहण के लिए
बाये+दाये हाथ में मुहपत्ति चित्र अनुसार करे
पडिलेहण के लिए तैयार की मुहपत्ति को छाती की ओर
लाते वक्त दोनो हाथ के पंजे छाती की तरफ खुले दिखेंगें ।

ह के मध्यभाग की पडिलेहणा मुहपत्ति के स्प
करते

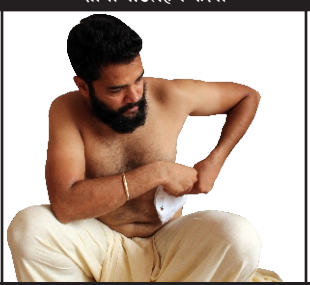

छाती के मध्यभाग की पडिलेहण मुहपत्ति
के स्पर्श

दाये खभे की मुहपत्ति का स्पर्श करते

दाये पैर की दायी तरफ चरवले की अंतिमदशी
से ढींचण से नीचे तक पडिलेहण करते

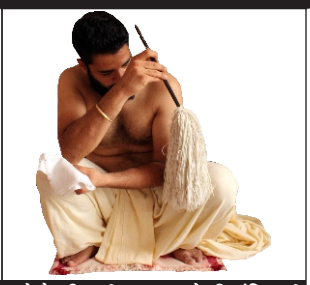

बाये पैर की दायी तरफ चरवले की अंतिमदशी
से ढींचण से नीचे तक पडिलेहण करते

वांदणामां 25 आवर्तनी मुद्राओ

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
बोलते /सुनते समय की मुद्रा

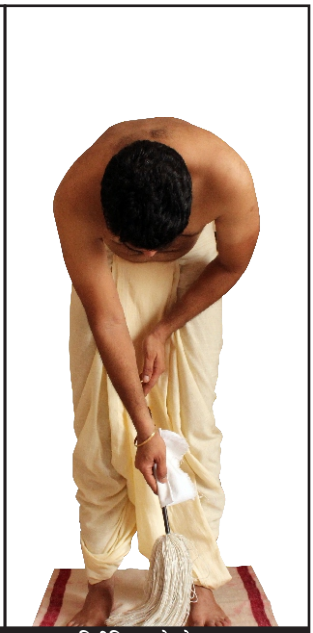

निसीहिआए बोलते समय,
गुरु के अवग्रह में प्रवेश
करने हेतु भूमि के दाये से बाये और
क्रमशः तीन बार प्रमार्जना करे।

गुरु जे अवग्रह में प्रवेश करते समय
अणुजाणह में मिउग्गहं कहे ।

अवग्रह में प्रवेशकर खमासमण
की तरह आगे पीछे तीन-तीन
बार प्रमार्जना करते बैठते
समय निसीहि बोले

खमासमण में जिस तरह मुख हाथों की प्रमार्जना
मुहपत्ति से कर मुहपत्ति को चरवला पर स्थापन करने
हेतु मुहपत्ति से चरवले की तीन बार प्रमार्जना करे ।

वांदणामां 25 आवर्तनी मुद्राओ

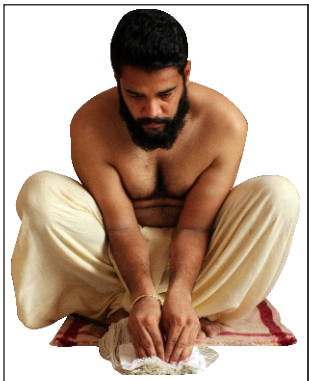
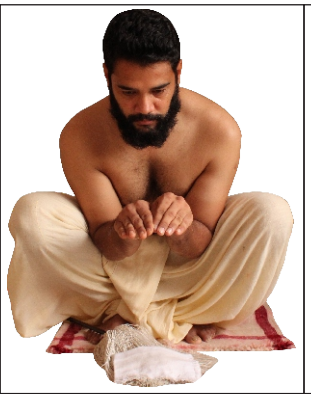
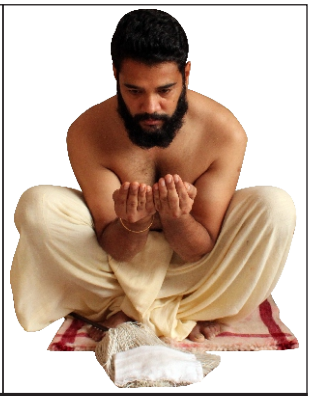

'अ' 'का' 'का' और 'ज' 'ज' 'ज' बोलते नीचे से उपर हाथो को 'त्ता' 'व' 'य' बोलते समय मुहपत्ति समय दोनो गाथ की दसो अंगुली से मुहपत्ति लेते समय दानो हाथ की दसो अंगुलि से मुहपत्ति लेते समय दोनो हाथ के (गुरु चरण पादुका) को पूंठ) न होय का स्पर्श करे (नख) से स्पर्श न करना पंजे छूटा न करे उस तरह बीच मे हाथ चत्ता करे

हो यं य और भे णिज़ भे बोलते समय दोनो हाथ की दशे अंगुली कपाल से स्पर्श करे

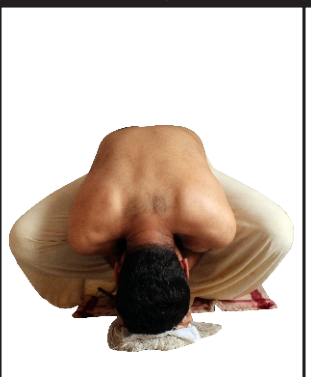

संफासं और खामेमि बोलते समय दोनो हाथ को खुले-सीधे चरवले पर रख। पीछे से ऊंचे थये बिना मस्तक को हथेली में रखे ।

हथेली में मस्तक को रखते समय पीछे से ऊंचा न होवे

आवस्सियाए बोलते समय गुरु अवग्रह की बाहर आते पीछे दृष्टि पडिलेहणा कर चरवले से पीछे तीन बार प्रमार्जना करे ।

दुसरा वांदणा पूर्ण होने के अवग्रह के बहार आने के बाद अवग्रह की बहार बाद दोनो पेरो के बीच में निकलते समय की मुद्रा चार अंगुल की जगह रखे ।

गुरु स्थापना मुद्रा

चैत्यवंदन समय की मुद्रा

कपाली को अड या न अडे

काउस्सग्ग मुद्रा

अब्भुट्ठिओ सूत्र बोलते
समय हाथ खुला रखे ।

प्रतिक्रमण ठाते, पच्चक्खाण पारते और
दुष्कृत की माफी मांगते समय की मुद्रा

वीरासना मुद्रा (वंदित्तु)

मिच्छा मि दुक्कडं...

श्री मुंबई जैन संघ संगठन